अन्हारक विरोध मे



अरविन्द ठाकुर

अन्हारक विरोध मे

अरविन्द ठाकुर

विप्लव फाउन्डेशन
विप्लव भवन, वार्ड नं-7
सुपौल-852131 (बिहार)

एहि संग्रहक प्राय: सभटा कथा पछिले शताब्दी मे लिखल गेल छल। पत्र-पत्रिकादि मे प्रकाशितो तत्काले भेल छल। मैथिली कथा-साहित्य संसार केँ ओना त' ई अपन पहिले कथा 'मूस' सँ चकबिदोर लगा देने रहथिन मुदा बाद मे त' एक सँ बढ़िक' एक कथा सभक ई सर्जना कयलनि। खिस्सा सियार-यार, अथ गिरगिट गाथा, पियासल पानि, अन्हारक विरोध मे, अय्यासी, प्रजातंत्र परिकथा, विषपान आदि कथा बेस चर्चित भेल। उक्त कथा सभक विषय आ गढ़नि पाठकक ध्यान आकर्षित कयलक। भाषाक प्रति सेहो ई सचेष्ट रहलाह।

कथाक संप्रेषणीयता एकर भाषा आ बुनावटि मे निहित छैक। एखन वर्त्तमान समय मे, विषय ओतेक महत्त्वपूर्ण नहि रहि गेलैक अछि। आब सभटा खेल-बेल एकमात्र 'ट्रीटमेंट' पर आबि टिकल अछि। सम्भव अछि जे विद्वान समीक्षक लोकनि एहि सँ सहमति नहि रखैत होथि किन्तु हम अपन अल्पज्ञता मे इएह बुझैत छी। अरविन्द ठाकुरक प्रत्येक कथा ट्रीटमेंटक स्तर पर अद्‌भुत अछि। अहाँ कथा पढ़ब शुरू कयलहुँ नहि कि हुनक कथाकार अहाँ केँ लपकि लेत। फेर अहाँ बिना कथा पढ़ने रहि नहि सकैत छी। एहि सँ बचबाक एकमात्र विकल्प इएह टा अछि जे हिनक कथा पढ़ब शुरूहे नहि कयल जाय अन्यथा पढ़' पड़ि जायत–सेहो पूरा संग्रह।

एहि संग्रह मे कथाकारक पहिल कथा सँ ल' क' अद्यावधि लिखल कथा सभ मे सँ चयनित कथा संकलित अछि।

पूर्वजक अर्जित सम्पत्तिक उपयोग की ओ सापे जकाँ करत?

'न:'

एकटा तीव्र आ स्पष्ट अस्वीकृतिक गूंज ओकरा भीतर पसरि गेलै। मूस लगातार...

फेर ओ बेचैनीक अनुभव कयलक। ओकरा बुझयलैक जे कोठली आ ओछाओनक दिस सँ धिक्कार, विरोध आ प्रतिकारक स्वर उठ' लागल होअय। ई स्वर तीव्र होब' लगलैक। साँस लेबहु मे कष्टक अनुभव कयलक–जेना प्राण फड़फड़ाइत होअय।

ओ एकबैग उठल आ केबाड़ खोलि बहरा गेल। बाहरक रौदायल मुदा उन्मुक्त आ टटका हवा जेना ओकरा स्वागतम् कहलकै आ ओ अपना भीतर कोनो अद्‌भुत ऊर्जाक संचार अनुभव कयलक।

ओकर नजरि सीढ़ी पर राखल खुरपी दिस गेलैक आ ओकरा ठोर पर स्वत: स्फूर्त्त मुस्की पसरि गेलैक। दुनू बाँहि उठाक' ओ अंगैठी-मोड़ लेलक आ आगाँ बढ़ि खुरपी हाथ मे उठाय लेलक।

ओ अपन फूलक केआरी धरि पहुँचल। केआरी मे अनेरुआ घास-पात उगि आयल रहैक।

ओ खूब जतन सँ तकरा साफ कर' लागल।

-एही संग्रह सँ

अन्हारक विरोध मे

अन्हारक विरोध मे

(कथा-संग्रह)

अरविन्द ठाकुर

विप्लव फाउन्डेशन

सुपौल (बिहार)

अन्हारक विरोध मे

पहिल संस्करण : 2007

मूल्य : 150.00 टाका

प्रकाशक

विप्लव फाउन्डेशन

(स्व. बलेन्द्र नारायण ठाकुर 'विप्लव'क स्मृति कैँ समर्पित)
विप्लव भवन, वार्ड नं. 7
सुपौल-852131 (बिहार)
फोन : 06473-223339

मुद्रक : आर.के. ऑफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

ANHAARAK VIRODH MAIN
(A Collection of Maithili Short Stories) by Arvind Thakur
Price : Rs. 150/-

ब्रह्माण्डक सृजनशीलताक प्रतीक लोक सरस्वती (वाक् देवी)
काली बन्नीं
जे हमर कुलदेवी छथीह आ जे हमर कुल-परिवारक चेतना,
प्रज्ञा आ विवेक कैँ अक्षुण्ण रखने छथि,
ताहि कल्याणमयी, आनन्दमयी, शांतिमयी
मातृरूपाक स्मरण करैत
ई पोथी भेंट स्वरूप
हमर धर्मपत्नी वीणा देवी ठाकुर
हमर तीनू पुत्र अभिनय, किसलय, अनुनय
तीनू पुत्रवधू अंकिता, नेहा आ अनुराधा लेल

"हम अपन भाषा मे एतेक विविध रूपाकारक सृजन एहि लेल क' सकलहुँ जे हमरा अपन भाषा सँ घृणा छल।"

—जाँ जेने, फ्रांसीसी लेखक

"हमरा ओहि सगर लोकसभ सँ बेस भय लगैत अछि जे हमर कथा सभ केँ लोकप्रिय आ प्रचलित मान्यताक कसबट्टी पर परखबाक प्रयास करैत छथि वा ओहि मे कोनो प्रकारक सैद्धान्तिकता खोजबाक प्रयास करैत छथि।

ने त' हम रूढ़िवादी छी, ने उदारवादी आ ने विकासवादी। हम कोनो पादरी, उपदेशक वा निरपेक्ष व्यक्ति होयबाक स्वाँग सेहो नहि भरि सकैत छी। हम एकटा स्वतंत्र लेखक छी आ स्वतंत्र लेखक बनल रहब टा हमर अभिलाषा अछि। हमरा लेल मनुष्यक देह, ओकर बुद्धि, ओकर ज्ञान, ओकर आशा-निराशा, ओकर प्रेम, सभ किछु पवित्र अछि मुदा एहि सभ सँ बेसी आदरणीय अछि ओकर स्वतंत्रता, जे झूठ, अहंकार, ढोंग आ क्रूरता सँ मुक्त अछि।"

—अंतोन चेखव

विरोधक एहि स्वर केँ अकानल जाय

रातिक अन्हार सँ बेसी भयाओन होइत अछि दिनक अन्हार। एखन सर्वत्र दिनक अन्हार पसरल अछि। जाहि समय मे सेज, सिंगुर आ नन्दीग्राम लगभग एकहि संग घटित हो आ एहि सभक अछैत सगरो डेरांओन चुप्पीक साम्राज्य व्याप्त हो त' स्थितिक भयावहताक सहज आकलन कयल जा सकैत अछि। गुजरातक बाद फेर गुजरात, भागलपुरक बाद फेर भागलपुर, उजानक बाद फेर उजान, अपहरणक बाद फेर अपहरण, बलात्कारक बाद फेर...फेर...अन्हार...। आइ एहि चिन्हल अन्हारक विरोध मे के ठाढ़ छथि? के सभ ठाढ़ छथि?

अन्हारक विरोध करबाक नैतिकता आ तद्जन्य साहस जाहि किछु गोटे मे छनि ओहि मे अरविन्द ठाकुर अग्रिम मोर्चा पर तैनात देखाइत छथि, अपन सम्पूर्ण रचनात्मकताक संग।

अरविन्द ठाकुर फणीश्वर नाथ 'रेणु' आ राजकमल चौधरीक उर्वर भूमि सँ अबैत छथि। स्वयं विप्लव जी हिनक पाछाँ ठाढ़ छथिन्ह। विप्लव जी अर्थात मैथिली-हिन्दीक प्रखर कवि, पत्रकार आ स्वतंत्रता सेनानी, जे हिनक पिता रहथिन्ह। अरविन्द ठाकुर केँ विप्लवी मुद्रा, दृष्टि आ रचनात्मकता अपन विरासत मे भेटल छनि। जकर पृष्टभूमि मे एतेक सर्वकालीन नायक ठाढ़ हो, से बिना प्रभावित भेने केना रहि सकैत अछि! किन्तु आश्चर्य, अरविन्द ठाकुर ककरहुँ सँ किछुओ हथपैंच नहि लेलनि–ने दृष्टि, ने तेवर आ ने ऊर्जा। हुनका लग जे किछु छनि से अपन छनि, मौलिक छनि जखनकि आन बहुत रास रचनाकारक संग एना नहि अछि। ओ लोकिन गछैत वा नहि, हुनक रचना-सामग्री त' एकर प्रत्यक्ष प्रमाण दइये दैत अछि। अरविन्द ठाकुरक इएह मौलिकता आ तेवर हुनका विशिष्ट रचनाकार बनबैत छनि। आ से, अपन समकालीन मे त' उचिते, एकर अगिला-पछिला पीढ़ी मे सेहो। इएह विशिष्टता हिनका प्रति कतिपय रचनाकार

कें ईर्ष्यालु बनबैत अछि। हम स्वयं हिनका सँ ईर्ष्या करैत छी–प्रेरणा-ग्रहण सेहो।

अरविन्द ठाकुर माटि-पानि सँ जुड़ल रचनाकार छथि। खेत आ किसानक प्रति, सर्वहारा समाजक प्रति हिनक प्रेम आ चिन्ता जगजियार अछि। वर्ष 1993 मे हिनक कविता-संग्रह 'परती टूटि रहल अछि' प्रकाशित भेल छल। ई पोथी मैथिलीक समकालीन कविता कें नव तेवर आ अर्थवत्ता प्रदान कयलकैक। एहि संग्रहक प्रभाव सँ मैथिली कविता आइयो पूर्णरूपेण मुक्त नहि भ' सकल अछि। मैथिली काव्य मे किसानी संस्कृति कें स्वीकृति दियेबा मे एहि काव्य-संग्रहक महत्त्वपूर्ण योगदान मानल गेल। एहि संग्रहक ईहो एकटा खास बात रेखांकित कयल गेल जे मैथिलीक प्राय: ई पहिल कवि भेलाह जे अपन परिचय मे पेशाक अन्तर्गत 'कृषि' लिखलनि। कृषि कार्य करब आ एकरा गर्व सँ अपन परिचिति बनायब–ई केवल अरविन्दे ठाकुर क' सकैत छथि। समाजक दुख-दर्द मे सहभागी बनल रहबाक हिनक जन्मजात प्रवृत्ति हिनका समाजसेवीक प्रतिष्ठित दर्जा देलकनि। राजनीति मे पयर देलनि त' ओतहु हिनका बेस पद-प्रतिष्ठा भेटलनि मुदा जेना कि मुँहसच व्यक्तिक संग होइत छैक-से हिनको संग भेलनि। नेता सभ चमचइ क' कें अपन वोट बढ़बैक हर संभव कोशिश करैत अछि किन्तु ई मुँहफट्ट हेबाक कारणें लगातार अपन चारूभर दुश्मन ठाढ़ करैत गेलाह। बाद मे, राजनीति सँ हिनका अरूचि भ' गेलनि। असल मे, हिनका राजनीति करय नहि अयलनि। ओ राजनीति, जे हिनक समकालीन अथवा अगिला-पछिला पीढ़ी अत्यन्त दक्षताक संग करैत अछि–साहित्यक राजनीति। आ, से जँ हिनका अबैत रहितनि त' एतेक नीक आ दृष्टि सम्पन्न कथाक अछैत अनेको समवेत कथा-संग्रह आदि सँ की ओ बारल जयतथि? कथे-संग्रह किएक! कवितो-संग्रह सभ मे हिनक कविता नदारति भेटत। साहित्यक राजनीति मे जे 'कवि-कथाकार' लोकनि सत्ता मे छथि, हुनका अरविन्द ठाकुरक रचना अरघबो किएक करितनि! एहि सभ स्थिति-परिस्थिति कें बुझैत-गमैत अरविन्द ठाकुर साहित्यक सर्जना मे तल्लीन भ' क' लागल छथि। हिनका आम आदमीक पीड़ा कें अपन स्वर जे देबाक छनि–अन्याय आ आराजकताक अन्हारक विरोध मे ठाढ़ जे रहबाक छनि। जनताक लेखक कें जनताक पक्ष मे रहक चाही, ने कि कोनो गोल अथवा पार्टी मे। अरविन्द ठाकुर सुच्चा अर्थ मे जनताक लेखक छथि। मैथिली मे एहन कएक गोट रचनाकार छथि?

एहि संग्रहक प्राय: सभटा कथा पछिले शताब्दी मे लिखल गेल छल। पत्र-पत्रिकादि मे प्रकाशितो तत्काले भेल छल। मैथिली कथा-साहित्य संसार कें ओना त' ई अपन पहिले कथा 'मूस' सँ चकबिदोर लगा देने रहथिन मुदा बाद मे त' एक सँ बढ़िक' एक कथा सभक ई सर्जना कयलनि। खिस्सा सियार-यार, अथ गिरगिट गाथा, पियासल पानि, अन्हारक विरोध मे, अय्यासी, प्रजातंत्र परिकथा, विषपान आदि कथा बेस चर्चित भेल। उक्त कथा सभक विषय आ गढ़नि पाठकक ध्यान आकर्षित कयलक। भाषाक प्रति सेहो ई सचेष्ट रहलाह।

कथाक संप्रेषणीयता एकर भाषा आ बुनावटि मे निहित छैक। एखन वर्त्तमान समय मे, विषय ओतेक महत्त्वपूर्ण नहि रहि गेलैक अछि। आब सभटा खेल-बेल एकमात्र 'ट्रीटमेंट' पर आबि टिकल अछि। सम्भव अछि जे विद्वान समीक्षक लोकनि एहि सँ सहमति नहि रखैत होथि किन्तु हम अपन अल्पज्ञता मे इएह बुझैत छी। अरविन्द ठाकुरक प्रत्येक कथा ट्रीटमेंटक स्तर पर अद्भुत अछि। अहाँ कथा पढ़ब शुरू कयलहुँ नहि कि हुनक कथाकार अहाँ कें लपकि लेत। फेर अहाँ बिना कथा पढ़ने रहि नहि सकैत छी। एहि सँ बचबाक एकमात्र विकल्प इएह टा अछि जे हिनक कथा पढ़ब शुरूहे नहि कयल जाय अन्यथा पढ़' पड़ि जायत–सेहो पूरा संग्रह।

एहि संग्रह मे कथाकारक पहिल कथा सँ ल' क' अद्यावधि लिखल कथा सभ मे सँ चयनित कथा संकलित अछि। चयन आ अक्षरांकन (कम्पोजिंग)क दायित्व हमरे पर छल। वयस, योग्यता आ अनुभव मे हुनका सँ अत्यधिक छोट रहितहुँ उपरोक्त दायित्वक निर्वाह करब हमरा गौरवपूर्ण लागल किन्तु अरविन्द ठाकुरक ई जिद् जे 'एहि संग्रहक भूमिका सेहो अहीं कें लिखय पड़त' हमरा कनेक आर संकोची बनबैत अछि। ठाकुर जी हमरा सम्मान देब' चाहैत छथि किन्तु ई सम्मान लेबाक योग्य हम किन्नहुँ नहि छी–से स्वीकार करबा मे हमरा मिसियो भरि संकोच नहि अछि तथापि एतय हम हुनक मान मात्र राखल अछि। एहि पोथी कें अहाँ सभ पढ़ी, एहि पर विमर्श करी तथा लेखक कें नीक-बेजायक मादे लिखियनि–फोन करियनि, लेखक आ हम एतेक अपेक्षा त' रखिते छी मुदा आइ-काल्हि पाठक लोकनि एना करैत कहाँ छथि...!

त' पोथीक अगिला पन्ना उनटाओल जाय आ अन्हारक विरोध मे ठाढ़ भेल अरविन्द ठाकुरक स्वर कें अकानल जाय...

–अजित कुमार आजाद

अनुक्रम

खिस्सा सियार-यार

महासभा पार्टी कार्यालय।

खूब हलचल अछि आइ एतय। कार्यकर्त्ता सभक मीटींग होबएबला अछि। संपूर्ण कार्यालय भवन हालहि मे चूना सँ पोतायल गेल अछि। कार्यालयक नमगर-चौड़गर बरंडा पर दरी आ जाजिम बिछायल अछि।

जाजिम पर मसनद भरें ओंगठल छथि रामनारायण महराज। जिला कमिटीक अध्यक्ष। रंग हल्लुक कारी। औंठिया कारी केश, जे खिजाबक कमाल लगैत अछि, बड़ जतन सँ पाछाँ दिस सींटल। क्लीन शेव्ड। झक्क-झक्क उज्जर धोती आ कुर्ता।

एक्स एम. एल. ए. छथि रामनारायण महराज। सरकारी प्रकाशन कमिटीक चेयरमैन रहि चुकल छथि। हिनके कार्यकाल मे करोड़ो टकाक घोटाला भेल छल–जाली पुस्तक सभक छपाइ मे। विधानसभा मे भयंकर हल्ला-गुल्ला उठल छलै एहि मुद्दा पर मुदा तत्कालीन मुख्यमंत्री जीक भाइ रामाधार पांडे ओहिकाल हिनका साफ-साफ आ बेलगट्ट बचा लेने छलथिन। स्वयं रामाधार पांडे ओहिकाल एम. एल. ए. छलाह आ मंत्रिमंडल मे सम्मिलित कयल जयबाक लेल प्रमुख दावेदार सेहो।

तहिए सँ किछु मनबढ़ू सभ महराजजी केँ 'डुप्लीकेटर' आ पांडेजी केँ 'महराजक बापजी' कहल करैत अछि।

मसनद पर ओंगठल-ओंगठल महराजजी हाफी लेलनि आ चमचमाइत रिस्टवाच पर उड़ैत नजरि देलनि। हुनका घेरिक' बैसल लोक सभ सेहो असहजता सँ अपन-अपन बैसबाक स्थिति परिवर्तित कयलनि।

गरीबदास आजाद बजलाह–'अध्यक्षजी। माफ करब, मीटींग आरंभ करबाक समय भ' गेल अछि।'

गरीबदास आजाद जिला कमिटीक महामंत्री छथि। बात-बात मे 'माफ करब' बजबाक आदति छनि...माने तकिया कलाम छियनि। अनेक वर्ष सोसलिस्ट पार्टी मे रहलाह आ एक बेर त' ओहि पार्टीक टिकट पर चुनाव लड़ि जमानतो जप्त करबा चुकल छथि। चुनाव हारितहि हिनका दिव्य ज्ञान प्राप्त भेलनि आ ई महासभा पार्टीक हाथ मजगूत करबाक निर्णय लेबाक संगहि अपन नाम 'गरीबदास' संग 'आजाद'क तगमा सेहो जोड़ि लेलनि। भविष्यक योजना सेहो निर्धारित क' लेलनि–कोनो मूल्यपर एम. एल. ए. बनबाक अछि। बूथ कैप्चरिंग लेल बेटा केँ एखने सँ तैयार क' रहल छथि। बेटो अस्सल बापेक अछि.... ट्रेन मे डकैती कर' लागल अछि। पर्सनल चुनाव फंडक व्यवस्था लेल आजादजी दिन-राति लायसेंस-परमिट आ चंदा-कमीशनक धंधा मे समर्पित भाव सँ लागल रहैत छथि। जबरदस्त मुँहजोड़ छथि गरीबदास आजाद। विश्वास नहि होअए त' कोनो चाह-पानक दोकान पर हिनक कारनामा देखि लिअ'।

आजादजी केँ माफी दैत रामनारायण महराज बजलाह–'पांडे जी मीटींग में आयब स्वीकार कयने छलाह। ओ कने आबि जाथि त' मीटींग शुरू करै छी। अगुताहटि की छै?'

हुनक चारू दिस बैसल लोकसभक बीच किछु मनबढ़ू सभ मे खुसुर-फुसुर शुरू भेल। शालिगराम राय अपन बगल मे बैसल लखन यादवक कान मे फुसफुसायल–'हुंह। 'बापजी' के अयने बिना त' एकरा मुँह सँ बकारो नहि फुटयबला छै एते बड़का मीटींग में।'

'अरे भाइ, 'बापजी' नहि होइतथि त' ई बौका की अध्यक्ष बनि सकैत छल? सभ गोटे त' सुबोधजीक पक्ष मे रहै। बापेजी ने भीटो लगाक' सुबोधजी केँ अपन उम्मीदवारी आपिस लेबा पर बाध्य क' देने रहथिन।' –लखन यादव सेहो फुसफुसाक' जवाब देलक।

फेर बैसार मे विलम्ब जानि लोक सभ धीरे-धीरे उठिक' कार्यालयक प्रांगण मे छिड़िया गेल।

प्रांगण मे लोक सभक अलग-अलग हेंज बनि गेल छल। एहिमे सँ एक हेंजक बीच ठाढ़ राजनाथ झा ऊँच स्वर मे गरजि रहल छलाह–'हमरा ककरो डर अछि की? ककरो देल खाइ छी? हम त' साफ-साफ कहैत छी–ई सभटा बड़का नेता सभ जोंक अछि जोंक। हमर-अहाँक खून चूसिक' मोटाइत रहैत

अछि। हमर-अहाँक महत्त्व ओकरा सभक लेल तखने धरि अछि जा धरि हमरा सभक नस मे खून अछि। खून खतम–सम्बन्ध खतम। अहाँ सभ त' जनैत छी ई सार कनहबा लेल हम की-की नहि कयलहुँ। जमालो बनि गेलहुँ–घर मे आग लगा के जमालो दूर खड़ी। घर जरा-जराक' एकरा लेल धधरा कयलहुँ आ जखन एगो काज ल' क' गेलहुँ त' पेटिशन पर लिखि देलक...सहानुभूति पूर्वक विचार करें। रओ बहिं, जखन विचारे करयबाक छलहु त' एते दौगयलें किएक? घरबालीक गहना बिकबाए देलक दौगबैत-दौगबैत। पिल्लू फड़तनि सार केँ–पिल्लू।'

'ठीके कहै छह, राजो भाइ। हम त' अपने भुक्तभोगी छी। बीस बरख सँ पाटीक काज क' रहल छी। कतेक चुनाव मे काज कएलहुँ, कतेक धरना-परदर्शन आ रैली मीटीन मे हिस्सा लेलहुँ। फसिलक रोपनी-कटनी तेयागि पाटिक पोरगाम मे लागल रहलहुँ मुदा जखन गोबिनाक नोकरी लेल दुआरे-दुआर बौअयलहुँ त' सभ नेता हमरा कुकुर जकाँ दुत्कारि देलक। कुर्सी पर गेलाक बाद आदमीक दिमागे बदलि जाइत छै।' –जीबछ मंडल बाजल।

'अच्छा! त' एहिबेर बुझएतनि सार सभ केँ। हम त' बिचारि लेने छी जे एहिबेर एलेक्शन मे बूथे-बूथ घूमिक' खिलाफ मे भोट खसयबैक। ई सभ हारिलहि पर ठीक रहैत अछि।'–राजनाथ झा ऊर्फ राजो भाइ फुफकारैत अपन निर्णय सुनबैत छथि।

जुआन सभक एकटा हेंजक बीच ठाढ़ सिकरेटक सोंट मारि रहल छथि युवा नेता सदानन्द विद्रोही।

'नेताजी'क बदला 'बॉस' कहल गेला पर बेस हर्षित होबयबला सदानन्द विद्रोही अपन विद्यार्थीए जीवन सँ बॉसगिरीक जलवा देखबैत आबि रहल छथि। महासभा पार्टी विरोधी एक दलक एक स्वयंभू अपराधी नेता तूफान सिंहक शागिर्दी मे किछु दिन रहि सदानन्द विद्रोही अपन स्वतंत्र व्यक्तित्व विकसित करबाक ठानलनि। तकरे बाद शिक्षा-संस्थान सभक कैम्पस मे गोलीक प्रतिध्वनि आ बमक धमाका आदिक सिलसिला शुरू भ' गेल। शिक्षक-छात्र सभक माथ फूटल, ककरो बाँहि टूटल त' ककरो टाँग। बमक एकटा धमाका मे अपन समूल दहिना बाँहि गमाक' एकटा जुआन आइयो कखनो काल सदानन्द जीक संग नजरि अबैत अछि मुदा सदानन्द विद्रोही आइयो बिना कोनो टूट-फूट केँ

सुरक्षित छथि–एकदम वन पीस। हिनक एहि सभ दक्षता कें देखि महासभा पार्टी हिनका पहिने अपन छात्र संगठनक अध्यक्ष बनौलक, फेर पार्टीक युवा मंचक जिला अध्यक्ष बनाओल गेलाह आ आइ-काल्हि युवा मंचक प्रांतीय कमिटीक पदाधिकारी छथि।

दहिना हाथक मुट्ठी मे सिकरेट फँसाक' सोंट मारैत सदानन्द विद्रोही अपन बाम हाथक आँगुर सँ अपन केश मे किछु एहन करैत छथि जे हुनक औंठिया केशक किछु लट हुनक ललाट पर आबि जाइत अछि आ तखन बड़ मासूम सन देखाइत अछि हुनक चेहरा।

अपन चेला-चाटी सभक प्रशंसा गान सँ प्रमुदित सदानन्दजी अपन मुट्ठी कें मुँह सँ सटाक' एकटा कड़गर सोंट मारै छथि।

'बॉस ! हम सभ त' सुनने छलियैक जे अहाँ जिला कमिटीक भाइस प्रेसिडेन्ट भ' रहल छी?'–एकटा लफाँड़ि अपन बोली मे चासनी घोरैत सदानन्दजी सँ प्रश्न कयलक।

चुटकी मारि सिकरेटक जरी झाड़ैत सदानन्द जी अपन बाम बाँहि एकटा अन्य लफाँड़िक कान्ह पर राखि देल–''अरे भाइ, एहि बात पर खास तौर सँ विचार करबा लेल त' चौधरी जी हमरा पटना बजौने छलाह। कह' लगलाह जे भाइस प्रेसिडेन्ट लेल हमर नाम त' तय छल मुदा बीच मे कतय ने कतय सँ टपकि पड़ल रघुबंशवा। अरे इएह रघुबंश मंडल। सभ टॉप लीडर सभक पैर पकड़ि-पकड़ि कानय लागल। बस्स, पांडे जी दाव लगाय देलथिन–बैकवार्ड को जगह मिलना चाहिये। हम एकरा प्रेस्टिज-इशू बना लितहुँ त' भइए जाइत मुदा चौधरी जीक प्रतिष्ठाक खेयाल क' चुप लगा गेलहुँ। ओना युवा मंचक प्रांतीय अध्यक्षक जगह त' धएले अछि हमरा लेल।'' -सिकरेटक सोंट मार' लेल सदानन्द जी कनेकाल चुप भेलाह, फेर चुनौतीक स्वर मे बजलाह–'मुदा तोहूँ सभ देखि लियह। चैन सँ नहि बैस' देबनि सार रघुबंशवे कें। सभ भाइस प्रेसिडेन्टी घुसारि नहिं देलियनि त' हमरो नाम सदानन्द विद्रोही नहि। भ' सकत त' आइए....।''

प्रांगण मे एकटा स्कूटर आबिक' रुकल। एकरा चला रहल छलाह राजमंगल श्रीवास्तव आ पाछाँक सीट पर बैसल छलाह सतीश सिंह परमार।

एकटा मनबढ़ू हिनका सभ कें देखि फब्ती कसलक....''आबि गेल्लाह

सिरवास्तव जी बाबरी सींटि क' गाओल गीत कें बेर-बेर गाब' लेल। आऽऽरेऽऽ बाप, छत्तीस बाबू छत्री सेहो संगहि छथि। एक त' करैला अपनहि तीत, दोसर नीम चढ़ल। हेऽऽ प्रभू। रच्छा करिहो।''

केशक डिजाइनक मामिला मे राजमंगल श्रीवास्तव बेजोड़ छथि। पाछाँ सँ सभटा केश कें आगाँ दिस सींटिक' फेर आगाँक केश कें ऊपर दिस ठाढ़क' जापानी हाथ पंखा जकाँ बना लेबाक करिश्मा जानि नहि कतय सँ सिखलनि अछि ओ। एकटा आर खासियत छनि हिनका मे। किछु कल्पित, किछु वास्तविक, किछु फूसि-किछु साँच संस्मरण सभक अदृश्य पोटरी छनि हिनका लग, जकरा मनबढ़ू सभ 'फूसिक पेटारी' कहैत अछि। ककरो सँ भेंट भेलनि नहि कि अपन ओहि पोटरी माने फूसिक पेटारी कें तह-दर-तह खोलब शुरू क' दैत छथि राजमंगल श्रीवास्तव। मनबढ़ू सभ कहैत अछि....'बार-बार, कइ बार, लगातार, सफेदी की चमकार.....लाला वाशिंग पाउडर का चमत्कार।'' पोटरी खोलबाक प्रक्रिया एतेक बेर दोहरा चुकल छथि श्रीवास्तव जी जे आब श्रोता सभ कें भयमिश्रित हाफी आब' लगैत अछि मुदा राजमंगल श्रीवास्तव जीक सिलसिला जारी रहैत अछि–'हँ त', ऑल इंडिया वर्कर्स ट्रेनिगक क्रम मे, टू बी वेरी फ्रैंक, पार्टी हाइकमान हमरा सिक्किम-गंगटोकक आयोजित कैम्प मे....।''

हिनका संग छथि सतीश सिंह परमार–धेला कमिटीक सेक्रेटरी। मनबढ़ू सभक शब्द मे–छत्तीस बाबू छत्री। एकावन गोट मेम्बरबला संस्था धेला कमिटीक सर्वेसर्वा परमार जी एक सुर मे सैकड़ाक-सैकड़ा फूसि नन-स्टॉप बाजि सकबाक इन्किलाबी खासियतबला लोक छथि। हिनक नटवरी हुनर (कुख्यात ठग नटवरलाल सँ कोनो रक्त सम्बन्ध नहि रहितहु) शहरक वी. आइ. पी. सभक वकालतक पोल खोलिक' राखि देने अछि। मनबढ़ू सभक कहब अछि–अन्हरा सभ मे कनहा राजा। श्री श्री 108 श्री परमार धेला कमिटीक छियालिस मेम्बरक एहि खूबी सँ चमचागिरी करैत छथि जे प्रत्येक मेम्बर हिनका खास अपन लोक बुझैत अछि। अपना अलाबे बाकी चारि गोट मेंबर कँ खुश करबा लेल हिनका किछु नहि करए पड़ैत छनि। ओ सभ हिनकर कर-कुटुम्ब छथि।

श्रीवास्तव आ परमारक जोड़ी कुख्यात अछि। जानि नहि केहन डोरि सँ बन्हायल छथि दुनू गोटे। अलग-अलग रहलापर दुहू गोटे एक दोसरा कें गारि पढ़ैत छथि मुदा रहै छथि बेसी काल संगहि।

स्कूटर सँ उतरि दुनू गोटे चारू दिस नजरि दौगबैत छथि, फेर प्रांगण

मे यत्र-तत्र छिड़िआयल हेंज सभ मे सँ एक हेंज चुनि ओहि दिस बढ़ि ओहि मे सम्मिलित भ' जाइत छथि।

एहि हेंज मे पहिने सँ उपस्थित छथि पूर्व प्रखंड युवा अध्यक्ष शनिचर 'शनि' आ वर्तमान युवा अध्यक्ष गणेश गुरमैता। शनि जी चंदा आ हरामक दारू, गाँजा, भांग आदि-आदिक अनवरत सेवन क' जुआनिये मे दू-दू बेर पारालायसिसक अटैक भोगि चुकल छथि आ गुरमैता जी पर सौंसे सृष्टिक विरुद्ध 'पेटिशनवाजी'क भूत सदिखन सवार रहैत छनि।

शनि आ गुरमैता आँखिए-आँखि मे किछु गप क' श्रीवास्तव-परमारक जोड़ीक खैर-मकदम करैत समवेत स्वर मे प्रेम सँ भीजल उलहन सुनौलथिन.... –'बड़े भाइ लोकनि बड़ देरी सँ अयलहुँ? हमरा सभ पर कृपादृष्टि छै किने?''

श्रीवास्तव जी अपन सफारी सूटक पैन्ट केँ डाँड़ पर ठीक करैत फरमौलनि....–'की कहियह भाइ, तैयार भ' क' घर सँ बहराइते छलहुँ कि पटना सँ चटर्जी दाक फोन आबि गेल। टू बी वेरी फ्रैंक। चटर्जी दाक चौबे बाबाक संग एकटा फ्रंट बनयबाक प्रोपोजल छनि पार्टी मे पांडे जी आ चौधरी जीक मनमानीक विरोध मे। ओहि सम्बन्ध मे बड़ीकाल तक गप करैत रहलाह। हमरा सँ विचार कयने बिना कोनो काज नहि करैत छथि चटर्जी दा, टू बी वेरी फ्रैंक, पटना बजोलनि अछि। अहाँ त' जानै छी, सिक्कम-गंगटोक मे जखन हमरा सभक कैम्प लागल छल त- चटर्जी दा....।''

ओम्हर गणेश गुरमैताक कान्ह पर हाथ राखि सतीश सिंह परमार कहने जा रहल छलाह–'....पेटिशन आपिस ल' लएह। अगिला बेर तोरहू धोला कमिटीक मेम्बर बना देबह। जानै छह दोस, कलक्टर आ एस. डी. ओ. दुनू गोटे हमरा एतेक मानैत छथि जे पूछह नहि। स्टाफ के पठा-पठा दिन मे बारहो बेर हमरा बजबैत रहैत छथि। उलहन दैत छियनि त' कह' लगैत छथि जे जिला-सबडिविजन का आधा काम तो आपही के मदद से होता है, दूसरे किसी के पास इस इलाके का कोई आइडिया ही नहीं है। एक दिन कह' लगलाह जे कभी-कभी तो इच्छा होती है कि सारा फाइल आपही को हैण्डओवर कर दूँ, मुझसे खाली साइन भर करवा लिया कीजियेगा। आब कह' दोस, हम आखिर की-की करब? ओम्हर धेला कमिटीक काज आ एम्हर...।''

श्रीवास्तव-परमारक आत्मपुराण जारिए छल कि केओ शनि-गुरमैता दुनू केँ सोर पाड़लक। शनि-गुरमैता विद्युत गति सँ एबाउट टर्न भेलाह आ लपकि क' बजाबयबला लग पहुँचलाह। बजाबयबला जुआन बदमस्ती सँ मुसुकायल....

–'की? ऐन मौका पर बजौलिअह कि नहि? अरे भाइ, धन्यवाद त' दैह हमरा।'

''धन्यवाद ! शुक्रिया ! थैंक्यू ! बड़ भाग हमरा सभक जे तोँ सोर पाड़लह। हम सभ त' राहु-केतुक फेरी मे फंसि गेल रही। औफ्फ।''

तीनू गोटे हँसल।

प्रांगण मे एकटा रिक्शा आबिक' रुकल। एहि रिक्शा पर विराजमान छथि माखन बाबू। मूल नाम–जटाशंकर मलिक। मनबढ़ू सभ हिनका 'सलाइ रिंच' कहैत छनि..सभ तरहक नट-वोल्ट पर फिट भ' जायबला।

माखन बाबू रिक्शा पर बैसल-बैसल सम्पूर्ण प्रांगणक सिंहावलोकन करैत छथि। सभ केओ अपना मे मशगुल अछि। केओ प्रणाम नहि कयलक माखन बाबू केँ। एहन बड़ कम होइत अछि। माखन बाबूक देहक नस मे एहि कुसंयोगक कारणेँ तामसक तेज लहरि दौगैत अछि।

अपना दिस ध्यान आकृष्ट करयबा लेल एक गोटे केँ सोर पाड़ैत छथि–'के यौ, परैसमन बाबू थिकहुँ?'

'जी हँ सरकाऽऽर, परनाम।'–पारसमणि चौधरी हिनका दिस पलटिक' देखै छथि आ फेर तेज डेगेँ चलिक' अबैत छथि–''आइ रिक्शा पर सरकार?''

''प्रणाम ! प्रणाम ! प्रणाम ।''–माखन बाबू ककरो प्रणामक जवाब तीन प्रणाम सँ दैत छथि...बड़प्पन आ अनुदानक संग।

''कने छड़ी पकड़ब?'' रिक्शा सँ उतरैत माखन बाबू पारसमणि चौधरी केँ पहिने छड़ी धरबैत छथि आ फेर प्रश्नक जवाब–हँ ! मीटींग लेल तैयार भ' क' घर सँ बहरयलहुँ त' ज्ञात भेल जे कार ल' क' बौका बाबू बैराज पर घूमए चलि गेलाह अछि आ जीप मरम्मति लेल ड्राइवर गैरेज मे ल' गेल अछि। सर-सिपाही, नोकर-चाकर सभ धनकटनी मे लागल अछि। दुआरि पर केओ छल नहि। उ त' दुसधटोली बला सभ पंचैती करबयबा लेल आयल छल त' मोतिया दुसाध केँ पठा रिक्शा मंगबयलहुँ आ एम्हर देखियौक, आइ-काल्हि साइटिका से फेर फिरिशान क' रहल अछि।''

'किछु दबाइ-तबाइ...' पारसमणि चौधरी पूछ' चाहलनि।

'कतेक खायब दबाइ। सालो भरि त' चवनप्राश खाइते रहैत छी। हालहि मे राघोपुर सँ होमियोपैथिक इलाज सेहो कराओल अछि। पटनाक डाक्टरक इलाज चलिए रहल अछि। देखिऔक ने। बेल्ट सेहो बन्हैत छी।'–माखन बाबू

कुर्ता उठाक' देखबैत छथि–'बेस, एकटा गप कहू–सीता बाबू केँ कतहु देखल अछि की? कने हुनका बजा दिअ'। कहबनि–'माखन बाबू बजा रहल छथि।'

माखन बाबू बड़ व्यवहार कुशल लोक छथि। प्रत्येक व्यक्तिक नाम मे 'बाबू' जोड़ि क' बजैत छथि। स्वयं अपन आ बेटहुक नाम मे। आइ-काल्हि पार्टी सँ तरे-तरे नाराज छथि। वर्षों सँ एम. एल. सी. होयबाक सपना पोसने छलाह मुदा आब उम्मीदक किरण डूबैत नजरि अबैत छनि। च्यवनप्राश आखिर कतेक उमरि द' सकतनि। पार्टी केँ ब्लैकमेल करबा लेल बड़का बेटा बौका बाबू केँ सम्प्रदायवादी पार्टीक मेम्बर बना चुकल छथि आ तन-मन-धन सँ ठेलि-ठेलिक' ओकरा नेता बनएबाक सभ प्रयास क' रहल छथि। एक त' बेटा बुड़िबक, दोसर पार्टी पर एहि क्रियाक कोनो वांछित प्रभाव नहि। लगैत छनि जे इहो दाव व्यर्थहि गेल।

महासभा पार्टीक प्रखंड अध्यक्ष सीता बाबू हुनक पुरान हुकुमबरदार मे सँ छथि। बात गरदनि सँ नीचां उतरय कि नहि उतरय मुदा सीता बाबू हुनक कोनो बात नहि टारै छथि। मनबढ़ू सभ तेँ मजाक-मजाक मे सीता बाबू केँ 'माखन बाबूक बहु' कहैत छथि।

सीता बाबूक अबितहि दुनू गोटे मे नमस्कार-पाती भेल आ माखन बाबू हुनका प्रांगणक एकान्त कोना मे खींचि ल' गेलाह–'आउ, अहाँ सँ किछु प्राइवेट करबाक अछि।'

पार्टी कार्यालयक कोठली मे बैसल छथि सुबोध जी। सुबोध जी माने सुबोधनारायण सिंह। एक्स एम. एल. ए. एवं एक्स अध्यक्ष, जिला महासभा पार्टी। समर्थक लोकनि हिनका 'जिलाक गांधी' कहैत छथि, विरोधी सभ 'नटवरलाल' आ मनबढ़ू सभ 'मुँहदुबरा'। रहन-सहन मे सादगी आ व्यवहार मे विनम्रता हिनक विशेषता अछि। बुजुर्ग सभ केँ देखितहि पैर छूबि प्रणाम करैत छथि। पार्टी मे अपन नेता पूर्व मुख्यमंत्री शिवाधार पांडेक प्रति समर्पित छथि। हालहि संपन्न भेल पार्टीक चुनाव मे ऐन मौका पर अपन उम्मीदवारी आपिस ल' अपन समर्थक लोकनि केँ भौंचक्क क' चुकल छथि। अफवाह उड़ल छल जे पार्टीक एकटा अन्य महत्वपूर्ण नेता चौधरी जी सँ बेसी सटबाक चलते पांडेजी हिनका ई धक्का देलथिन।

सुबोध जीक मुँहामुँही बैसल छथि राजीव शर्मा। पार्टीक पेशेवर लोक

सभक बीच अवांछित तत्त्व। हिनका ई गलतफहमी छनि जे छल-प्रपंच, फूसि आ विश्वासघातक बिनहु राजनीति कयल जा सकैत अछि। ककरो सँ दबैत नहि छथि। तेज आ धरगर बोली सँ ठाँहि-पठाँहि बाजि विरोधी सभक बोली बन्न क' दैत छथि। मनबढ़ू सभक भाषा मे शर्मा जी 'कटाह' छथि। बेर-बेर पेशेवर लोक सभक द्वारा पटकि देल जाइत छथि किन्तु हिनक चेहरा सँ विजेता-भाव नहि जाइछ।

एखन सुबोध जी चुपचाप बैसल छथि आ राजीव शर्माक मिजाज गरम छनि।

'आखिर कहिया धरि ई दादागिरी बरदास्त करैत रहब हमरा लोकनि। हम आइ फेर कहैत छी सुबोध जी कि अहाँ केँ अपन नाम आपिस नहि लेबाक चाहैत छल। ई कायरता थिक। मनमानीक समक्ष बहुमतक आत्मसमर्पण थिक। किएक कयलहुँ अहाँ ई आत्मसमर्पण?'

अकबका क' कहैत छथि सुबोध जी–''की करितहुँ? शिवाधार बाबू फोन पर नाम आपिस लेबाक निर्देश देलनि त' लेब' पड़ल। अन्ततः राजनीति त' हुनके संग करबाक अछि, कोना हुनक बात काटितहुँ।''

''अहाँ त' नाम आपिस ल' लेल। एम्हर माथा नीचाँ भ' गेल ओहि लोकनिक जे साफ-सुथरा राजनीति मे आस्था रखैत छथि। मनोबल खसि पड़ल ठोस कार्यकर्त्ता सभक। आ आब? की भ' रहल अछि आब? एक सँ एक लुच्चा आ लफंगा सभ राति-दिन घेरने रहैत अछि महराज जी केँ। शराबी-जुआरी सभक अड्डा भ' गेल अछि कार्यालय भवन। दिनहि सँ शराबक बोतल खुलब शुरू भ' जाइत अछि एतय आ ओहि मे महाराजहु जी डुबकी मारैत छथि–बेहिचक। सांगठनिक कार्यक खूलि क' अवहेलना भ' रहल अछि, समर्पित कार्यकर्त्ता सभक अपमान भ' रहल अछि आ एहि सभ सँ उदासीन संगठनक मुखिया महराजजी कुंभकर्ण जकाँ फोंफ काटि रहल छथि। जँ एहि सभ केँ रोकल नहि गेल त' एक दिन पार्टी कार्यालय 'रेड लाइट एरिया' मे बदलि जायत। अहाँ हमरा सभ केँ आज्ञा दिअ'। एहि लुच्चा-लफंगा आ ओकर सरदरबाक गोल्हड़ी झाड़ि देबनि हमसभ। कहू त' आइए.....।'

सभ तरहक हलचल सँ बेखबर छथि रामसोगारथ मंडल। मंडल जी स्वतंत्रता सेनानी छथि–ताम्रपत्र-विहीन। इसकूलक मुँह नहि देखलनि। कारी आखर भैंस

बराबर छनि हुनका लेल। पशुपालनक पुश्तैनी काज देखैत छलाह जखन पहिल बेर महात्मा गांधीक आह्वान हिनक कान धरि पहुँचल। फेर त' नारा-जुलूस-लाठी-गिरफ्तारी-जेल-एहि सभक भ' क' रहि गेलाह। पीठ पर आइयो अंगरेज सभक अत्याचारक अनेकानेक चिह्न मौजूद छनि। स्वराज प्राप्तिक बाद स्वतंत्रता सेनानी लोकनि केँ देल जायबला सम्मान-पेंशन अस्वीकार क' चुकल छथि। हिनक कहब रहनि जे भारतमाताक सेवा अपन कर्त्तव्य बुझि कयने छलाह, सम्मान आ पाइ लेल नहि।

आम गाछक छाहरि तर बैसल मंडल जीक हाथ मे बाँसक एकटा पातर सन बत्ती अछि जकर शीर्ष पर कागतक तिरंगा झंडा फहरा रहल अछि। बीच-बीच मे रामसोगारथ मंडल झंडा उठा-उठाक' नारा लगबैत छथि–

भारत माता की जय !
महतमा गांधी की जय !
जमाहिर बाबू की जय !

चन्द्रशेखर-कट दाढ़ीबला एकटा छौंड़ा हुनका लग आबि कहैत छनि–'बाबा, आप गलत नारा लगा रहे हैं। महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू मर चुके, उनकी जय नहीं, अमर रहें कहिये।

मैल-चिक्कट वस्त्र मे लपटायल अस्सी वर्षक बूढ़ रामसोगारथ मंडल मिझायल-मिझायल आँखि सँ ओहि छौंड़ा दिस तकैत छथि। बजबाकाल हुनक ठोर वक्र भ' जाइत अछि–'जे नारा केँ अहाँ गलत कहैत छियै बाबू, ऊ त' हमर देहक गत्तर-गत्तर, गिरह-गिरह मे बातरस जकाँ आ साँस मे दम्मा जकाँ पैसि गेल छै। आब अइ देह मे खून कहाँ छै बाबू, वैह नारा टा छै। अहाँ सभ की बुझबै, हमरा लेल ई नारा बैकुण्ठक चाभी छियै आ वैतरणी पार कर' लेल गायक नाँगड़ि। लया जमाना केँ नारा अहीं सभ लगाबू ग'। हम त' बूढ़ आ बेमार लोक छी, हमरा पुरने चाउर के पथ्य पचत। जाउ बाबू जाउ, ई गप्प सुन्नर ठाकुर केँ सिखेबनि जे मुनिस्टर सभक केश-दाढ़ी बनबैत-बनबैत सुराजी पेंशन हथिआए नेने-ए।'

रामसोगारथ मंडल गाछ मे ओंगठि आँखि मूनि लैत छथि। हुनक आँखि मे चारि-पाँच जुग पुरान सपना फेर सँ पसर' लागल अछि।

भारत माता की जय !
महतमा गांधी की....

अलीगढ़ी पैजामा बला छौंड़ा सभक हेंज ठठाक' हँसैत अछि– ही! ही! ही! ही!

तेजी सँ हॉर्न बजबैत एकटा खूब नमगर कार प्रांगण मे ढुकैत अछि।

'आबि गेलाह। आबि गेलाह। रामाधार बाबू आबि गेलाह।'

'आबि गेल डुप्लीकेटरक 'बापजी'।'

'ऐ। कौन बोला?'

'चोप्प।'

प्रांगण मे आ बरंडा पर छिड़िआयल लोक सभ मे हरबिड़रो मचि जाइत अछि। गरीबदास आजाद हड़बड़ाक' उठैत छथि। धोतीक ढेका खुलि जाइत छनि। ओकरा समेटि डाँड़ मे खोंसैत बरंडाक कात मे अबैत छथि–'अरे भाइ, कतय थिकहुँ युवा दल-सेवा दलक लोक सभ? माफ करब। अहाँ सभ त' अन्हेर करै छी। खाली भन्न-भन्न टा करब कि नारो लगायब?'

'महासभा पार्टी–जिन्दाबाद।'

'जिन्दाबाद ! जिन्दाबाद।'

'रामाधार बाबू–जिन्दाबाद।'

'जिन्दाबाद ! जिन्दाबाद।'

'सदानन्द विदरोही–जिन्दाबाद।'

'जिन्दाबाद...

'फट ! फट ! ई कोन मजाक भेलै, आँय।'

'बोलिये प्रेम से बापजी की जय।'

'हे। हे। के छी बेहूदा?'

'हे देखह, हे देखह, फेर बाजी मारि लेलनि माखन बाबू। वाह रे चमोक्कनि।'

माखन बाबू तेजी सँ गाड़ी लग पहुँचैत छथि। गाड़ी सँ रामाधार पांडेक उतरितहि हुनका गरा मे माला पहिरा दैत छथि माखन बाबू।

'परनाऽऽऽम सरकाऽऽऽर'–माखन बाबूक लमारल दीर्घ-प्रणाम।

'कहिये, कैसे हैं माखन जी?'–कहैत रामाधार पांडे सीढ़ी चढ़ैत बरंडा पर आबि जाइत छथि।

'आपकी कृपा से जी रहे हैं सरकाऽऽर ।'–माखन बाबूक जवाब माला पहिराबय बला सभक हूलि-मालि मे हेरा जाइत अछि।

'गोर लगै छी।'–गरीबदास आजादक माला।

'हे ! कने कात होउ।'–सुबोध जीक माला।

'परनाम ! हे, धक्का नहि दिअ'।' राजीव शर्माक माला।

'कने हमरो सभ कें मौका दिअ'। प्रणाम।'–राजमंगल श्रीवास्तवक माला।

'एह बहिं, एना कहीं लोक करैए, हेऽऽहे, प्रणाम सर !'–सीता बाबूक माला।

'आहि रे बा, मालो नहि पहिराब' देब, हँ आब ठीक।'–सतीश सिंह परमारक माला।

'गोर लागी कका।'–राजनाथ झाक माला।

'हटै जाउ, हटै जाउ, शनिचर 'शनि' बेहोश भ' गेलाह।'

रामाधार पांडे अपन दुनू हाथ जोड़िक' चारू दिस घूमि जाइत छथि–सामूहिक प्रणामक मुद्रा मे। माखन बाबू हुनका गाइड करैत छथि–'आया जाय, आया जाय सरकाऽर, इधर पधारा जाय।'

रामाधार पांडे बैसि जाइत छथि। रामनारायण महराज हुनक पीठ सँ मसनद लगा दैत छथि !

'हम अपन नेता श्री रामाधार पांडे जीसँ करबद्ध पराथना करैत छी जे ओ हमरा सभ कें अपन आसीरबाद देथि आ एहि अवसर पर दू शब्द कहबाक कृपा करथि।'–रामनारायण महराज उठिक' मीटींग प्रारंभ करैत छथि।

'भाइयों और बहनों।...देश और सूबे की स्थिति व्याकुल करने बाली है। आपसी एकता की जरूरत जितनी आज है, पहले कभी नहीं थी...'

'बापजीक हक मे कि पार्टीक हक मे?...एकटा स्वर।

'ऐ !!! शांत रहिये। शांत रहिये।'–दोसर स्वर।

'...हमारे दुश्मन गलत-गलत अफवाहें फैला रहे हैं ताकि हमारी एकता खंडित हो जाय। हमें उनसे सावधान रहना है और अफवाहों पर कान नहीं देना है...अलग-अलग रहने पर उँगली है, एक साथ जुड़ जाय तो मुट्ठी बनती है और दुश्मन...हम नहीं रहेंगे तो देश...धन्यवाद ! जयहिन्द ! जय भारत।' रामाधार पांडेक दू-चारि-दस-बीस हजार शब्द बला पैंतीस मिनट नम्हर भाषण समाप्त भेल।

'आब हम श्री सुबोधनारायण सिंह जीसँ आग्रह करब जे ओ दू शब्द कहथि। ईहो आग्रह जे समय कें खेयाल राखल जाय।'

'...नेहरू आ गांधीक देश मे रहएबला सभ कें एकताक आवश्यकता समझयबाक जरूरत नहि अछि। आपसी एकतेक बल पर अपन सेनानी लोकनि अंगरेज कें भगौलनि मुदा हम सभ समतोला जकाँ नहि बनी जे ऊपर सँ एक आ तर मे अनेक फाँक...।'

'गरीबदास आजाद।'

'...माफ करब, बिना एकजुट भेने हमरा सभक भविष्य उज्ज्वल नहि भ' सकैछ आ ने हम एलेक्शन जीति सकैत छी...हमरा पंचायत मे बी.डी.ओ. साहेब...।'

'माखन बाबू।'

'... ...अजुका बैसार मे विद्वानक विद्वान, नेता सभक नेता परमादरणीय, परम पूजनीय, प्रातः स्मरणीय श्री रामाधार पांडे जी कृपापूर्वक, दयापूर्वक, सहानुभूतिपूर्वक पधारिक' हमरा सभकें जे गौरव प्रदान कयलनि अछि ताहि लेल हम हुनक सय बेर, हजार बेर, लाख बेर नमन करै छियनि। हुनक मुखारविन्द सँ एकताक मादे जे उद्‌गार व्यक्त भेल अछि तकर हम हृदय सँ, गह्वर सँ, अन्तरात्मा सँ समर्थन करैत छी। कम सँ कम जे लोक बुनियाद सँ पार्टी मे छथि तनिका...।'

'राजीव सरमा।'

'...हम सभ जाहि देश, सूबा आ समाज मे रहि रहल छी ओहि पर बाहरक नहि घरक चिरागसँ खतरा अछि। लुच्चा-लफाँड़ि, अबसरवादी, समाजविरोधी, विश्वासघाती, भ्रष्टाचारी आ षड्यंत्रकारी तत्त्वं सभकें सबक सिखयबा लेल देशभक्त शक्ति कें एकजुट होएबा मे आब कनिको विलम्ब नहि करबाक चाही। हम हुनका सभक आह्वान...।'

'राजमंगल श्रीवास्तव।'

'...टू वी वेरी फ्रैंक, जखन सिक्किम-गंगटोक मे हमरा सभ कें पार्टीक ट्रेनिंग देल जा रहल छल त' अपना सभक नेता चटर्जी दादा कहने छलाह जे अपन पार्टीक एकता देशक एकता थिक। तें देशक कुर्बानी लेल हमरा सभक एक होएब आवश्यक...।'

'राजनाथ झा।'

'...लोक सभ भ्रम मे छथि जे हमरा सभक बीच मतभेद अछि। हमरा सभक एकता हुनका मुँहतोड़ जवाब...।'

'सतीश सिंह परमार।'

'...हम सभ एक छी। कलक्टर साहेब आ एस.डी.ओ. साहेब सेहो हमरा अपन स्टाफ सँ बजाक' कहैत छलाह जे एक भइए क' किछु...।'

'सदानन्द विदरोही।'

'...के एकता लेल हम हरदम तेयागि कयलहुँ अछि आ भविष्य मे कोनो

कुर्बानी देबा लेल तैयार... ...।'

'गणेश गुरमैता।'

'...के एकता मे हम नवतूर सभ ककरो सँ पाछाँ नहि छी। बुजुर्ग सभकेँ चाहियनि जे आनो मामिला सभ मे हमरा सभकेँ अवसर देथि। एहि मादे आलाकमान केँ हम एकटा पेटीशन सेहो...।'

'शनिचर शनि।'

'...एकताक भावना जगयबा लेल नव-पीढ़ी केँ नशाखोरीक निन्न सँ जगायब परम आवश्यक...।'

'रघुवंश मंडल।'

'... ...एकताक अनिवार्यता महसूस कइएक' हम लोकदल सँ एहि दल मे आएल छी आ...।'

'सुब्रत मुखर्जी।'

'...एकता...।'

'नागेन्दर सिंह।'

'...एकता...।'

'शचेन्द्र सिंह।'

'...एकता...।'

'राजेन्द्र प्रसाद सिंह उर्फ बच्चा बाबू।'

'...एकता...।'

बरंडाक एक कात मे एकटा पाया सँ पीठ टिकौने रामसोगारथ मंडल अपन सपना मे हेलि-डूब रहल छथि।

अकस्मात हुनका लगैत छनि जे असंख्य कारी-कारी भयावह आकृति सभ हुनका सोनहुला सपना सभकेँ चारू दिस सँ घेरि लेलक अछि। आकृति सभक बड़का-बड़का चोंच हुनक सपना सभ केँ खोधि-खोधिक' गिड़ने जा रहल अछि। फेर सभटा आकृतिक चोंच अलोपित आ आकृति सभ क्रमश: सियारक हेंज मे बदलैत चलि जाइत अछि। 'हुआ-हुआ'क तीव्र कर्णभेदी स्वर उठैत अछि। आतंकित भ' थर-थर कँपैत रामसोगारथ मंडल अपन बन्न आँखि खोलि खूब जोर सँ चिचिया उठैत छथि–

भारत माता की जय !

महतमा गांधी की जय !!

जमाहिर बाबू की जय !!!

बैसार मे सम्मिलित नेता-कार्यकर्त्तागण चौंकिक' हुनका दिस तकैत अछि आ दोसरहि क्षण सम्पूर्ण महासभा पार्टी कार्यालय भवन आ प्रांगण एकदम घिनौना सन समवेत ठहक्का सँ गूँजि उठैत अछि–

ही ! ही ! ही ! ही ! खी ! खी ! खी ! खी ! ठी ! ठी ! ठी ! ठी !

पियासल पानि

रामचरन बाबुजीएक समय सँ हमरा सभक खेती-बाड़ी करैत छल। जाधरि जुआन रहय, हरबाही मे ओकर बड़ नाम रहै। आब वयस बढ़ला सँ ओ हरबाही छोड़ि देलक मुदा हमर गाय-बड़दक देख-रेख, रोपनी-कटनीक लेल जन-मजूरक सरंजाम, दरबज्जाक साफ-सफाइ आ घरक कतेको काज वैह सम्हारैत अछि। हरबाहीक काज आब ओकर बेटा लखनाक माथ पर छैक। लखनाक बियाह रामचरन नेने मे क' देने छलैक। एम्हर लखना हरबाहीक काज सम्हारलक आ ओम्हर द्विरागमन भ' क' आयलि-नारायणपुरबाली। नारायणपुरबाली माने लखनाक पत्नी माने रामचरनक पुतहु।

रामचरन द्विरागमनक पश्चात पुतहुक अयबाक खुशी मे टोलबैया सभ कें भोज देने छल। हमरो बड़ सिनेह सँ बजौने छल। खयलाक पश्चात कनियाक मुँह देखबाक लेल गेल छलहुँ-मुट्ठी मे एगारह टाका ल' क'।

स्त्रीगण सभ कनियाँ कें चारू कात सँ घेरने छलै। हमर ओतय जाइते कनियाक पाछाँ मे बैसल एक गोट स्त्री कनियाँक घोघ उठा देने छलै। स्त्रीगण सभ सँ घेरायल आ घोघक तर मे गरमी सँ बेहाल कनियाँक मुँह घामक बुन्न सँ तेना चुहचुहायल रहै जेना ओस मे भीजल गुलाब। हम अवाक ठाढ़ रहि गेल छलहुँ ओकर अविस्मृत अपार रूप-राशि देखिक'।

''राजा बाबूक जनम त' लखनाक पाछें भेल रहै। एहि हिसाब सँ त' कनिया हिनक भौजीए लगतनि मुदा देओर साहेब छथि जे काठ जकाँ ठाढ़ छथि। हिनका तँ भौजी सँ पाँजर सटाक' बैसि जयबाक चाही।''-लखनाक काकी बेरियाबाली बाजलि त' ओत' बैसल सभ स्त्रीगण ठठाक' हँस' लगलीह।

हम जल्दी सँ कनियाँक आगाँ मे मुँह-देखाइक टाका राखि देलियै आ बहार भ' गेलहुँ।

''एह ! बड्ड मजकियल अछि बेरियाबाली काकी। देखहक त' अंगरेजिया लताम जकाँ केहन लाल-टेस भ' गेल रहनि राजा बाबूक मुँह।'' -हम अपन पाछाँ ककरो टिप्पणी आ स्त्रीगणक समवेत हँसी सुनलहुँ।

थोड़बे दिन मे नारायणपुरबाली खेत सभ मे काज करबाक लेल जाइ लागलि। हम खेत पर जाइ तँ ओ हमरा कनखी सँ देखय, देखिक' मुस्काबय।

एक दिन रोपनी होइत रहय आ हम खेतक आरि पर ठाढ़ रही। काज करैत नारायणपुरबाली हमरा सँ दू डेगक दूरी पर आबि गेल छलि। ओ अपन कात मे काज करैत छौंड़ी कें केहुनी मारलक आ मद्धिम स्वर मे बाजलि-''देखिऔक ने। केहन बेदरद देओर छथिन। भौजी के टोकितहु नै छथिन।''

हमरो मजाक सूझल। बिना ककरो सम्बोधित कयने जोर सँ कहलियैक-''अरे भाय ! घोघबाली कनिया सभ खेत मे अनेरे ने चलि अबै छै। मिनट-मिनट पर घोघे सरिआओत। रोपत की अल्हुआ ! सुनै जाह सभ लोक। हम रोपनीक बोनि देबह, घोघ सरिअयबाक नहि।''

स्त्रीगण ठठाक' हँसलि। बेरियाबाली हँसैत-हँसैत बाजलि-''ठीके त' कहै छथि बौआ। घोघ तानिक' कतहु काज होइ छै? आ कि बौआ सँ भोजबला दिन जकाँ घोघ हटयबाक लेल रोज-रोज एगारह टाका चारज करबह?''

एगारह टाका चारज करयबला गप सुनिक' धान रोपैत स्त्रीगण सभ मे जेना हँसिक तोड़ चलि पड़लैक। हमहूँ हँस' लगलहुँ।

फेर स्त्रीगण सभ अपन काज मे लागि गेलि। कनेकाल बाद नारायणपुरबाली दिस नजरि गेल तँ देखलहुँ जे ओ घोघ हटा लेने छल आ रोपनी मे मगन रहय।

एहि हँसी-ठट्ठाक बाद नारायणपुरबाली घोघ तानब बन्न क' देने छलि आ गाहे-बगाहे हमरा सँ गप सेहो करय लागलि।

एक दिन रोपनी होइत रहय आ हम खेतक बीच मे बनल एकटा फुसिक घरक

ओसारा पर बैसल कोनो पत्रिकाक पन्ना उनटबैत रही। सोझाँ मे एकटा कल छलै। पत्रिका सँ नजरि उठयलहुँ तँ देखल जे कल लग ठाढ़ि नारायणपुरबाली एकटक हमरा दिस ताकि रहल अछि।

हम ओहिना पुछलियै–"की ! पियास लागल छह?"

ओ अपन बड़का-बड़का आँखि केँ हमर मुँह पर स्थिर क' बाजलि–"हँ।" ई मुँहझौंसी पियास अहाँ केँ देखि आरो बढ़ि जाइत अछि। कोनो एहन उपाय क' दिऔ नञि लागय।"–कहिक' ओ विचित्र ढंगेँ हँसि देलक।

हम अपन देह मे एकटा सनसनाहटिक अनुभव कयल। बड्ड मोसकिल सँ हम अपन ठोर पर हँसी आनि सकलहुँ। थूक घोंटैत हम कहलियै–'बेस ! लखना केँ हम कोनो नीक उपाय तकबाक लेल कहबै।'

अपना बुझने हम नीक परिहास कयने छलहुँ आ तेहने प्रत्युत्तरक अपेक्षो छल मुदा ओ कल दिस घुमिक' पानि पीबय लागलि। पानि पीबिक' जाइत काल ओ हमरा दिस घुरलि।

ओकर बेधैत आँखि हमरा पर थिर भ' गेल। एक क्षणक लेल ओकर आँखि मे समुद्र पसरल देखायल आ दोसरे क्षण सुनसान जंगल। फेर जेना ओकर आँखि खुक्ख भ' गेलै। लागल, नारायणपुरबाली किछु कहय चाहैत हो फेर जेना ओकर विचार बदलि गेलै। अकस्मात ओ तीव्रता सँ घुमि आगाँ बढ़ि गेल।

हम पत्रिकाक पन्ना पर ओकर आँखिक भावक अर्थ तकबाक असफल प्रयास करय लगलहुँ।

ओहि दिन अंतिमे रोपनी छलैक। खेतक आरि पर बड़ीकाल धरि ठाढ़ रही। थकानक अनुभव होब' लागल तँ खेतबला घरक भीतर बनल मचान पर आबि पसरि गेलहुँ। कातबला खिड़की सँ शीतल-शीतल हवा अबैत छल। आँखि मुनितहि निन्न आबि गेल।

फेर जहिना निन्न लागल छल तहिना टूटि गेल। भेल जे कियो पयर दाबि रहल अछि। आँखि खोलि देलहुँ। देखल–नारायणपुरबाली छलि।

"अरे ! ई की करैत छह !"–कहैत हम हड़बड़ाक' उठि गेलहुँ।

"देओरक सेवा करैत छलहुँ आर की ! सेबे कयल ने मेवा भेटत।"–ओ हँसैत बाजलि आ हमर पयर दिस पुनः हाथ बढ़ौलक।

हम शीघ्रता सँ पयर समेटि लेलहुँ आ घबड़ाक' कहलियैक–"देखह। पयर दबेनाइ हमरा नीक नहि लगैत अछि आ फेर...। आ फेर, बाहर मे एतेक लोक सभ छै। की सोचत ओ सभ। तोँ जाह।"

ओ बड़ याचनाक भाव सँ हमरा दिस तकलक।

"हमरा लोकक सोचबाक चिन्ता नहि अछि। मुदा अहाँ...।"–ओ अपन बात के अपूर्ण छोड़ि देलक। एक बेर पुनः ओ अपन हाथ हमरा दिस बढ़ौलक आ फेर शीघ्रता सँ पाछाँ खीचि लेलक। हमरा दिस तकैत ओकर दुनू आँखि डबडबा गेलै। फेर शीघ्रता सँ पलटि क' ओ बहार भ' गेलि।

कालक पाँखि पर चढ़ल मौसम आयल-गेल। धानक शीश पाकल त' कटनी भेल। खरिहान मे धान तैयार होब' लागल। फेर खेतक जोताइ भेल, गहूम बाउग भेल आ फेर ओकर शीश खेत मे लहराब' लागल।

हमर खेत आ कि खरिहान मे एहि बीच जे मेहनतकश हाथ सभ अपन रंग छिड़िऔलक ताहि मे सभ सँ बेसी काबिल आ कमाल करयबला हाथ नारायणपुरबालीक छल–ई हमही टा नहि ओकरा संग-संग काज करयबला दोसरो लोक मानैत अछि। रोपनी, डोभनी, कटनी आ कमौनी–कोनो काज मे ओकर जोड़ नहि छल। अपना संग काज करयबाली सँ ओ सदिखन दू डेग आगाँ रहैत छलि।

मुदा हम ओकरा सँ कनछिआयल रहैत छलहुँ आ ओकरा संग एकान्तक कोनो अवसर नहि आब' दैत छलहुँ। ओ सेहो संभवतः एकरा बुझि रहल छलि आ अपन हाथक मेहनति आ कलाक कौशल देखाक' एहि दूरी केँ समाप्त करबाक अनेक प्रयास करैत छलि।

हम कही वा नहि कही ओ दोसर काज सभ सँ समय निकालिक' हमर फुलबारीक देख-रेख सेहो क' जाय। ओकर मेहनतिक बदौलत कियारी सभ मे ताकलो पर घासक एकोटा टुनगी नजरि नहि अबैत छलै आ गाछ सभ जखन आवश्यक हो, पानि सँ सिंचित कयल भेटय। एहि बेर गुलाबक गाछ मे जतेक पैघ-पैघ फूल आयल, हम मानैत छी जे ई नारायणपुरबालीएक हाथक कला सँ सम्भव भेल छल।

खेत सभ मे गहूमक शीश पाकि गेल छलै। ओकरा कटयबाक लेल सोचिते छलहुँ कि अकस्मात एक गोट कुटुम्बक बेमारी मे अन्यत्र जाय पड़ल। एक सप्ताहक पश्चात घुरलहुँ तँ रामचरन बतौलक जे गहूमक शीश टह-टह पाकि गेलाक कारणेँ ओकर कटनी मे सावधानी राखय पड़त। रौद मे कटनी कयला सँ शीशक दाना खेतहि मे झड़ि जा सकैत अछि। सूर्योदय सँ पूर्वहि जखन शीश ओसायल रहैत अछि तखने ओकरा काटब उचित आ सूर्योदय सँ पूर्वहि बोझ सभक खरिहान धरि पहुँचि गेनाय आवश्यक।

देरी करब उचित नहि जानि हम रामचरन केँ कहलियैक जे ओ आइये जन सभ केँ कहि देअय, जाहि सँ काल्हि कटनी प्रारम्भ भ' जाय।

दोसर दिन सँ कटनी प्रारम्भ भ' गेल। खूब अन्हारे जन सभ आबि जाय आ सूर्योदय होइत-होइत बोझ सभ खरिहान पहुँचि जाय।

कटनी प्रारम्भ भेलाक तेसर दिन जन सभ केँ आगाँ बढ़बाक लेल कहि जल्दी-जल्दी तैयार होब' लगलहुँ। राति देरी सँ सूतल रही तेँ जन सभक दुआर पर आबि गेलाक पश्चात निन्न टूटल रहय। तैयार भ' क' बहरयलहुँ तखनो बेस अन्हारे छल।

परिचित डगर पर अन्हारो मे, तेजी सँ डेग बढ़ौने जाइत रही जे जन सभ केँ खेत पहुँचबा धरि हमहूँ पहुँचि जाइ। आमक कलम लग पहुँचले रही कि नारायणपुरबाली अकस्मात जिन्न जकाँ अन्हार सँ प्रकट भेलि आ हमर देह सँ लत्ती जकाँ लपटि गेलि। हम किछु बुझि पाबी ता ओकर आतुर ठोर हमर गाल, माथ आ कंठ पर अपन निशान छोड़ैत हमर ठोर पर आबिक' ठहरि गेल छल। फेर ओकर हाथक थरथराइत आँगुर हमर देह पर कोनो खजाना केँ जेना खोजय लागल। हम कसमसयबाक प्रयास कयलहुँ मुदा हम सम्हरै सँ पहिनहि अवश जकाँ भ' गेलहुँ। लगैत छल जे हमर हाथ ज्वालामुखीक लाबा जकाँ दहकैत ओकर देह केँ चारूकात सँ जकड़ि लेतैक ता अकस्मात...।

''मालिक ! मालिक !'' हमर घरैया नोकर सरजुगबाक जोर-जोर सँ बजयबाक स्वर आयल।

''बज्जर खसाबथुन भगवान एहि दुसमनमा पर''-निराशा, लालसा आ घृणा सँ कुंडाबोर ई शब्द छलै नारायणपुरबालीक। बिजली जकाँ छिटकिक' ओ हमरा सँ फराक भ' गेलि। दोसरे क्षण हम ओकर आकृति केँ अन्हार मे विलीन होइत देखलहुँ।

''मालिक ! मालिक !-सरजुगबाक स्वर एहि बेर लग सँ आयल।

''की छौक?''-बड्ड मोसकिल सँ हमरा मुँह सँ शब्द बहरायल।

सरजुगबा आब एकदम सोझाँ मे ठाढ़ छल, हाथ मे थरमस लेने-''चाह ! मलिकाइन पठौलनि अछि। अहाँ तँ तैयार भ' क' तुरंते बहरा गेलियै। मलिकाइन कहलथिन जे जो दौड़ि क' द' आ।''

हम हाथ बढ़ाक' थरमस ल' लेलहुँ आ कहलियैक-''सुन ! हमर मोन नीक नहि बुझाइत अछि। हम घुरि जाइत छी, तोँ खेत पर चलि जो।''

फेर प्रायः एक मास बीति गेल। ओहि घटनाक पश्चात हम नारायणपुरबाली केँ नहि देखलहुँ। खरिहान मे गहूम तैयार भ' चुकल छल आ फुलबारी मे नम्हर-नम्हर घास उगि गेल रहै। नारायणपुरबाली ने खरिहान मे नजरि आयलि ने फुलबारी मे। ओकरा विषय मे जान' चाहैतं छलहुँ मुदा ककरो सँ पुछबा मे संकोच होइत छल।

गहूमक भाव बढ़ल रहै। सोचैत छलहुँ जे घरक आवश्यकतानुसार राखि अतिरिक्त गहूम बेचि ली मुदा ओहि दिन ने रामचरनक ठेकान छल आ ने लखनाक।

हम सरजूगबा केँ रामचरन केँ बजा आन' पठौलियै। सरजुगबा दौड़ैत घुरल। हपसैत, बड्ड आवेशपूर्ण स्वर मे ओ खबरि देलक-'रामचरनक लरैनपुरबाली पुतहु पर डाकनी असवार भ' गेलैए। देह पर सँ कपड़ा-बस्तर फेकि दैत छैक आ नहि जानि की सभ अकड़-बकड़ बजैत छैक। मास भरि सँ बेमार छलै।''

सुनिक' हम सन्न भ' गेलहुँ।

''लरैनपुरबाली पर सँ डाकनी उतारबाक लेल आइ मोतिया दुसाध भगतै खेलतैक। हमहूँ देख' जइएक मालिक?'' -सरजुगबा खबरि द' क' स्वीकृति सेहो मँगलक। हम सहमति द' देलियै।

राति मे रामचरनक ओतय सँ घुरिक' सरजुगबा 'आँखिक देखल हाल' सुनौलक-''की बताउ मालिक। आइ त' गजबे ने भगतै भेलै। मोतिया भगत बजलै जे बड्ड जब्बर डाकनी छैक, पहिने बरहम बबाक परसादीक बेवस्था करह। दूइ बोतल दारू अयलै आ दुनू बोतल मोतिया भगत पी गेलैक-गट-गट। एकरा बाद तँ बुझिऔ मालिक जे ओत' अन्हर उठि गेलै। भगता डाकनीक झोंटा पकड़िक' सौंसे अँगना मे लिरियाब' लगलै, फेर मरचाइयक झोंक देलकै

आ तकर बाद कचका करची सँ पीठक चाम उधेसि कें राखि देलकै सात गो करची टूटि गेलै मालिक। डाकनी 'माय गे माय' 'बाप हओ बाप' चिचिआइत रहलै मुदा मोतिया भगत आखिर ओकरा भगाइयेक' मानलक। हरदुआरक श्मशानक पीपर गाछ पर सँ आयल छलै, भागि कें फेर ओतहि चलि गेलै। ओम्हर डाकनी पड़ायल, एम्हर लरैनपुरबाली अचेत भ' गेलै।''

बारह वर्षक सरजुगबा कथा सुनबैत रोमांचित छल आ हम डाकनीक नाम पर नारायणपुरबालीक दुर्गतिक कल्पना करैत सिहरि रहल छलहुँ।

दोसर दिन रामचरन कनैत आयल–'हमरा पर त' डाका पड़ि गेल, मालिक। एहन पुतहु तँ भगवान दुसमनो कें नहि दौक। सौंसे कुल कें अकलंक लगाक' भागि गेल।'

हम अवाक। रामचरन कहैत छल जे राति भगतै खतम भेलाक बाद अचेत नारायणपुरबाली कें स्त्रीगण सभ ल' जाक' घरक ओसार पर सुता देने छलै। रातिक कोनो पहर मे ओकरा होश अयलै। सभ सुतले छलै। ओ कात मे राखल एकटा लोटा उठौलक, चुपेचाप अँगना सँ बहरायल आ कतहु चलि गेल।

नारायणपुरबालीक पलायनक किछु मास धरि रामचरन चुप रहल। फेर ओकर अपन वंश चलयबाक फिकिर सतब' लगलै। लखना दोसर बियाहक लेल किन्नहु तैयार नहि होइत छल। रामचरन सोचैत छल जे नारायणपुरबालीक पुनः घुरि अयबाक आस मे लखना दोसर बियाह लेल तैयार नहि होइत अछि।

अन्ततः लखनाक लाख विरोधक बादो रामचरन ओकर बियाह करबा देलक। मुँह देखाइक बिध मे हम स्वयं नहि जाक' सरजुगबाक हाथें एगारह गोट टाका पठा देलियै।

समय अपन निर्धारित गति सँ चलैत रहल। सात-आठ मास बिति गेलै। एक दिन रामचरन आयल तँ बड्ड प्रसन्न छल। अबिते बाजल–''भगवान कें हमरा पर दया आबि गेलनि, मालिक। हम बाबा बनयबला छी। लखना एक गोट कुटुम्ब एहिठाम गेल छैक। तीन–चारि दिन मे घुरतैक तँ खुशी सँ बताह भ' जयतै–ई खबरि सुनिक।''

लखना बताह तँ भेलैक मुदा... ...

चारिम-पाँचम दिन रामचरन दौड़ैत आयल–''जल्दी इस्पिताल चलिऔ मालिक।''

हम अकचका गेलहुँ –''कियैक ! की भेलै?''

''लखना अपन कपार फोड़ि लेलकै''

''मुदा कियैक? कोना?''–हम पुछलियै।

रामचरनक आँखि सँ दहो-दिस नोर खसैत छलै–''आब अहाँ सँ की नुकायब मालिक। हम की जनैत छलहुँ जे हमर बेटा हमर बंश कें आगू बढ़यबाक काबिल नहि छैक–नामरद छैक।''–कहैत रामचरन अपन माथ झुका लेलक, किछु काल चुप रहल, फेर बाजल –'आइए भोर मे लखना कुटुम्ब एहिठाम सँ घुरल तँ ओकरा लोक सभ कनियाँक होनिहारिक खबरि देलकै सुनितहि लखना जेना काठ भ' गेलै। फेर 'हमर बच्चा नहि थिक', 'ई हमर बच्चा नहि थिक' कहि बताह जकाँ चिकर'-भोकर' लगलै। फेर अँगने मे राखल एकटा पजेबा उठाक' अपन कपार पर ध' मारलक। कपार फुटि गेलै। खुनमाखून भेल बेहोश पड़ल छैक।'' –कहिक' रामचरन चुप भ' गेल आ हमरा काटू त' खून नहि।

''तखन तँ नारायणपुरबाली...'' हम किछु कह' चाहलियै मुदा शब्द नहि भेटल।

''हँ मालिक ! लछमी छलै। बेकसूर, बेचारी, अभागलि।''–रामचरन बुक्का फाड़िक' कान' लागल।

रामचरन कें सांत्वनाक आवश्यकता छलै आ साइत हमरो। हम ओकरा भरोसाक दू गोट बोल कह' चाहैत छलियै मुदा कहि नहि सकलहुँ। भेल जेना कंठ मे लोहाक बड़का टा गोला अटकि गेल हो।

हम अनमनस्क होइत उठलहुँ आ अस्पताल जयबाक लेल तैयार होब' लगलहुँ।

अन्हारक विरोध मे

कएक दिन सँ बिजली गायब छल।

घर विलम्ब सँ घुरल छलहुँ। लैम्पक बीमार पीयर इजोत मे घड़ी देखल–सवा दस बाजल छल। जल्दी–जल्दी कपड़ा फेरलहुँ। हाथ–मुँह धोक' अयलहुँ, ताबत पत्नी भोजन परोसि देने छलीह। भूख सेहो जोर सँ लागि गेल छल। खूब प्रेमपूर्वक भोजन कयलाक पश्चात कनेकाल वज्रासन मे बैसलहुँ।

बाहर भकोभन्न भ' गेल छल। कागतक उज्जर पीच पर कलमक यात्रा लेल सर्वोत्तम समय। मोन भेल जे किछु लिखी। बेसी इजोत लेल लैम्पक बत्ती कें कने तेज क' देलियैक।

कागत–कलम ल' क' बैसले रही कि बाहरक अन्हार आ भकोभन्न कें चिर्रीचोंत करैत खूब जोर सँ हाकरोस भेल। हम अकानि क' हाकरोसक अनुमान लगयबाक प्रयास करय लगलहुँ। हो न हो कुजड़टोली–ए सँ उठि रहल अछि ई स्वर–स्त्रीगणक जोर–जोर सँ चिकरबाक स्वर, शब्द स्पष्ट नहि छल।

घड़ी दिस देखलहुँ। घड़ी बन्न छल। ओकर काँटा पौने एगारह बजाक' रुकि गेल छलै। कतेक बाजल होयत एखन? साइत साढ़े एगारह सँ बारहक बीच। चिकरबाक स्वर फेर आयल। हमरा मोन मे पहिल विचार ई आयल जे प्रत्येक राति जकाँ कुजड़वा सभ कचका शराब पी–पीक' घूरल होयत बजार सँ आ रोजनामचा पूरा करबाक लेल अपनहि मे झगड़ा करैत होयत।

मुदा फेर स्त्रीगणक तिक्ख आर्त्तनाद भेल। ई नव गप रहय–रोजनामचा सँ फराक। रोज–रोज होमय बला झगड़ा आ गारि–गरौजक अपन एकटा फराके सुर–ताल होइत छैक। ओहि मे बाझल लोक सभ कें ओकरा सँ एकटा आनंददायक उत्तेजना भेटैत हेतैक, एहन हमरा लगैत छल मुदा अजुका घोंघाउज मे एकटा भयक मिश्रण छलै–आतंक, दहशतिक भय। निश्चित रूप सँ कोनो खतराक गप छलै।

हमरा लेल चुपचाप बैसल रहब मोसकिल भ' गेल। कागत–कलम कें एक कात राखि बाहर जयबाक लेल हम चप्पल पहिरनाइ शुरुहे कयने रही कि पत्नी बाँहि ध' लेलनि– 'नहि जाउ। एतेक राति कें...।' ओ मनुहार कयलनि।

हम किछु नहि बजलहुँ। देह मे एकटा तनाव सन अनुभव करैत छलहुँ। बिना किछु बजने कोठरीक फाटक खोलिक' बहरा गेलहुँ।

बिनु चानक राति छल आ बाहर मे घटाटोप अन्हार पसरल छल। बरंडा पर अबितहि कोनो गाछ सँ उल्लूक चिचिअयबाक स्वर आयल। देह भुलकि गेल। पत्नी भयभीत भ' हमर पीठ सँ सटि गेलीह।

हमर घरक आगाँ फुलबारीक, फुलबारीक बाद सड़क। सड़कक बाद किछु बीघा खेतीक जमीन। फेर एकटा पोखरि। पोखरिक बाद फेर खेतीक किछु एक बीघा जमीन। तकर बाद कुजड़टोली। हमर घर सँ प्राय: तीन सय डेगक दूरी पर। सुन्नी मुसलमान सभक मात्र पचीस–तीस परिवारक एकटा टोल–कुजड़टोली।

टोलक मरद सभ भोर होइतहि फल आ तरकारी बेचय लेल हटिया–बजार दिस निकलि जाइत अछि आ साँझक बाद अपन–अपन दोकनदारी समेटि बेस राति कें घर घुरैत अछि–दारू पीबिक' झूमैत–लटपटायत, धाराप्रवाह गारिक बौछार करैत। स्त्रीगण सभ दिन भरि घर–अगोरैत अछि। बैसल–बैसल एक दोसरक खिधांस करैत अछि, आरोप–प्रत्यारोप करैत अछि। अपने मे घोंघाउज करैत थाकि जाइत अछि त' अपन–अपन मरदक घुरलापर एक दोसरा सँ फरिया लेबाक धमकी द' चुलही–बासन मे लागि जाइत अछि। मरद सभक बेस राति गेल घुरलाक बाद स्त्रीगण सभ नून–तेल औंसिक' ओकरा सभ कें भरि दिनक खिस्सा सुनबैत अछि आ तखन सौंसे कुजड़टोली झगड़ा, हल्ला आ गारि–गरौजक भूतियाही धार मे डूब–उपराब' लगैत अछि। इहए रोजनामचा छै एहि टोलक। मुदा आइ?

बरंडा पर अयलहुँ तँ आगाँ सड़क पर किछु लोकक आहटि सुनलहुँ। टॉर्चक इजोत सेहो देखायल। हम पुछलियैक–के?'

'राजाराम।'–राजाराम माने हमर भातिज।

'की बात छै?'– हम फेर पुछलियै।

'किछु थाह नहि लगैत छै।'–इतस्ततह मे डूबल ओकर स्वर आयल।

हम आगाँ बढ़लहुँ। पत्नी फेर हमरा रोक' चहलनि। आइ–काल्हि डकैती आ खून सन आपराधिक घटना सभ खूब बढ़ल अछि। लोक सभ भय सँ

त्रस्त रहैत अछि। हमर पत्नी तँ किछु बेसिए आतंकित रहय छथि एहि सभ चीज सँ। हुनक नैहर मे दू-तीन बेर डकैती पड़ि चुकल अछि। तेँ सभ हल्ला-गुल्लाक पाछाँ डकैत सभक हाथ होयबाक आशंका आ सभ हल्ला-गुल्लापर हुनक आतंकित भ' जायब स्वभाविको छै। व्यक्तिगत रूप सँ हम अख धरि डकैतीक कोनो घटनाक प्रत्यक्षदर्शी नहि भ' सकल छी। आ एकर भुक्तभोगी होयवाक हमर अनुभव शून्य अछि। ओना हमरा भय नहि होइत अछि एहन बात नहि। बस, भय केँ हम कखनो अपना पर हावी नहि होम' दैत छियै। ओहिनो, जाहि दिन जे होयबाक अछि, होनी वा अनहोनी-ओ त' भइये क' रहत। हम ओकरा रोकि लेब की? पत्नी केँ भीतर सँ कोठरी बन्न कय लेबाक सलाह द' हम बरंडाक सीढ़ी उतरि गेलहुँ।

स्त्रीगणक चिकरबाक स्वर निरंतर अबैत छल। हम फुलबारी केँ टपैत सड़क धरि अयलहुँ। राजाराम केँ लग मे पाबि हम पुछलियै–किछु पता चललौ जे की बात छै?

'ऊँहूँ !'–नीचा जमीन पर छिटकैत ओकरे टार्चक इजोत मे हम ओकर माथ केँ अस्वीकार मे हिलैत देखलियै।

हमरा आबि गेला सँ ओकर साहस बढ़लै। ओ दस-बीस डेग आगाँ बढ़ल, फेर रुकि गेल। ओ जोर सँ चिकरि क' पुछलकै–'की बात छै हो'? की भेलै?'

'बचब' हओ बाप सभ। मारि देलक' हओ। लुटि लेलक हओ...।'–एहि बेर जे स्वर आयल ओहि मे शब्द स्पष्ट छलै। ओहि मे स्त्रीगणक चिकरब आ ओकरा सभक कनबाक स्वर सेहो सम्मिलत छल।

कनेकाल लेल हमर करेज काँपि गेल। फेर, स्त्रीगणक रुदन जेना हमर पुरुषत्व केँ चुनौती देलक। हम दस-बीस डेग आरो आगाँ बढ़लहुँ। पोखरिक महार आबि गेल रहै। कान लग मच्छर सभक भनभनयबाक स्वर एकत्रित होमय लागल। किछु डेग आरो बढ़लहुँ। पोखरिक महार पर बरसातक कारणेँ उगि आयल छोट-छोट झाड़क जंगल पसरल छल जे पयर सँ टरकबैत छल। ओकर दोग सभ मे साप-बीछ सभ होयबाक जबरदस्त आशंका छल। तखने कतओ कोनो गाछ पर दुबकल कोनो उल्लू चिचिआबय लागल।

'आब आगाँ नहि जाउ काका। ओम्हर किछु भ' सकैत छै।'–राजाराम हमरा आगाँ बढ़बा सँ रोक' चाहलक। ओकरा स्वर मे अनदेखल खतराक प्रति एकटा अज्ञात सन भय छल। अन्हार इनार मे कूदबाक भय–ने गहींरक पता, ने ओकर पानिक थाह, ने ओकर सूखल होयबाक आश्वासन। हमरो मानस

पटल पर अखबार सभ मे रोज-रोज छपैत साम्प्रदायिक तनावक खबरि सभ उभरल। हम थमकि गेलहुँ।

अगल-बगलक टोल सभ सँ सेहो कोनो बहराइत नहि छल। दहिना दिस धनुकटोली सँ किछु लोक अपन-अपन घरक भीतरे सँ 'की छै? की छै?' केर आवाज लगबैत छल। एहि 'की छै? की छै?' सँ फुटैत ध्वनि कारी चादरि ओढ़ल हवा पर दौगैत भयक लहरि केँ घटयबाक बजाय बढ़ाबिते छल।

हम चिकरलहुँ–'अरे की बात भेलै? कियो बाजबो त' कर'।'

'अलीमुदीनमा घर मे घुसिक' मारि देलक' हओ बाप...सभ बाकस-पेटी लूटिक' ल' गेलै हओ...हओ बाप सभ हओ बाप सब...हओ जुलूम भ' गेलै हओ...।'

एहि बेर स्त्रीगणक कानब-कलपब आ छाती पीटबाक स्वर लगक कोनो खेत सँ आयल-प्रायः तीस डेगक दूरि सँ।

हमरा एहि घुप्प अन्हार मे अपन साँस घुटैत जकाँ लागल। इतस्तितह हमर शिरा सभ केँ एकटा कष्टदायी तनाव सँ भरि देलक।

अकस्मात, हम झपटिक' राजारामक हाथ सँ टॉर्च ल' लेलियै। ओकर मुँह आगाँ क' स्वीच दाबि देलियै। अन्हारक थाल केँ काछैत इजोत दूर-दूर धरि पसरि गेलैक। कने काल लेल हम खतराक आशंका, उल्लू सभक चिचिआयब, साप-बीछक भय बिसरि गेलहुँ, साम्प्रदायिक तनावक गप बिसरि गेलहुँ। इतस्तितह जबरिया बोझ हम अपन कान्ह पर सँ उतारि फेकलहुँ।

टॉर्चक इजोत फेकैत हम तेजी सँ आगाँ बढ़लहुँ आ आवाज सभक लग पहुँचबाक प्रयास करय लगलहुँ। स्त्रीगणक कनबाक स्वर सिसकी मे बदलि चुकल छल। ओकर लग पहुँचिक' हम ओम्हर इजोत फेकलियै। हम स्त्रीगण सभकेँ एकटा घरक पछुआरक खेत मे यत्र-तत्र पसरल बनौआ झाड़ सभक बीच ठाढ़ि पौलहुँ। टॉर्चक इजोत मे ओकर सभक चेहरा सेहो चिन्हबा मे आयल। भोला मियाँक पुतोहु आ पोती सभ छलै।

'की भेलै?'–हम पुछलियै।

स्त्रीगण सभ केँ जेना साप सूँघि गेलै। ओकर सभक सिसकी बन्न भ' गेलै। मात्र ओकरा सभक जोर-जोर सँ साँस लेबाक स्वर हमर कान धरि पहुँचि रहल छल।

'आरे हम रंजन छी, रंजन। डरय नै जाह। साफ-साफ कहय जाह जे की बात छै आ ई कन्नारोहटि बन्न करय जाह तोरा सभ।'–हम अपन स्वर मे

आश्वासन, अधिकार आ नियंत्रण केँ एक संग सम्मिलित कयलहुँ।

'घर मे कियो मरद-पुरुष नै रहै। अलीमुदीनमा अपन भाय सभक संग हमरा घर मे घुसि गेलै, हमरा सभ केँ मारलक-पीटलक आ घरक सभटा सामान, बक्सा-पेटी लूटिक' ल' गेलै।'—भोला मियाँक जेठकी पोती सुबकैत बाजलि।

'ओ सभ चचलि गेलै त' तोँ सभ एहि जंगल मे कियै ठाढ़ छह। जाइ जाह अपन घर।'—हम कहलियै।

'नै हओ बाप। सभ अखनी ओतहि हेतै।'

गप किछु बुझायल नहि। जरूर किछु नुका रहल अछि ई छौंड़ी। लागल जेना रहस्यक कोनो वृत्त मे फंसि गेल छी।

हम उनटिक' देखलहुँ। राजाराम पीठहि पर ठाढ़ छल। हम जी कड़ा कयलहुँ आ कोनो अनहोनीक आशंका सँ ग्रस्त भोला मियाँक आंगन दिस जयबाक लेल मुड़लहुँ।

राजाराम थरथरायल स्वर हमरा टोकलक—'आब घुरि चलू काका। एकस सभक त' ई रोजक धंधा भ' गेलैए—पीयब, पीबिक' गारि-गरौज आ मारि-पीट करब। छोड़ू, कतय जायब।'

'नै हओ बाप सभ। नै रोकहक ददा केँ हओ। एक बेर जाके देखय दहक हओ। खुनीमा सभ अखनी ओतही हेतै...हओ बाप सभ, हओ बाप सभ।' —स्त्रीगण मे सँ कियो कलपिक' बाजलि।

खुनीमा। माने खून करयबला। सुनिक' एकबेर त' अदंक पैसि गेल मुदा हमर जिद हमरा उकसबैत छल। हम दोबारा जी कड़ा कयलहुँ आ अपन सौंसे हिम्मति बटोरिक' एकबैग भोला मियाँक आंगन पैसि गेलहुँ। चारू दिस टॉर्चक इजोत देलियै। कत्तहु कियो नहि छल। हम आगाँ बढ़लहुँ। अपन पाछाँ देखनहि बिना। हम अपन पीठ पर राजारामक उपस्थिति केँ अनुभव करैत छलहुँ।

एहि टोला मे घर पर घर चढ़ल छै। आंगन, दरबज्जा आ कोनटा मे कोनो फरक नहि देखाइत छै। आँगन टपिक' एकटा कोनटा सन जगह केँ पार क' बाहर अयलहुँ त' खूजल सन ओ जगह देखायल जतय पचासेक मौगी-मरद सभ जमा छलै। कातक एकटा घर सँ कोनो मरदक निसाँ मे मातल चिकरब आ बिक्खनि-बिक्खनि गारिक अनवरत बौछार अबैत छल। स्वर सभ सँ लागल जे किछु लोक ओकरा सम्हारबा आ बुझयबाक बेस प्रयास क' रहल अछि।

हम ओतय ठाढ़ समूहपर टॉर्चक इजोत देलियैक। समूह केँ अपन बीच टोल सँ बाहरक कोनो अनठियाक आगमनक आभास भेल छलै साइत, आ ओकरा सभक बीचक फुसफुसायब एकटा स्तब्ध मौन मे बदलि गेल छलै। हम टॉर्चक इजोत किछु एहि तरहेँ ऊपर-नीचां आ अगल-बगल देलियै जाहि सँ लोक केँ हमरा चिन्हि लेबा मे आसानी होइ। अपन एहि उद्देश्य मे हमरा सफलता भेटल छल। एकटा स्त्रीगण फुसफुसायलि—'कक्का छथिन।'

नहुँ-नहुँ शहरक बेजाय चीज सभ ओढ़ैत जाइत हमर मोहल्ला मे ग्रामीण जीवनक कतिपय खूबी सभ अखनो लोकक भीतर सुरक्षित अछि। धनुकटोली, कुजड़टोली, बभनटोली वा चमरटोलीक क्षुद्र घेराबंदी मे नहुँ-नहुँ काछु जकाँ सिमटि रहल लोक सभ आइयो आपसी व्यवहार मे भैया, काका, दादा आदि सम्बन्धेक नाम सँ एक-दोसरा केँ सम्बोधित करैत अछि। अगड़ा-पिछड़ा, हिन्दू-मियाँ, बैकबा-फोड़बा वा छूत-अछूतक विध्वंशक नारा आ तोड़क-शक्ति सभक ताबड़-तोड़ विस्फोटक प्रयासक अछैत ढेर रास लोक सभ अपन-अपन हृदय मे प्रेमक स्तित्व बचाक' रखने अछि—उजड़ि गेल जमीनदारक ओहिठाम बिका गेल हाथीक सिक्कड़ि जकाँ। 'कक्का' सम्बोधनक मीठगर आँच मे हमर सम्पूर्ण तनाव भाप जकाँ उड़ि गेल। हमर हेरायल आत्मविश्वास घुरि आयल।

हम हवा मे अपन प्रश्न उछालि देलियै—'अरे भाइ ! के सभ छह एतय? एतेक राति केँ कोन हंगामा मचयने छह? कियो बतयबो त' कर'।'

एकटा पुरुष आकृति लग आयल—'रंजन बाबू छी?'

'हँ। के, रुदल?' हम पुछलियै—'की बात भेलै हओ?'

'की बताउ कका ! ई जे भोला मियाँ के बेटा छै ने बिकुआ, ई कमीना रोज दारू पीबि क' टर्र भ' जाइ छै आ भला-भला लोक केँ गरियाबैत रहै छै बेहूदा।'

हमरा दारुक गंध लागल। नहि जानि, रुदलक मुँह सँ अबैत छल वा अगल-बगल सँ।

'...काल्हियो साँझ मे पीबि क' बुत्त रहै। अपन देह तक ने सम्हरैत रहै बेहूदा सँ। ओ जनारदन चौधरी छै ने—मोहरिल, ओकर भाय ओहि समय सड़कक कात मे अपन घरक आगाँ मे ठाढ़ रहै। बिकुआ केँ हरलै ने फुरलै, लगलै ओकरा गरियाब'...।'

रुदल एखन विवरण दइए रहल छल कि एकबेर जोर सँ भगदड़ मचलै। आँगन मे गारि बकैत व्यक्ति प्रचंड अन्हड़ जकाँ खसैत-उठैत, लटपटाइत, कात

कतबहि मे ठाढ़ लोक सभ कें ठेलैत-धकियाबैत भोला मियाँक आँगन दिस लपकल–'खून कय देबौ...हरमजादी, रंडी आ भडुआ सभ कें जान सँ मारि देबै... कत्तय गेल भोसरी सभ...।'

हम चिकरलियै–'ऐ'''। रोक एकरा।'

आठ–दस गोटे लपकल आ ओकरा पकड़बाक प्रयास करय लागल। बताह हाथी जकाँ निरंकुश झुमैत ओहि व्यक्ति कें हम चिन्हलहुँ–अलीमुद्दीन छल। त' इएह गारि बकैत छल आँगन मे।

'...छोड़ि दे हमरा, आइ जिन्दा नै छोड़बै हरमजादी रंडिया सभ कें...।'

अलीमुद्दीन चिंघाड़ैत छल आ अपन हाथ-पयर फेकि रहल छल। आठ-दस गोटे सँ सम्हारने नहि सम्हरैत छल ओ। लोक सभक पकड़ैतो-पकड़ैत ओ भोला मियाँक एकटा घरक टाटक किछु बत्ती सभ तोड़ि देने छलै आ किछु बत्ती कें अपन हाथ मे जकड़ि राखने छल।

'अरे, हाथ कटतौ, हाथ। छोड़ि दही बत्ती कें।' कियो चिकरलै।

हम पियक्कड़, खासक' पीबाक नाम पर लखेड़ा ठाढ़ करयबला पियक्कड़ सभ सँ बड्ड घबडाइत छी। पीबिक' लखेड़ा ठाढ़ करैत अलीमुद्दीन कें देखि आब एतय धरि आबि जयबाक अफसोचो भ' रहल छल मुदा आब की भ' सकैत अछि। फँसि गेलहुँ त' फँसि गेलहुँ। आब त' एहि सभ झमेला सँ कोनो सम्मानजनके तरीका सँ निपटय पड़त। कतेक लोक चिन्हि लेने अछि। लटकल मामिलाक बीच मे त' पड़ाइयो नहि सकैत छी। की कहत लोक?

हम मामिला कें शीघ्रता सँ निपटयवाक मादे सोचलहुँ। अपन साहस जुटयलहुँ आ स्वर मे जतेक ओजन द' सकैत छलहुँ, द' क' कहलियै–'रे ! अलीमुद्दीन छें की? बन्न कर ई तमाशा आ जो अपन घर। आ खबरदार जे मारिपीट आ गारिगरौज केलैं तऽ। बहुत भेलौ। जो अपन घर जो...।'

हमर दहाड़ सन फटकार सुनिते आठ-दस गोटेक पकड़ि मे छटपटाइत अलीमुद्दीन अकस्मात जेना जड़ भ' गेल। ओकर गतिहीन होइतहि ओकरा पकड़िक' राखने लोक सभ ओकरा छोड़ि देलकै अलीमुद्दीन पूरा प्रयास क' अपना कें सोझ ठाढ़ केलक आ फेर लड़खड़ाइत हमरा दिस बढ़ल। ओतबा पीलाक बादो ओ हमरा कोना चिन्हि लेने छल, सेहो एहि अन्हार मे। ओकरा मुँह सँ दारुक दुर्गन्धक भभाका छुटैत रहै। ओ लटपटाइत स्वर मे बजबाक प्रयास कयलक–'र...न...ज...न...क....काऽऽ...परनाम।'–ओ अपन दुनू हाथ जोड़लक–'ह...म...र गप सुनि लिअऽऽऽ।'

हम हड़बड़ा गेलहुँ, जल्दी सँ बजलहुँ–'काल्हि सुनबौ, काल्हि। एखन जाकऽ सुति रह। भोर मे सुनबौ तोहर गप।'

नइ ऽऽ कक्का ऽऽऽ...अखनीऽऽऽ सुऽऽनि लिअऽऽ।'

'नहि, नहि, काल्हि सुनबौ। सभटा गप सुनबौ काल्हि। एखन जो।'–हम आब जल्दी सँ जल्दी एहि दरुआहा माहौल सँ भागि जाइ चाहैत छलहुँ।

'सुनि ने लियौ, काकाजी, की कह' चाहै छें।' –कोनो स्त्रीगणक अनुरोध भरल स्वर कतहु लगे सँ आयल।

स्त्रीगण हमर संवेदनाक परिधिक केन्द्र मे रहैत छथि। हम हुनक बात कटबाक साहस कहियो काल, सेहो विशेषतया पत्नीएक मामिला मे क' पबैत छी। हम दुविधा मे फंसि गेलहुँ।

'ई सार बिकुआ मादर...'–अलीमुद्दीन बाजय लागल छल।

'ऐ ! खबरदार जे हमरा सोझाँ गारि बकंलें त'।'–हम फटकारलहुँ।

लागल जेना चमत्कार भ' गेल हो। अकस्मात अलीमुद्दीन पूर्णरूपेण चौकस आ भद्र नजरि आबय लागल। ओकर देह एखनो थोड़-बहुत हिलैत छल मुदा ओ पूर्ण चेतन व्यक्ति जकाँ तनिक' सोझ ठाढ़ भ' गेल। एना, जेना ओ शराब छूने तक नहि हो।

'कक्का ! जनारदन चौधरी हमर यार छियै। ओकरा लेल हम जान द' सकइ छी आ ककरो जान लइयो सकै छी। छीयै त' हम मुसलमान जातिक कुजड़ा मगर बहुत रास हिन्दू-रजपूत, बाभन, कलबार सभ सँ हमरा यारी-दोस्ती छै। आ काल्हि...काल्हि ई बिकुआ मादर...।' –गारि ओकर मुँह पर अबैत-अबैत रुकि गेलै। ओ अपन जीह कूचि लेलक।

'...काल्हि ई बिकुआ हमर यारक भाइ कें....हमर भाइ कें गारि पढ़लकै आ सेहो बिना कोनो कारणें। ओकर बेहुदपनीक शिकायत ल' क' जनारदनक भाइ हमर घर अयलै। हम घर पर रहियै नै। ओ हमर घर आबि क' हमरा सोर पारलक...।'

ओकर देह आ स्वर फेर लटपटाब' लगलै।

'...ओ हम्मर घर आबि क' हमरा भैयाऽऽऽ भैयाऽऽऽ कहिक' सोर परैत रहय कि तखने...तखने बिकुआ आबिक' ओकरा मारय लागलै आ ओकर घरक मौगी सभ ओकरा गारि पढ़' लागलै। ओ सार मादर...की बुझै छै अपना कें?

हम एहि नसेड़ी सभक बीच आब घुटन अनुभव करय लागल छलहुँ। दम फड़फड़ाब' लागल छल आ हम पड़ा जाइ चाहय छलहुँ एकरा सभक

बीच सँ–उड़िये क' सही।

'ठीक छै ! ठीक छै ! काल्हि ओहि चोट्टा कें बजाक' डाँटबै। काल्हि...।' हम ओकर टार' चाहलहुँ। दारुक भभक्का सँ हमर माथ घूम' लागल छल।

'आ जानय छियै कक्का? कत्ते हरामी छै ई बिकुआ? एक त' ओहि निर्दोष के मारलकै आ ओकरा मारलाक बाद टोल मे हिन्दू-मुसलमानक शगूफा सेहो छोड़ैत रहै।'

हमर देह तनि गेल। एहन मामिला सभ मे मामूली सन बात सँ तिलक ताड़ भ' जाइ छै। हम ओहि क्षण कें कोस' लगलहुँ जखन हम एतय अयबाक निर्णय कयने छलहुँ।

अलीमुद्दीन आगाँ बढ़ि हमर बाँहि ध' लेलक–'कक्का। ओहि हरमजादाक खूने गरम भेल रहै त' हमरा मारितय, हम सहि लैतौं। खुदा कसम, हम सहि लैतौं मगर अप्पन टोल मे हमर यारक भाइ कें... हम्मर भाइ कें...आ सभ सँ बढ़ि एक गोट हिन्दू कें ओ मारलक। बाप-दादाक देल मोहब्बतक तालीम कें माटि मे मिला देलक ई हरमजादा। कोन इज्जति रहि गेलै एहि टोलक आ हमरा सभक...।'

अलीमुद्दीन हबोडकार भ' कानय लागल।

आ आश्चर्य !

दारुक गंध सँ सानल जाहि माहौल मे हमर प्राण फड़फड़ा रहल छल आ जतय सँ हम पड़ा जाइ चाहैत ठलहुँ–कत' छल ओ दमघोंटू माहौल?

कत्तहु नहि !

आकि तखने, चारू दिस अपन डराओन छँह पसारने अन्हारक छाती कें चीरैत बिजलीक जगमग इजोत दूर-दूर धरि पसरि गेल।

ढाँचा-1992

प्रिय मित्र

हमरा लिखल अहाँक पत्र।

अहाँ सभ एकटा प्रस्तावित कथा-संग्रह मे हमरो एक गोट कथा कें सम्मिलित कर' चाहैत छी, आ से चर्चा अहाँक पत्र मे अछि।

भाइ, कथा संरचनाक ज्यामिति आ कि ओकर परिभाषा हमरा नहि बूझल अछि। हमरा जे फुरैत अछि से हम कागत पर घसि दैत छी, खाहे ओकरा सँ व्याकरण-निर्धारित नियम भंगे किएक ने होइत हो। ओहिनो आइ धरि जे किछु हमरा सँ लिखा गेल अछि से वातावरणेक दबाव मे।

आ, आइ-काल्हिक वातावरणक मादे की कही! हमरा तँ लगैत अछि जे हम सभ जाहि हवा मे साँस ल' रहल छी, वएह बेमार भ' गेल अछि। तखन हमरा सभक कोन मोजर?

की अहूँ कें ई नहि लगैत अछि जे बेकती सँ ल' क' समाज आ देश धरि एहि बेमार वातावरणक शिकार भ' गेल अछि?

अहाँ हँसब जे हम कथाक बजाय ई की शुरू क' देलहुँ। त' हम कहब जे बेमार लोक बेमारिएक चर्चा करत की ने?

हम अखन डाक्टर ओहिठाम सँ आयल छी। खून, पैखाना, पेशाब आदि जाँच हेतु द' आयल छी, जकर रिपोर्ट सँ हमर बेमारीक कारण तकबाक प्रयास कयल जायत। बाद मे डाक्टर सभ अपन-अपन मुँह पर एक-एकटा प्रश्नवाचक चिह्न ट[illegible] एक-दोसराक मुँह तकताह।

भाइ ! अहाँ कें साइत हमर अनटेटल गपक थाह नहि लागि रहल अछि। बेस, तँ गप शुरू करैत छी-डा. मुखर्जी सँ।

हमर एक गोट मित्र डा. मुखर्जी हँसिक' कहैत छथि–'मनुक्खक देह

ऊपर बलाक बनाओल एहन ढाँचा थिक जे बेमारीक घर थिक। रंग-बिरंगक बेमारी सभ सँ फिरीशान आ तबाह अछि लोक। आ बंधु, कने गौर कयल जाय। पहिने 'रिया-रिया' बला बेमारी सभ होइत छल-मलेरिया, फलेरिया, डायरिया, गोनौरिया आदि-आदि आ आब 'टिस-टिस' बला होइत अछि-ब्रोंकाइटिस, मैनंगजाइटिस, इन्सेफ्लाइटिस, फ्रेंगजाइटिस आदि। फेर बीच मे 'सिस-सिस'बला-ट्यूबरकुलोसिस, लिवरसिरोसिस आदि।'

हम मित्रक, मजाके मे सही, कहल एहि बात सँ सहमत छी। नाम सभ मे जे हो मुदा सिस-टिस-रिया बला सगर बेमारी सभ आइ-काल्हि एके संग पसरल अछि। आब तँ एहनो बेमारी सभ प्रकाश मे आयल अछि जकर तुकान्त होएब आवश्यक नहि। जेना एड्स, कैंसर आ ओ बेमारी जकर नाम तँ हमरा मोन नहि मुदा ओ अमिताभ बच्चन कें छनि वा भेल रहनि। फेर एहन किछु बेमारी सेहो अछि जकर अस्तित्व तँ छैक मुदा एखन चिकित्सा शास्त्रक परिधि सँ बाहर अछि। आ फेर, बेमारी की मात्र मनुक्खे टा कें होइत छैक?

हमहुँ बेमार पड़ैत छी आ खूब पड़ैत छी। हालहि मे जॉन्डिस भेल छल जाहि मे हमर घर सुझाव देब'बला सभक अखाड़ा आ हमर कपार सुझाव सभक (इलाजक सम्बन्ध मे) सचिवालय भ' गेल छल। कएक महीना धरि पड़ल रहलहुँ जीह कें रास लगाक'। सर्दी-बोखार सन सामान्य बेमारी तँ होइते रहैत अछि आ अपन मरम्मति करबाक' घुरि जाइत अछि। अकच्छ तँ हम रहैत छी-अपन विचित्र बेमारी सँ। तीन टा चीज तँ बेस काल सँ अकच्छ कयने अछि-रौद, गरदा आ धुआँ। तीनुक संसर्ग मे किछु काल रहलहुँ नहि कि छींकक पराभव शुरू। नाक सँ पानि चूब' लगैत अछि आ आँखि लाल टेस। डाक्टर सभक कहब छनि जे एलर्जी अछि।

एखन तीन-चारि बर्ख सँ एकटा आओर विचित्र बेमारी सँ ग्रसित छी। तेज आ ठार हवा हो वा ठारे अपन चरम पर हो बस हमर फिरिशानी शुरू। पहिने कंपकपी, फेर सौंसे देह मे तेज हउहटि आ फेर चमड़ा पर नहुँ-नहुँ चकत्ता उभर' लगैत अछि। चकताक रंग लाल होइत जाइत अछि आ फेर सभ चकता आपस मे मिलिक' चमड़ा पर सूजनक रूप ल' लैत अछि। हमर मित्र डा. दास एकरो एलर्जी कहैत छथि।

डा. दास एम. बी. बी. एस. छथि मुदा एलोपैथिकक अलावे होमियोपैथ आ नेचुरोपैथ पर सेहो समान अधिकार रखैत छथि। ओ आवश्यकतानुसार फराक-फराक रोगी सभ पर फराक-फराक पैथक दवाइक प्रयोग करैत छथि।

हुनका हुनक प्रयोग लेल खासक' हम एकटा नीक पात्र भेट गेल छियनि। ओ हमरा कउखन कोनो ने कोनो पैथक दवाइ दैत रहैत छथि। शुरू मे तँ किछु आराम भेटल अछि मुदा फेर बेमारी जहिनाक तहिना।

आब ओही दिनक गप लिअ'। सहरसा गेल छलहुँ कोनो काज सँ। मामूली समय लेब' बला काज छल, तें दुपहर धरि घुरि अयबाक गारंटी छल। सहरसा पहुँचिक' अपन ओहि काज सँ निवृत भेलहुँ तँ स्कूटर मे किछु गड़बड़ सन बुझना गेल। गैरेज पहुँचलाक बाद हम मिस्तिरी कें स्कूटर देखौलियैक आ सुपौल जल्दी घुरबाक गप कहलियैक। मिस्तिरी कहलक जे आध घंटा मे ओ हमरा पलखति द' देत। किछुए मिनट मे ओ स्कूटरक पाट-पुरजा खोलिक' छिड़िआय त' देलक मुदा फेर सँ सेट करबा मे ओ लगेलक पूरा चारि घंटा। घुरबा काल साँझक अन्हार पसर' लागल छल। जाड़क मौसम छल आ देह पर गरम कपड़ाक अभाव। स्कूटर पर बैसल हमर देह सँ ठार हवा बिन कहने-सुनने आबिक' टकराइत छल। चालीस किलोमीटर पैघ रास्ता तय करबाक छल आ देह मे तेज कंपकपीक बाद हउहटि पहिले किलोमीटर सँ शुरू भ' गेल रहय। हउहटि क्रमशः बढ़िते गेल छल आ स्कूटर चलबैत हम मात्र अनुभव करैत रही जे आब चकता उभरि रहल अछि, आब ओकर रंग लाल भ' गेल होयत आ आब ओ सभ मिलक' सूजनक दिशा मे बढ़ि रहल होयत। खैर! राम-राम करैत सुपौल पहुँलहुँ आ स्कूटर कें सीधे डा. दासक क्लिनिक मे ल' जाक' राकलहुँ। कोनो तरहें स्कूटर कें ठाढ़ कयल आ हुनक चैम्बर मे आबिक' रोगीबला ओछाओन पर धड़ाम सँ खसलहुँ। डाक्टर हड़बड़ाक' हमरा देखलनि।

आपादमस्तक हमर सौंसे देह सूजि गेल छल। डाक्टर होमियोपैथक कोनो दवाइक किछु बुन्न हमरा मुँह मे टपकौलनि। दवाइ त्वरित असरि कयलक मुदा सामान्य होब' मे प्रायः घंटा भरि लागि गेल।

एक बेर सासुर सँ घुरैत छलहुँ। छः बजे भोर मे ट्रेन छल, जकरा पकड़' लेल सात किलोमीटर पैघ रास्ता तय करबाक छल, ओहो बैलगाड़ी वा टमटम सँ, किएक तँ ओहि इलाका मे आवागमनक आर कोनो साधन उपलब्ध नहि छल। जाड़क मौसम। तीन बजे रातिए मे टमटम बला हमरा ल' जयबाक लेल आबि गेल। सात किलोमीटरक रास्ता ओहि दिन दू कारण सँ सात सय किलोमीटर पैघ लगैत छल। पहिल त पत्नी सँ बिछोह, दोसर हाड़ कंपकंपाबय बला ठार आ ताहि पर सँ सिहकैत हवा। ट्रेन पकड़बा धरि हउहटि चकताक रूप मे

पसरैत भयंकर सूजनक रूप ल' चुकल छल। अपन हल्लुक सन ब्रीफकेसो नहि उठा पओने छलहुँ। टमटमेबला ट्रेनक कम्पार्टमेन्ट धरि पहुँचौने छल ब्रीफकेस। ट्रेनक डिब्बा मे ने गर्माहटि उपलब्ध होयबाक सवाल छल आ ने कोनो दवाइएक। परिणामं ई जे सूजन बढ़िते चलि गेल छल। बड्ड खराब हालत मे घर पहुँचल रही। दोसर दिन इलाज शुरू भेल मुदा ठीक-ठाक होयबाक लेल एक सप्ताहक प्रतीक्षा कर' पड़ल छल।

एतेक रास कटु-अनुभवक बाद हम यथासम्भव रौद-गरदा-धुआँ सँ बचब शुरू क' देने रही आ ठारक विरूद्ध अपन सुरक्षा-व्यवस्था कड़ा क' देने छलहुँ। देह पर पहिने एकटा गंजी, फेर डबल-ब्रेस्ट बला सौंसे बाँहिक गंजी, फेर सौंसे बाँहिक स्वेटर, फेर शर्ट, फेर हाफ स्वेटर आ तखन बन्द गलाक प्रिंस-कोट। डांड़क नीचाँ पहिने एकटा ट्राउजर, फेर खादी भंडारक ऊनी कपड़ाक फूल पैंट। हाथक लेल ऊनी दस्ताना। तरबाक लेल ऊनी मौजा आ जूता एहन बनाबटिक, जाहि मे हवा जयबाक कोनो गुंजाइश नहि रहय। एतबेक टा नहि, अपन फैशनेबुल केशक मोह सेहो हम त्यागि देल आ मूड़ी कें मंकी-कैप सँ सुरक्षित राख' लगलहुँ। एकर बादो अनहोनी हेबाक छल, भ' गेल।

साँझ मे गोष्ठी जमैत छल-डा. दास ओतय। सभ मित्रगण प्रायः नियमित रूपें ओतय पहुँचि जाइत छलाह-प्रो. राजेन्द्र, डा. मुखर्जी आओर के.के. इंस्टीट्यूट ऑफ मैडोलॉजीक प्रिंसिपल झा साहब आदि। कखनहुँ किछु आरो लोक सभ।

ओहि दिन सँझुका गोष्ठी मे सभ गोटे जुटि गेल छलाह। ओहि दिन चाहक अलावे एक गोट नम्हर थारी मे केकक बहुत रास टुकड़ा आ नमकीन-चटपटे बिस्कुट सेहो छल। हँसी-ठट्ठाक दौरान तय भ' गेल जे अगिला साँझ हम सभ प्रो. राजेन्द्रक ओहिठाम जुटब, जतय बड़का भोजक व्यवस्था होयत। बड़का भोज माने मासु आ रोटी। फेर ढेर रास कविता, पुरमजाक लतीफा आ हमरा सभक समवेत ठहक्का सभक संगे ओहि दिनक गोष्ठी समाप्त क' देल गेल।

दोसर साँझ हम सभ प्रो. राजेन्द्रक ओतय जुटलहुँ। हम अपन कपड़ा सभक जिरह-बख्तर सँ लैस भ' क' ओतय पहुँच' बला पहिल बेकती छलहुँ। फेर पहुँचलाह डा. मुखर्जी।

हम कहलियैक-'आउ बंगाली मोशाय। आइ कतेक रोगी कें निबटयलहुँ?'

डा. मुखर्जी अपन शाश्वत आ शानदार ठहक्का लगौलनि-'बन्धु, हम

तँ पाँच टाका फीस लेब' बला डाक्टर छी आ रोगी सेहो निबटयलहुँ कुल पाँचे-टा। बड़ जाड़ छैक, लोक सभ बेमारो नहि पड़ैत अछि।'

प्रो. राजेन्द्र बजलाह-'भाइ। एहन करू-जाहि दिन रोगी नहि फंसय, हमरे सँ पाँच-पाँच ल' क' हमर किछु-किछु इलाज क' देल करू मुदा दवाइ देब' पड़त मुफ्त-फिजीशियन सेम्पलबला।'

'ओकरा लेल तँ बन्धु, डाक्टर दास सँ भेंट करय पड़त। हमरा सन गरीब डाक्टर कें तँ मेडिकल रिप्रेजेन्टेटिव सभ घासो नहि दैत छथि।'-डा. मुखर्जी हँसैत बजलाह।

तखने पहुँचलाह डा. दास आओर प्रिंसिपल झा साहब-एकहि संगे, स्कूटर सँ।

प्रो. राजेन्द्र दुनू नवागन्तुक कें ड्राइंग रूम दिस अनैत कहलनि-'भाइ मुखर्जी आबि गेलाह अहाँ सँ पंचगुन्ना फीस लेब' बला डाक्टर सेहो। देखा चाही-आइ भोजन अहाँ सँ कतेक गुना बेसी खाइत छथि!'

'फीस तँ रोगी सभ सँ लै छी, तें कम लै छी। भोजन तँ करब प्रोफेसरक। बुझि लिअ' जे भोजनक कम्पन्शेसन हम खयबा मे करबा भौजी कें होशियार क' दियनु।'-डा. मुखर्जी अपन पेट कें हँसोथैत बजलाह।

अखन धरि संत-मुद्रा मे चुपचाप बैसल प्रिंसिपल झा साहब पंचसन मुद्रा बनौलनि, बजलाह-'सज्जनवृन्द! हम अहाँ सभ कें बताबी जे कन्टेस्ट तँ दुनू डाक्टरक अछि। एकर सजाय गरीब प्रोफेसरक हाँड़ी आ चुल्हि कें देब- हमरा बुझने तँ सरासर अन्याय थिक। ई तँ वएह गप भेल जे खेत खाय गदहा आ मारि खाय जोलहा।'

डा. दास तपाक सँ बजलाह-'प्रिंसिपल साहब! अहाँक वक्तव्य मे दोष अछि। प्रोफेसर सन खाँटी बाभन कें अहाँ जोलहा बना देलियनि। रहल गप गदहाक- तँ ओ बेचारा हमरा सभ जकाँ कहाँ भ' पबैत अछि !'

डा. दास समेत हमरा सभक समवेत ठहक्का गूंजि उठल।

फेर गप्पबाजीक अनंत सिलसिला चलि निकलल। बीच मे उठिक' प्रो. राजेन्द्र टी.वी. ऑन क' देने रहथि। की प्रोग्राम अबैत छल-ई देखबाक-सुनबाक पलखति हमरा सभ मे सँ ककरो नहि छल। हम सभ अपन गप मे मशगुल छलहुँ। ठहक्काक बजार गरम छल आ ड्राइंग रूमक वातावरण मे पिआरे-पिआर पसरल छल।

'...अयोध्या मे बाबरी मस्जिद का ढाँचा ध्वस्त कर दिया गया है...।' तखने टी.वी. सँ निकलिक' अबैत ई पंक्ति एक भयानक विस्फोट जकाँ हमरा सभक अन्तरतम धरि गूँजि उठल।

सभक आँखि अनायासहि टी.वी. दिस मुड़ल। समाचार वाचिका निस्पृह भाव आओर संवेदनहीन चेहरा सँ समाचार कहैत छलि-...हजारों की भीड़ ने...।'

भयंकर सिहरन! खूब तेज हउहटि!

'...प्रधानमंत्री राष्ट्र को संबोधित करेंगे...।'

टी.वी. सँ निकलिक' अबैत शब्द हमर कान धरि मात्र भनभनोहटिक रूप मे पहुँचि रहल छल। हम अनुभव कयलहुँ जे हमर देहक सौंसे भाग मे चकता उभरब शुरू भ' गेल अछि। चकताक लहरि सँ हम तड़पि उठलहुँ।

'...हमारे साथ, राष्ट्रीय एकता परिषद के साथ, राष्ट्र के साथ विश्वासघात हुआ है...।' टी.वी. दिस नजरि गेल। प्रधानमंत्री बजैत छलाह।

हमर देह पर सूजन पसर' लागल आ हम खूब घबड़ा उठलहुँ।

टी.वी. सँ प्रधानमंत्रीक मुँह गायब भ' चुकल छल।

हमर कान सँ प्रो. राजेन्द्रक हताश आ निराश स्वर टकरायल-'अगिला माह सँ घर बनयबाक शुरू कर' चाहैत छलहुँ मुदा एहन अनुभव भ' रहल अछि जेना ओ घर बनबा सँ पहिनहि भरभराक' ढहि गेल हो।'

हमरा मुँह सँ चित्कार बहरायल-'डाक्टर!!!'

दुनू डाक्टर समेत सभ मित्र हमरा दिस लपकलाह। हमर हालत देखिक' हुनका सभक मुँह पहिने सँ बेसी उज्जर भ' गेल रहनि।

साँच मानू, डाक्टर सभ सेहो ओहि दिन भौंचक छल। हुनका सभ केँ बुझबा मे किछु नहि अबैत रहनि। आ ने हुनकर सभक कोनो पैथ काज आबि रहल छल।

हमर देहक सुरक्षा-कवचक रूप मे कपड़ा सभक जिरह-बख्तर मौजूद छल। कोठलीक सभ खिड़की आ केबाड़ बन्न छल। रूम-हीटर सेहो चलि रहल छल। हमर देहक कँपकँपी, हउहटि, चकता आ सूजनक प्रत्यक्षत: कोनो कारण नहि छल मुदा तखनो हमर देह ओकरा भोगने छल।

हम जनैत छी, जे कथाक बजाय हमर एहि अनर्गल प्रलाप केँ सुनिक' अहाँ अविश्वास सँ मुँह बिचका सकैत छी, अहाँ केँ तामस उठि सकैत अछि आ साइत हँसी सेहो।

मुदा थम्हु, ई हँसबाक गप तँ नहिएँ टा अछि। हमर मित्रगण सेहो नहि

हँसल छलाह ओहि दिन।

क्षमा करब! एहि बेर कथा नहि पठा सकलहुँ। अगिला बेर प्रयास करब-जँ वातावरण संग देत।

ताबत एतबे।
अहाँक
अरविन्द ठाकुर
भारतक एकटा निवासी

मूस

ओ अपना ओछाओन पर आबिक' बैसि गेल। सुतबाक अलाबे पढ़ब-लिखब आगन्तुक सँ भेंट-घाँट ओ यथासम्भव ओछाओने पर करैत अछि।

ओ देबाल घड़ी दिस तकलक। दिनुका एगारह बाजल छलैक। आब जाक' ओ नित्यकर्म सँ निवृत भेल छल।

घड़ी पर सँ ओ अपन ध्यान हटा लेलक।

पत्नी कोठली मे अयलै आ ओकरा सँ पुछलकैक जे ओ जलखै नहि क' भोजने क' लेत की? ओ सहमति मे मूड़ी हिलौलक। पत्नी कनेकाल प्रतीक्षा कर' कहि, नाक सुड़कैत, कोठली सँ बहरा गेलैक।

ओ सोच' लागल। की भोजनक बाद बजार चलि जाय। आइ कोनो मिटिंग नहि छलै। प्रत्येक साँझ होब'बला साहित्यिक बैसारक संगी सभ सेहो अपन-अपन काज मे व्यस्त हेताह। बजारक आन कोनो काजो नहि छलै। स्कूटर मे अनेरे पेट्रोल जरत।

ओकरा पेट्रोलक दाम फेर बढ़ि जयबाक खेयाल अयलैक। के छल एकरा लेल दोषी–बुश कि सद्दाम। स्कूटर ओ जमीन बेचिक' किनने छल–दू बरख पहिने। आ' आब दू बरखक भीतरे पेट्रोलक दाम दुगूनो सँ बेसी भ' गेलैक। की करय! स्कूटर बेचि लेअय! नहि! आब तँ आदति बिगड़ि गेलैक अछि। पयरे कतहु आयब-जायब अबूह लगैत छैक। स्कूटर खराब भ' जाय तँ ओ आवश्यको काज छोड़ि दैत अछि।

आवश्यक काज। हँ! कोनो ने कोनो काज शुरू करब बड्ड जरूरी छैक आमदनीक लेल। नहि तँ घर-खरची चलब मोसकिल भ' जयतैक।

पत्नी शिकाइत करैत छैक। अड़ोस-पड़ोस मे सभ केओ गैसक चूल्हा कीनि लेने छैक। माटिक चुल्हि पर जारनि सँ भोजन पकायब आब 'आउट

डेटेड' लगैत छैक–फिरिशानी फराके। गैस चूल्हा लेबहि पड़तैक–जल्दीए। ओ सोचलक।

ओकर नजरि फर्श दिस गेलैक।

मूस! दू टा मूस एक-दोसराक आगाँ-पाछाँ दौड़ि रहल छल। ओकरा तामस उठलैक। ओ झुकिक' एकटा चप्पल दहिना हाथ मे लेलक। ताबत मूस भागि गेल रहय।

आब जँ मूस अभरलैक तँ ओ चप्पल खींचि क' मारबेटा करत। आक्रमणक मुद्रा मे, चप्पल हाथ मे लेनहि ओ फेर सोचबाक क्रम बनबय लागल। आँखि फर्श दिस मुदा दृष्टि शुन्य मे केन्द्रित। मूस फेर दौड़ल मुदा ओकरा पर ओकर दृष्टि बाद मे गेलैक। जाधरि ओ निशाना साधय ता मूस भागि गेल छलैक। ओ स्वयं कें लज्जित अनुभव कयलक।

ओकर नजरि खिड़कीक ओहि पार फुलबारी मे गेलैक। ओकर माझिल बेटा नारिकेरक गाछ तर ठाढ़ अपन कोनो मित्र संग बात करैत रहय। की सोचितैक ओ सभ एकरा हाथ मे चप्पल उठौने देखिक'। ओ सकपकायल आ चप्पल कें नीचा मे फेकि देलक।

एकटा मूस सोझाँ सँ फेर दौड़ैत बिला गेलैक। ओ सोचलक- दौड़ैत जाह। आइ सांझ मे मूस मारबाक दबाइ बजार सँ जरूर आनत।

वाह ! की अंदाज आ तरीका छैक मूस मारबाक दवाइ बेच'बला सभक। मूस मारैक दबाइ, उड़ीस मारैक दबाइ, ढील मारैक दबाइ, अन्न रक्षक पाउडर आ पेटक कृमि मारैक दवाइ-सभ एक संग। सेहो माइक आ स्पीकर पर प्रचार करैत रिक्शा पर घुमि-घुमिक'। आ हँ दाद-दिनाय, खर्रा, खुजली, कलकैलोक दवाइ।

बड्ड इमानदार ड्रग इन्सपेक्टर छलाह–गुप्ता जी। कोशी मे डूबिक' मरि गेलाह बेचारे। की मजाल जे हुनका रहैत केओ दोकनदार गलत दवाइ बेचि लेत। हुनक दहसतिक ई हाल छल जे हुनक अयबाक खबरि सुनियेक' मूस मारै बला रिक्शा पर्यन्त गदहाक सींग जकाँ अलोपित भ' जाइत रहय मुदा ई नबका इन्सपेक्टर तँ सार कुकूर थिक।

ओकर ध्यान अपन दवाइक दोकान दिस गेलैक। नबका ड्रग इंस्पेक्टर एहि दुर्गा पूजा मे पाँच सय टाका सलामी ओकरा सँ ल' गेलैक। आ दोकान! लगैत नहि छैक जे आब चलतैक। ओकर अनुज दोकान पर बैसैत छैक। दस बरख मे हजारोक नोकसान क' चुकल अछि। ओ एम्हर-ओम्हर सँ जोगारि

आ जमीन बेचिक' जखन-तखन दस-बीस हजार टाकाक मदति करैत रहैत छैक जे छोटका भाइ दोकान कोनो तरहें चलबैत रहय। मुदा छओ मास-साल भरिक बाद पूँजी साफ भ' जाइत छैक आ स्टॉकिस्टक बकियौता माथ पर रहिये जाइत छैक। लोक मजाको करैत रहैत छैक–भूमिहार पेंच भिड़ाओत कि दोकान करत! नीक हेतैक जे दोकान बन्न क' देल जाय। कोनो आन व्यक्ति कें दोकानक जगह द' देला सँ हजार-पाँच सय किराया तँ कम सँ कम भेटत मुदा तकरा बाद! की करतै ओकर छोट भाइ! बैसल बनिया की करय–एहि कोठीक धान ओहि कोठी। ऊँहूँ। फिट नहि भेलैक। तँ फेर?

नीक हेतैक जे किछु जमीन बेचिक' पैघ पूँजी सँ ओ कोनो पैघ काज करय। सिनेमा हॉल! शॉपिंग कम्पलेक्स! रेसिडेन्सीयल होटल! दवाइक होलसेल! प्रिंटिंग प्रेस! नःा पहिने तँ बैंकक पुरना लोन चुकायब जरूरी छैक। पितेक समयक लोन थिकैक। दू-दू टा बैंक सँ लेल गेल लोन समय सँ भुगतान नहि भ' सकलैक। मूलधन-ब्याज लगाक' पँचगुन्ना भ' गेलैक त' बैंक बला आजिज भ' क' सर्टिफिकेट क' देलकैक। छोट-मोट रकम जमाक' आ नाजिर-सिपाही कें दस्तूरी थमाक' मामिला कें कहिया धरि खींचल जाय! घरक बिजली बिल सेहो पछिला पाँच साल सँ जमा नहि भ' सकल छैक। ओह! ओ तँ फाटि जायत।

विचारक हवा दोसर दिस घूमल। ओकर जेठका सार नागपुर मे पोस्टेड छैक, एकाउन्टेन्ट। शानदार नोकरी आ खूब सेहन्तगर कनियाँ। ओकरा बड्ड नीक लगैत छैक सरहोजि। किछु दिन पहिने ओ सरहोजि कें पत्र मे प्रेम रस मे डूमल-मातल एकटा कविता लिखि पठौने रहय। ओकरा ओ 'हमर प्रिय सुन्दरी' कहैत अछि। किछु दिन नागपुर जाक' मौज करैत तँ...वाह! की शानदार बात होइतैक मुदा अयबा-जयबा मे कम सँ कम तीन-चारि हजार टाका खर्च होयबे करत। कत' सँ आओत? पाइ! पाइ! आफत अछि।

कोनो जादूए रहितैक ओकरा हाथ मे! 'गिली-गिली-फू' कहैत आ कोठली मे हरियर-हरियर नोट पसरि जाइत। अथवा अलादीनक चिरागक जीन जकाँ किछु होइतैक ओकरा कब्जा मे। जीन, नागपुर पहुँचाउ हमरा। जीन, हमरा प्रिय सुन्दरीक लेल नीक-नीक साड़ीक ढेरी लगा दिअ'। जीन, बैंकक लोन चुकता क' दिअ'। जीन, किराना बला आ बिजलीक बकिऔता भरि दिअ'। जीन, बड़का बेटाक आँखि....। हँ, आँखि! नेने सँ टेढ़ देखैत छैक ओकर जेठका संतान।

अजीब लोक छैक ओहो–ओ अपने बारे मे कहैत अछि। आठ दिन राजधानी मे रहय एहि बेर। जेठका संतान सेहो संगे छलैक। मौका रहै आ पलखति सेहो। मुदा कोनो नेत्र-विशेषज्ञ सँ ओकरा देखबा नहि सकल।

मूस फेर दौड़लैक। एहिबेर एकटाक पाछाँ तीनटा। ओकर इच्छा भेलैक जे ओ चप्पल उठाक' फेर हाथ मे ल' लैक आ आक्रमण लेल तैयार भ' जाय। मुदा ओकरा एहि विचार कें तत्काल स्थगित करय पड़लैक। पत्नी कोठली मे आबि गेल रहै आ ओछाओने लग एकटा टेबुल लगाक' ओहि पर भोजनक थारी राखि देने छलैक।

ओ थारी दिस देखलक। गरम-गरम भात सँ भाफ छूटि रहल छलैक आ कटोरी मे कोनो झोरायल तरकारी रहय।

ओ पत्नी दिस तकलक। ओ मुस्किअयलीह–'ओलक तरकारी।' पत्नी जनैत छल जे ओकरा ओलक तरकारी बड्ड नीक लगैत छैक।

ओ घुसकिक' ओछाओनक कात मे आयल आ कनेक पानि सँ हाथ धोलक। ओ भात पर झोर ढारि देलक आ मिला-मिलाक' खाय लागल। तरकारी मे नेबोक रस देल गेल छलैक। जीह मे पानि भरि-भरि जाइत अछि। वाह! मजा आबि गेल। परसन–हँ, कनेटा। ओ भात आ झोर आरो लेलक।

खाइतो काल सोझाँ मे फर्श पर मूस दौड़ि रहल छलैक मुदा आश्चर्य। ओकरा एखन एको रत्ती तामस नहि उठलैक। भोजनक बाद ओ थारीए मे हाथ धो लेलक। भरि छाक पानि पीबि ओ तृप्तिक ढेकार लेलक। फेर पाछाँ घुसकि ओछान पर आराम सँ बैसि रहल। ओलक कबकबी जीह पर दौड़ि रहल छलैक। ओ मुस्कायल।

ओ फेर सोचब शुरू कयलक। आब ई शहर अनुमण्डल सँ जिला मुख्यालय भ' गेलैक। जमीनक दाम दसगुन्ना बढ़ि गेल छैक आ लोक सभ जमीन किनबाक लेल अपस्याँत अछि। ओ किछु जमीन बेचि लेत आ सभटा कर्जा-बकियौता चुका देत।

ओकरा रग-रग मे निश्चिन्तता दौड़' लगलैक। दौड़ैत मूस सभ कें ओ झलफलाइत दृष्टियें देखलक। ओकर पिपनी आब निन्न सँ बोझिल होम' लगलैक। ओ ओछाओन पर पसरि गेल। माथक नीचां राखल गेरूआक ऊँचाइ किछु कम लगलैक तँ दोसरो गेरूआ पहिल गेरूआ पर ध' देलक आ ओहि पर माथ राखि आँखि बन्न क' लेलक।

ओकरा लगैत रहैक जे ओ जल्दी-ए सुति रहत मुदा ओकर बन्न भेल

आँखि मे निन्नक बजाय पारदर्शी बुनबुना हेलय लगलैक। बुनबुनाक आकृति छोट सँ पैघ होइत गेलैक। फेर एकटा बुनबुना मे एकटा मूस दौड़ैत नजरि अयलैक। दृश्य तीव्र गति सँ बदलैत गेलै। फराक-फराक बुनबुना मे मूस विभिन्न रूप आ आकृति मे देखाय देलकैक। कागत, पोथी आ कपड़ा कुतरैत मूस...एक दोसरा सँ लड़ैत आ प्रेम करैत मूस....पैघ-छोट सोहारी पर नचैत मूस....पोथी पढ़ैत आ रम्मी खेलाइत मूस...तिनकोनमा टोपी पहिरि भाषण करैत मूस...।

ओ कछमछाइत करौट फेरलक।

फेर उड़ैत बड़का टा बुनबुना मे ओकरा एकटा गाम नजरि अयलैक। एम्हर-ओम्हर छिड़िआयल, लहास सभ सँ पाटल गाम–जकरा पर अनेकानेक गिद्ध मड़राइत रहैक। केओ कहैत छलैक–महामारी पसरि गेल रहय गाम मे--प्लेग। मूसक कारणेँ।

ओकर रोइयाँ भुलकि गेलैक। फेर ओ अपन देह पर एकटा सरसराहटिक अनुभव कयलक आ ओकरा साप मोन पड़लैक। साप बिहरि मे रहैत जरूर अछि मुदा बिहरि ओ स्वयं नहि बनबैत अछि। अधिक काल ई काज मूसेक कपार पर रहैत छैक। वाह! केहन अद्‌भुत बात छैक। बिहरि बनाब' मूस, रहय ओहि मे साप।

ओ एकटा पारदर्शी बुनबुना मे एकटा मूस केँ बड्ड जतन सँ बिहरि बनबैत देखलक। एकटा कर्मठ आ इमानदार मेहनतिकश जकाँ ओ मूस अपना माथ पर उभरि आयल घाम केँ बेर-बेर पोछैत आ फेर अपना उद्यम मे लागि जाइत छल।

जानि नहि, कतेक समय बीतल मुदा मूस ताबत अपन बिहरि तैयार क' लेने रहैक। तखने एकटा भयानक साप फुफकारैत कतहु सँ प्रकट भेलैक आ मूसक बनाओल बिहरि मे पैसबाक उपक्रम कर' लागल। छोट सन बिहरि मे पैसबाक लेल ओ विशालकाय साप अपन सम्पूर्ण शक्ति लगा रहल छल। ओकर फुफकार सँ हजारो घंटीक टनटनयबाक ध्वनि आब' लागल।

ओकर देह मे कँपकँपी पसरि गेलैक आ ओ अकचकाक' उठि बैसल। ओकर सउँसे देह घाम सँ भीजि गेल रहैक आ ओकर हृदयक धुकधुकी असामान्य रूप सँ तीव्र भ' गेल रहैक। स्वप्न आ यथार्थ केँ फराक-फराक करबा मे ओकरा देरी लगलैक। बड्ड मोसकिल सँ ओ सामान्य भ' सकल।

विचारक भार सँ बेचैन ओकर दृष्टि कोठली मे घुमैत अपन स्वर्गीय पिताक चित्र पर जाक' अटकि गेलै।

बिहरि, साप आ मूस–अद्‌भुत त्रिकोण थिक–ओ सोचलक। ओ अपना छाती मे एकटा पैघ गोला बनैत अनुभव कयलक। ओकर विचार आगू बढ़लैक आ ओ अपन तुलना साप सँ करबा मे अपना केँ नहि रोकि सकल।

पूर्वजक अर्जित सम्पत्तिक उपयोग की ओ सापे जकाँ करत?

'न:'

एकटा तीव्र आ स्पष्ट अस्वीकृतिक गूंज ओकरा भीतर पसरि गेलै। मूस लगातार...

फेर ओ बेचैनीक अनुभव कयलक। ओकरा बुझयलैक जे कोठली आ ओछाओनक दिस सँ धिक्कार, विरोध आ प्रतिकारक स्वर उठ' लागल होअय। ई स्वर तीव्र होब' लगलैक। साँस लेबहु मे कष्टक अनुभव कयलक–जेना प्राण फड़फड़ाइत होअय।

ओ एकबैग उठल आ केबाड़ खोलि बहरा गेल। बाहरक रौदायल मुदा उन्मुक्त आ टटका हवा जेना ओकरा स्वागतम् कहलकै आ ओ अपन भीतर कोनो अद्‌भुत ऊर्जाक संचार अनुभव कयलक।

ओकर नजरि सीढ़ी पर राखल खुरपी दिस गेलैक आ ओकरा ठोर पर स्वत: स्फूर्त्त मुस्की पसरि गेलैक। दुनू बाँहि उठाक' ओ अँगैठी-मोड़ लेलक आ आगाँ बढ़ि खुरपी हाथ मे उठाय लेलक।

ओ अपन फूलक केआरी धरि पहुँचल। केआरी मे अनेरुआ घास-पात उगि आयल रहैक।

ओ खूब जतन सँ तकरा साफ कर' लागल।

प्रजातंत्र परिकथा

बात शुरू भेल छलै–एकटा हत्या आ दूटा घर मे भेल डकैतीक घटना सँ। भोरहि-भोर बेड-टीक संग समाचार-पत्र पढ़यबला सभ लेल रोज-रोज पढ़ल जाय बला एहि तरहक समाचार सभ जकाँ ओहो एकटा सामान्य सन खबरि छल। देश आ सूबा केँ समग्र रूप सँ देखयबला सभक लेल एकटा अदना सन शहर मे घटल एहि घटना मे नव की देखयक छलै। खासक' तखन, जखन रोज-रोज थोकक भाव मे एहि तरहक घटना घटि रहल होअय–भोरहि उठिक' शौच जायब जकाँ।

लेकिन कमल कुमार शर्मा लेल ई खबरि सामान्य नहि छल। ओ एहि घटनाक संग जुड़ल तनाव, आनन्द आ लाज केँ बेस अनुभवहि टा नहि कयने छल बरू ओकरा भोगनहुँ छल। समाचारक पाँति सभ सँ फूट जे किछु भेल छलै आ जाहि नाँगट यथार्थ केँ ओकर आँखि देखने छलै, तकर बाद त' समाचार आ समाचार-पत्रक औचित्य पर एकटा प्रश्नचिह्न ठाढ़ क' देल गेल छल कमल कुमार शर्माक विवेक द्वारा।

घटनाक तेसर दिन छपल समाचारक एक-एक पाँति कमल केँ अक्षरशः मोन अछि। समाचार-पत्रक सातम भीतरका पृष्ठ पर एकटा कोना मे छपल छलै ई समाचार

'सुन्दरपुर शहर में हत्या और डकैती

(निज संवाददाता द्वारा)

परसों रात सुन्दरपुर शहर में अपराधकर्मियों ने दो परिवारों की सम्पत्ति लूट ली और प्रतिरोध करने पर एक परिवार के गृहस्वामी की हत्या कर दी। पुलिस सूत्रों के अनुसार इस मामले की गहन छानबीन की जा रही है। अभी तक किसी भी अपराधी के पकड़े जाने की खबर नहीं है।'

समाचार-पत्र मे ई नहि छपल छलै जे एक परिवारक जाहि गृहस्वामीक हत्या भेल रहै ओ एकटा रिटायर्ड डाक्टर छलाह आ बहुत मामूली फीस लेबाक कारणेँ हुनक ख्याति 'गरीबक डाक्टर'क रूप मे छलनि। समाचार मे इहो नहि छपल छलै जे अपराधकर्मी सभ 'गरीबक डाक्टर'क घर मे स्वयं केँ गरीब रोगी आ ओकर परिजन बनिक' घुसल छलै आ ओ सभ डाक्टरक संपत्ति आ जान लेबाक अलावे ओहि विश्वासक हत्या सेहो कयने छल जे अजुका समय मे दुर्लभ भ' गेल अछि।

कमल केँ तामस उठैत अछि एहन संवाददाता सभक गैरजिम्मेवारी पर। ई तथाकथित पत्रकार सभ समाचारक नाम पर या त' आधा साँच लिखैत अछि या साँच संग बलात्कार करैत अछि अथवा बलत्कृत साँच पर शब्दक दामी पहिराबा ओढ़ाक' पाठक लोकनि केँ प्रस्तुत करैत अछि। ई सभ मूल रूप सँ त' होइत अछि बनिया आ अपन व्यापारक कारी-उज्जर किरदानी केँ झाँपल-तोपल रखबाक लेल ओढ़ि लैत अछि पत्रकारिता नामक रामनामी चद्दरि कि कवच। सरकारी अफसरहुँ सभ डरैत अछि एकरा सभक खिलाफ कोनहु कार्रवाई करैत। ओना डरब की? कमल एकरा सभ केँ चोर-चोर मसियौत भाइ बुझैत अछि। दुनू नांगट रहैत अछि आ एक-दोसरक नाँगट होयबाक बात जनितहुँ अपनहि मे एक-दोसराक वाहवाही क' आम लोकक आँखि मे धूरा झोंकैत अछि–'अहो रूपम्', 'अहो ध्वनि' जकाँ। बुधिक अय्यासी लेल होइत रहओ लोकतंत्रक चारिम स्तंभक शुचिता पर घमर्थन।

कमल चिन्हैत अछि ओहि पत्रकार केँ जे एहि हत्या आ डकैतीक समाचार पठयने छल, जे सेवन ई.सी. एक्ट मे एक बेर धरा' चुकल अछि आ जेलक हवा खा' चुकल अछि। ओ पत्रकारिताक चोला चढ़यने छल जमानत पर जेल सँ छुटलाक बाद। कालाबाजारी आ मिलावटक ओ केस एखनहुँ धरि लटकल अछि। ओकरा मटिअयबाक लेल अफसर सभक मदति चाही। अफसर सभ मदति कइयो रहलाह अछि किएक त' हुनकहु सभ केँ पत्रकारक मदति चाही-अपन कारिख पोतल चेहरा नुकयबाक लेल।

एहन स्थिति मे ओ पत्रकार ई कोना लिखि सकैत छल जे जाहि घर सभ मे डकैती भेलै एहि मे सँ एकटा घर पुलिस थाना सँ अगबे एक सय डेगक दूरी पर आ दोसर आरक्षी अधीक्षक महोदयक निवास सँ अगबे साठि-सत्तरि डेगक दूरी पर छलै। ओ ई कोना लिखि सकैत छल जे छह-सात बजे साँझहि (जकरा दिन-दहाड़े सेहो कहल जा सकैत अछि) सड़क पर लोकक अनवरत

अबरजातक अछैत अपराधी सभ अपना-आप केँ रोगी आ ओकर परिजन बताक' डा. के.पी. भगतक किला सन सुदृढ़ मकान मे सन्हिआय गेल छल। एक बेर सन्हिअयलाक बाद अपराधी सभ केँ फबि गेल छलै। ओ सभ डाक्टरक घर-अंगना केँ उधेसि देने छल। स्त्रीगण सभक संग दुर्व्यवहार कयने छल। एकरा देखि जखन डाक्टर हल्ला आ प्रतिरोध कयने छल त' ओ जल्लाद सभ ओकरा एकटा पलंग पर ल' जाक' पटकि देने छल। दू गोटे ओकर हाथ-गोर छानि लेने छलै आ तेसर गोटे ओकर मुँह पर तकिया राखि ताधरि दाबने रहलै जाधरि फड़फड़ाइत-छटपटाइत डाक्टरक प्राण छूटि नहि गेलै। प्रशासनक गुर्गा पत्रकार ई कोना लिखि सकैत छल जे पुलिस थाना सँ अगबे सय डेगक दूरी पर स्थित वृद्ध डाक्टरक घर मे ओकर नृशंस हत्याक बादहु अपराधी सभ प्राय: चारि घंटा धरि निधोक भ' अपन मनमानी करैत रहल छल। पुलिसबला सभक ऊंच मनोबलक भाषा पादबाक अभ्यस्त ओ पत्रकार ई कोना लिखतय जे अपराधी सभक मनोबल एतेक ऊँच रहय जे डाक्टरक एहिठाम नृशंसताक वीभत्स खेल खेलबाक बाद ओ सभ हालहि रिटायर भेल शिक्षक विक्रम प्रसाद वर्माक घर पहुँचि गेल छल। ई ओहय विक्रम प्रसाद वर्मा छलाह जे अपन सच्चरित्रता आ ईमानदार शिक्षाविदक हैसियत सँ राष्ट्रपति-पदक प्राप्त कयने छलाह आ जिनकर घर आरक्षी अधीक्षक महोदयक सरकारी निवास सँ साठि-सत्तरि डेगक दूरी पर छल। एतय अपराधकर्मी सभ विवाह मे आयल बरियाती सन शान सँ घुसल छल, रिवाल्वर देखाय जबुरन सुस्वादु भोजन पकबाक' खयने छल, जमिक' दारू पीने छल, उल्टा-सीधा डांस कयने छल, ऊँच-ऊँच बेसुर स्वर मे कलिप्सो गीत गओने छल आ डकैती-लूटपाट त' ओकरा सभक परम-पुनीत कर्त्तव्य छलैहे, सेहो कयने छल। एतय अपन किरदानीक लेल अपराधी सभ अपन अढ़ाइ-तीन घंटाक बेस दामी समय प्रदान कयने छल। विक्रम बाबूक भाइ गजानन जी अपराधी सभक आँखि बचाक' भागैत आरक्षी अधीक्षक महोदयक सरकारी निवास पर पहुँच गेल छलाह। मुदा समय पर सूचना भेटि जयबाक अछैतहु अपराधी सभ केँ निकलि भागबाक लेल पर्याप्तहुँ सँ बेसी समय दइए क' पुलिस पहुँचि पाओल छल विक्रम प्रसाद वर्माजीक एतय। पुलिस केँ राष्ट्रपति पदकक सामना जे करबाक छलै। ई बिना कलफदार वर्दी झाड़ने आ पुलिसबला जकाँ फिट् देखायब बिना कोना भ' सकैत छल। महामहिम राष्ट्रपति जी सँ जुड़ल वस्तुक संग एकटा प्रोटोकॉलहु जुड़ल रहैत अछि-ई बात आरक्षी अधीक्षक महोदय सँ नीक जकाँ के बुझि सकैत छल। आ रहि

गेलाह पत्रकार महोदय! त' एहि सभ बात केँ लिखब त' दूर, जँ हुनक वश चलितय त' ओ पंजाबक लीक पर अपराधी सभ केँ अपराधीक सत्ती 'खाड़कू' कि 'जंगजू' कि 'विद्रोही' कि 'क्रांतिकारी'क तगमा ठोकि दितथि। कहीं ओ सभ खुश भ' क' पत्रकार महोदयक घर केँ बकसि देनि। कमल कुमार शर्माक नस तनाब' लगैत अछि, ई सभ सोचैत।

कमल कुमार शर्मा केँ मोन अछि जे घटना भेलाक बादक भोरहि सँ शहर मे एकटा मनहूस सरगर्मी पसरल रहय। एकटा अबूझ आदंक सँ भरल लागि रहल छलै शहरक लोक सभ आ ठामहि-ठाम हांजि मे ठाढ़ भ' फुसफुसाहटि मे बतिआइत छलै। प्रत्येक मोन शंकित-न्हि जानि ओकर कात-करोट सँ अबरजात करयबला सभ मे केओ पुलिसबला होअय कि रातिक घटना मे सम्मिलित अपराधी। सभ शहरीक मोनक बाँस पर जेना मनहुसिक गिद्ध अपन पाँखि पसारि देने छलै। जीबैत-जागैत लोक सभक शहर श्मसान जकाँ भकोभन्न मे लिथरायल पड़ल छलै। शहरक डगर सभ पर एकाध घंटाक अंतराल पर गुजरैत पुलिसक जीप सभ वातावरण मे पसरल भकोभन्न आ लोक सभ मनोमस्तिष्क मे गतानल अन्हार केँ कनेकाल लेल चिर्रीचोंत करैत निकलि जाइत छलै आ फेर ओएह अन्हार आ भकोभन्न अपन अतिक्रमित ठाम पर घुरि अबैत छलै। सृष्टिक ओर-छोरक बीच मनुष्य कतेक नगण्य अछि, कतेक एसगर आ असहाय अछि--एकर बोध कमल केँ भेल छलै ओहि क्षण। ओकरा भेल छलै जे ई अन्हार आ भकोभन्न अनंतकाल धरि रहि जायत, कहियो खतम नहि होयत।

फेर, सुरूजक चमकैत रोशनीक नीचाँ पसरल भकोभन्न आ अन्हार केँ एहि बेर पुलिसक अनेरे दौगैत गाड़ी नहि, कोनो आन वस्तु चीरने छल। के? शहरक डगर पर एम्हर-ओम्हर छिड़िआयल लोक सभक संग-संग कमल कुमार शर्माक प्रश्न उगलैत आँखि सेहो ओम्हर घुरल छलै।

ओ शहरक मुख्य चौराहा छल, जतय सँ बीस डेगक दूरी पर अस्पतालक हाता शुरू होइत छल। हाता मे जयबाक लेल एकटा मुख्य द्वार छल जतय एहि क्षण बहुत रास लोक जमा भ' गेल छल। हिनके सभक बीच होइत वार्त्तालाप चिन्ता, तनाव आ रोषक संग मिलिक' एकटा हल्लाक रूप ल' लेने छल। इएह हल्ला तोड़ने छलै अन्हार आ भकोभन्नक व्यूह केँ। भीड़क बीच ठाढ़ लोक सभ केँ चिन्हने छलै कमल। ओ सभ दवाइ दोकनदार छलै।

उत्सुकताक वशीभूत कमल ओतय पहुँचल छल आ तखन ओकरा बुझायल छलै जे ओ सभ स्वयं कें दवा दोकनदार नहि बरू केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट कहैत अछि। ओकर सभक कोनो संगठनहु छलै जकरा ओ सभ केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एशोसिएशन कहैत छलै आ जकर नेतृत्व करैत छलाह मधुरेश जी। मधुरेश जी माने मधुरेश किशोर द्विवेदी। कमल मधुरेश जी कें अपनौती तौर पर जानैत छल। ओ एहि समय-सालक लेहाज सँ ईमानदार आ प्रतिबद्ध लोक छलाह। मधुरेश जीक नेतृत्व मे हुनक एशोसिएशन एहि हत्या आ डकैतीक घटनाक विरोधस्वरूप सभटा दवा दोकान बन्द क' देने छल आ अगिला डेगक निर्धारण करबाक लेल शहरक चिकित्सक लोकनिक संग विचार-विमर्श करय जा' रहल छलाह।

फेर केमिस्ट आ डाक्टर सभक बैसार भेल छलै। बैसार मे शहरक किछु समाजसेवी सेहो सम्मिलित छलाह। निर्णय लेल गेल छल जे बैसार मे उपस्थित सभ गोटय दिवंगत डाक्टरक घर जयताह, हुनक मृत शरीर पर माल्यार्पण करताह आ तखन ओ सभ गांधी मैदान मे जुमताह जतय नागरिक सभक सभा कयल जायत आ जाहि मे सार्वजनिक तौर पर प्रशासनिक विफलता आ अकर्मण्यताक प्रति विरोध प्रकट कयल जायत। सभाक पछाति महत्वपूर्ण लोक सभक एकटा प्रतिनिधिमंडल जिलाधिकारी एवं आरक्षी अधीक्षक सँ भेंट क' ज्ञापन देत।

कमल कें मोन अछि जे केमिस्ट आ डाक्टर सभक बैसारक देखा-देखी शहरक आन व्यापारी संगठनहु सभ स्वत:स्फूर्त ढंग सँ अपन-अपन जिम्मेवारी बुझने छल। ओ सभ शहरवासी सँ अपील कयने छल जे लोक सभ अपन भावना व्यक्त करबाक लेल गांधी मैदान मे जुमथि। शहरक कतिपय जेबी स्वयंसेवी संस्था आ राजनैतिक दल सभ एहि मुद्दा पर गुम्मी लाधि लेने छल। नहि जानि कि'क?।

दिवंगत डाक्टरक मृत देह पर माल्यार्पण क' जाधरि डाक्टर आ केमिस्ट सभक दल गांधी मैदान पहुँचल छल ताधरि ओतय हजारेक संख्या मे लोक जुमि गेल छल।

सामुहिक दुःख आ पीड़ाक अवसरि पर जुमल बेचैन भीड़क माँझ किछु बेमेल चेहरा सभ कें देखि कमलक माथ ठनकल छलै मुदा ओ एकरा अपन पूर्वाग्रहक परिणाम बुझि अपन दिमाग सँ बाहर झिटकि देने छल। शहरक बरबादी

आ तथाकथित विकासक एक संग ठेकेदारी करयबला एहि सफेदपोश लंपट सभ पर सँ ससरैत ओकर आँखि ओतय उपस्थित आन गोटय कें आँखियासने छल।

अपन घर-परिवार, बाल-बच्चा आ रोजी-रोटीक त्रिकोण मे ओझरायल रहयबला लोक सभक चेहरा पर आशंका, आदंक आ भयक छाप साफ देखाइत छलै। स्कूल सँ घर घुरैत बेदरा सभ कें किछु भ' जाय... ...घर मे बैसल जुआन बहिन-बेटी कें किछु भ' जाय... ...सौंसे परिवारक पेट पोसबाक एकमात्र साधन कठघरा मे चलैत दोकान कें किछु भ' जाय... ...। अनगिनत प्रश्न छलै जे फूट-फूट दिमाग मे उठैत होयतैक मुदा सभक जड़ि मे होयतैक एकहिटा भावना-असुरक्षाक। जान-माल आ इज्जतिक सुरक्षा पर काबिज प्रश्नचिह्न प्रत्येक आँखि मे साफ-साफ अभरल देखाइत छलै कमल कें।

ओम्हर वक्ता सभ अपन-अपन उद्‌गार व्यक्त करब शुरू क' देने छलाह। '...नगर आइ श्मसान जकाँ लागि रहल अछि आ हम सभ चिता जरबयबला... सन साहित्यिक भाषा झाड़यबला दलाल ईश्वर चौधरीक चेहरा सदैव जकाँ कॉकरोच सन संवेदनहीन छल।

'क्राइमक एवरेस्ट चढ़ि गेला सँ शर्मिन्दगी'क गप करय बला भडुआ मुरलीधर अग्रवाल कॉलेज परिसर मे अपनहि एकटा छात्राक संग देह-संपर्क कयलाक आ छात्र सभक द्वारा रंगलहि हाथ पकड़ि लेल जयबाक अछैत जाहि तरहें शर्मिन्दगी सँ दूरहि रहल छल, ओहने बेशर्म आइयो देखाइत छलै।

मटिया तेल फेंटल पेट्रोल बेचिक' सैकड़ो गाड़ीक इंजिन खराब क' देबाक जिम्मेवार एकटा तथाकथित पत्रकार अपन भाषण मे एहि बात पर चिन्ता प्रकट क' रहल छल जे एहन जघन्य घटनहु पर लोकक खून नहि खौलैछ मुदा स्वयं ओकरा अपन देह मे बहैत खून मे मिलावटक दुर्गंध लोक सभ सँ नुकाइत नहि छलै।

चोरीक माल खरीद-बिक्रीक झमेला मे अपहरण-कांड कें अंजाम द' देबाक हद धरि पहुँचयबला नगरपालिकाक चेयरमैन बुचनू बाबू पुलिस प्रशासन कें उठाक' बंगालक खाड़ी मे फेंक अयबाक आह्वान क' रहल छल। पुलिसक संग ओकर मसिऔत संबंधक मोन पड़ितहि कमलक ठोर घिन सँ वक्र भ' गेल छल।

अपन मुनीमक कृपा सँ चारिटा संतानक बाप कहयबाक गौरव हासिल करयबला पचीस वर्षीय सेठानीक साठ वर्षीय पति, कालाबजरिया सेठ कनकधारी

मल अपन धोधि आ ओहि पर जेना-तेना टिकल धोती सम्हारैत एतेक जोर-जोर सँ श्वास घीचि रहल छल जे ध्वनिविस्तारक यंत्र पर ओकर हँफसबाक स्वर छोट-मोट अन्हड़क भ्रम दैत छल। ओकर मुँह सँ बहराइत शब्द घर्र-घर्रक स्वरक संग-संग थूक आ बलगम उगलि रहल छल। ओकर चिन्ता ई छलै जे अपराध बढ़ला सँ व्यापार चौपट भ' जायत।

खूनी आ डकैती सभक पैरबीक लेल कुख्यात एकटा वकील ज्ञाननाथ सिंह जे बार एशोसिएशनक अध्यक्ष सेहो छल, अपन भाषण मे अपराधी सभक संग-संग प्रशासनिक पदाधिकारी सभ कें सरेआम चौराहा पर फांसी खींचि देबाक वकालति क' रहल छल। सौंसे जिलाक काम-काज ठप्प क' देबाक आ जिला-बंदक आह्वान करबाक बाद ओ अपन भाषण खतम कयने छल आ तेज डेगें वापिस कचहरी दिस घुरि गेल छल। कचहरी खुजल छलै आ ओकरा पैरबीक मारिते रास काज करबाक छलै।

चौक-चौराहा पर ठाढ़ भ'-भ' क' बाढ़ि प्रभावित इलाका कें डिजनीलैण्ड मे परिवर्तित करबाक मुफ्त योजना प्रस्तुत करयबला गंजेड़ी छुटभैया कृष्णानंद तिवारी शहरक सम्मान आ अस्मिता पर चकभाउर दैत खतरा कें साफ-साफ देखि रहल होयबाक बात क' रहल छल। ओ सभ साल दशहरा मे महादेवक वेश धारणक' शोभा-यात्रा मे निकलैत छल आ छज्जा-छत सभ पर ठाढ़ि युवती सभ कें रकटल नजरि सँ तकैत रहैत छल।

एहि किछु कमीना सभक कमीनगी सँ आ लबड़ा सभक लबड़पनी सँ भरल फुसियाह लफ्फाजीक अछैतहु सभा मे एहन सहृदय नागरिक आ विवेकशील वक्ता सभक कमी नहि छलै जे सही माने मे स्थितिक गंभीरता कें बुझि रहल छलाह आ हुनका द्वारा व्यक्त विचार सँ ई चिन्ता प्रकट सेहो भ' रहल छल। हुनक समझदारी सँ भरल गप उपस्थित श्रोता सभ पर अनुकूल प्रभावहु छोड़ि रहल छल।

ओहिकाल ओ छौंड़ा सन देखायबला गोरका डाक्टर भाषण झाड़ि रहल छल, जखन बिगुल बाजल छलै। नरमदल आ गरमदलक माँझ जोर-आजमाइशक बिगुल। प्रोफेशनल आ एमेच्योरक द्वन्द्वक बिगुल। यथास्थितिवादी आ परिवर्तनवादीक माँझ शास्वतकाल सँ चलि रहल युद्धक बिगुल।

अपन वयसक चौआलीस वर्ष कें लोफरपनीक भेंट चढ़ा' चुकल छौंड़ा

जकाँ देखाइत ओ डाक्टर चेहरा सँ त' गोर-भुक्क छलै मुदा अपन गात्रक कोनो अनठीया-भीतरका भाग मे कारी-सियाह दिल नुकयने छलै। अपना-आप कें हरफन-मौला कहय-देखाबयबला ई डाक्टर दरअसल कोनो जोगरक लोक नहि छल। धरमचन्द सहाय नामक शुरूआती अक्षर डी.सी.एस. क बुझनुक लोक सभ माने लगबैत छल-दारू, छौंड़ी, सार-बहानचो...। डाक्टर धरमचन्द सहाय श्रोता सभ कें द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद आ अपराधक फिलॉस्फी घोंटबायब शुरू-ए कयने छल कि सौंसे गांधी मैदान जिन्दावाद-मुर्दावाद आ विभिन्न नारा सभक घोल-फचक्का सँ भरि गेल छलै। प्राय: एक सयक संख्या मे टटका जुआन भेल छौंड़ा सभक एकटा जत्था अकस्मात गांधी मैदान मे उगि आयल छल आ चढ़ल तेवरक संग आक्रामक नारा लगा' रहल छल।

सभा मे उपस्थित पूर्व सँ स्थापित नेतृत्व वर्ग सभा कें जारी राखय चाहैत छल। हुनका सभक मदति लेल डा. धरमचन्द सहाय अपन भाषण मे धीपल-तबधल शब्द सभ कें घोसारब शुरू क' देने छल आ व्यवधानक अछैत अपन भाषण जारी राखने छल मुदा श्रोता सभक एकाग्रता टूटय लागल छल आ ओकरा जोड़ने राखब कम सँ कम डा. डी.सी.एस. क बुत्ताक बात नहि छलै। श्रोता सभ बेचैन भ' ठाढ़ होबय लागल छल।

छौंड़ा सभक आक्रामक तेवर शांतिपूर्ण ढंग सँ बैसल श्रोता सभ पर संक्रामक असरि कयने छल। ओतय अकस्मात अभरि आयल आक्रामक उत्तेजना जेना सौंसे माहौल कें अपन चांगुर मे बकोटि लेने छल। विरोध होयबाक चाही-एहि बात पर तँ सभ एकमत छलै मुदा एकर पद्धति फूट-फूट प्रकारक भ' सकैत अछि-एकर बोध जेना हुनका सभ कें पहिल बेर भेल छलनि। कोन दिस जाइ-एहि अतस्तितह मे लोक सभ ठाढ़ तँ भ' गेल छलाह मुदा अपन-अपन ठाम पर स्थिर छलाह।

कमल मधुरेश जी कें तेजी सँ उठिक' नवतूर सभक दिस बढ़ैत आ फेर बतिआइत देखने छल। ओ अनुभव कयने छलै जे छौंड़ा सभ मधुरेश जी कें अपेक्षित सम्मान तँ द' रहल छलै मुदा गांधी मैदान मे जुमिक' भाषण देब आ किछु लोकक प्रतिनिधि मंडलक माध्यम सँ प्रशासन कें विरोधपत्र देबाक गप मानय लेल किन्नहु तैयार नहि छलै। नवतूर सभ कें बुझयबा मे मधुरेश जीक मदति कमल सेहो कयने छलै। छौंड़ा सभ किछु सुनबाक लेल तैयार नहि छलै आ अपना दिस सँ एहि सभा कें 'कायरता सँ भरल निष्क्रियता' कहि खारिज क' चुकल छल। ओ सभ एहि कायरता मे सम्मिलित भए 'शर्मिन्दा'

नहि होबय चाहैत छलै। ओकरा सभक कहब छलै जे विरोध आ आक्रोशक स्वर शहरक कोना-कोना सँ प्रतिध्वनित होयबाक चाही आ प्रशासनक आगाँ ई भावना गिनल-गुथल लोकक प्रतिनिधिमंडलक माध्यम सँ नहि बल्कि उपस्थित जन-समूह द्वारा 'डाइरेक्ट' राखल जाइक चाही।

फेर अकस्मातहि हड़बिरड़ो पसरि गेल छलै आ सभ किछु गड्ड-मड्ड भ' क' रहि गेल छलै। पक्ष-विपक्षक वार्त्ताकार सभक माँझ कोनो निर्णय होइतय कि जाबत मामिला हुनका सभक अकिल मे घुसितय ताबत दुनू भीड़ मिझराक' एकटा जुलूसक रूप धरय लागल छल आ गांधी मैदान छोड़ि सड़कक दिशा धरय लागल छल।

मधुरेश जी कनेकाल लेल किंकर्तव्यविमूढ़-सन भ' गेल छलाह। फेर ओ आनन-फानन मे समान विचारबला अपन मित्र सभ कें जुटयने छलाह। ओ शहरक विभिन्न संस्था-संगठन पर जोंक जकाँ सटल 'ओल्ड फॉक्सेज' सभक खोज सेहो कयने छलाह मुदा ओ सभ गदहाक नांगड़ि जकाँ गांधी मैदान सँ अलोपित भ' चुकल छलाह। पछाति कमल कें ज्ञात भेल छलै जे जाहि घड़ी सौंसे शहर ज्वालामुखीक मुँहथरि पर बैसल छल ताहि घड़ी ओ 'ओल्ड फॉक्स' सभ एकटा एहन गोटेक टेरेस पर बैसिक' चाह आ बिस्कुट लैत अन्तर्राष्ट्रीय समस्या सभ पर बकथोथी क' रहल छलाह जे हुनका सभक गिरोहक नव-नव सदस्य बनल छल।

ओहि काल मधुरेश जी अपन सहयोगी सभ सँ बाजल छलाह-"एहि नवतुर सभक कोंढ़ क्रोधक आगि मे धधकि रहलि अछि आ एखन ओकर सभक स्थिति बताह भेल सांढ़ जकाँ अछि। कनेक टा त्रुटि सँ एकरा सभक ऊर्जा कोनो विस्फोट मे बदलि सकैत अछि आ सौंसे शहर ओकर शिकार भ' जा' सकैत अछि.... ....। ई सभ नहि जानैत अछि जे एकरा सभ कें की करबाक चाही, मुदा ई सभ अपनहि सभक घरक बेदरा अछि आ एकरा सभक सभटा जायज-नजायज काजक जिम्मेवारी अपनहि सभ पर होयत... ...परिस्थितिक मांग अछि जे नवतूर सभ हवाक दिशा जेम्हर मोड़लक अछि हमहु सभ अपन दिशा ओम्हरे क' ली... ...हँ, हमरा सभ कें पूर्ण रूप सँ सावधान आ चौकस रहय पड़त जे भीड़क मानसिकता कोनो ओहेन गतिविधि दिस नहि मुड़ि जाय जकरा लेल आगाँ हमरा सभ कें लज्जित होबय पड़य...हमरा सभ कें ओहने कोनो संभावित क्षति कें सेहो रोकय पड़त जकर क्षतिपूर्ति हमरा सभक बुत्ताक बात नहि... ...।"

जुलूस चलि पड़ल छल। नवतूर सभ खूब जोश-खरोश सँ नाराबाजी शुरू क' देने छल। सड़कक दुनू कात बनल घर आ दोकान सभ मे बैसल-बतिआइत लोक उत्सुक भ' बाहर निकलि आयल छल। सड़क पर अबरजात करैत आ दोकान सभ मे सौदा-सुलूफ करैत लोक सभ चौचंक भ' गेल छल। बूढ़-पुरनियाँ, स्त्रीगण आ बेदरा सभक उत्सुकता जुलूस कें देखबा धरि सीमित छल मुदा नवतूर सभ नहि जानि केम्हर सँ आबि जुलूस मे सम्मिलित होइत जाइत छल से नहि कहि । जुलूसक आकार निरंतर बढ़ैत जाइत छल। नवतूर सभक जोश आ रोष नरमपंथी सभक लेल चिन्ताक कारण बनल जाइत छल।

जुलूस आगाँ बढ़ैत चलि जाइत छल। मृतक डा. के.पी. भगतक निवास लग पहुँचतहि अकस्मात जुलूस दिस सँ नाराबाजी वन्द भ' गेल छलै। हवा मे हिलैत मूड़ी सभ सामान्य स्थिति मे आबि गेल छलै। जुलूस मे सम्मिलित लोक मृतकक घरक सोझाँ सँ निसबध गुजरि क' आगाँ बढ़ि गेल छलै।

कमल जुलूसक संवेदनशीलता आ नीक-बेजायक बोधक प्रति आश्वस्त भेल छल। संग चलैत मधुरेश जी सावधानीवश कमल आ आन किछु लोकक संग तेजी सँ आगाँ बढ़िक' थानाक प्रवेश द्वारक सोझाँ ठाढ़ भ' गेल छलाह। जुलूस आ प्रवेश द्वारक बीच हुनका लोकनि कें देबाल जकाँ ठाढ़ कयलाक बाद मधुरेश जी झपटिक' माइक्रोफोन अपन हाथ मे ल' क' घोषणा कयने छलाह-"हम सभ पुलिस प्रशासनक विराध मे नाराक माध्यम सँ अपन भावना राखि एतय सँ घुरि जायब। वार्त्ता हमरा सभ कें हिनका सभ सँ नहि, हिनक उच्चाधिकारी सभ सँ करबाक अछि... ...।"

मधुरेश जी ई सावधानी ओहि मोटरसाईकिल आ ओकर सवार कें देखिक' बरतने छलाह जे अनचोक्के जेना आकाश से टपकि पड़ल छल। प्रारंभ मे ओकर कोनो अता-पता नहि छलै मुदा डा. भगतक निवास लग सँ ओ मोटरसाइकिल जुलूसक संग किछु एना चिपकि गेल छल जे ओकर सवार जुलूसक नेतृत्व करैत लगैत छल। मोटरसाइकिल पर असवार ओ बंदा एकटा संप्रदायवादी दलक नव्यतम रंगरूट छल आ किछुए दिन पहिने पुलिस द्वारा बड़ अपमानजनक ढंग सँ गिरफ्तार क'ल गेल छल। ओ रंगरूट मंदिर-मस्जिदक झोंका पर असवार भ' विधानसभा पहुँचैक खाँहिस रखैत छल आ पुलिस प्रशासन कें 'जनसमर्थनक शक्तिक सुदर्शन-चक्र हमर आंगुरक टुरनी पर अछि'-एहन साबित करबाक गर चुकयबला नहि छल। मधुरेश जी कें आशंका छलनि जे ओ रंगरूट पुलिस कें अपन टिरबी देखयबाक लेल जुलूस कें अपन लाभ लेल दुरूपयोग नहि

क' लिअय। तें जखन जुलूस थानाक प्रवेश द्वार लग सँ नारा लगा क' घुरि गेल त' मधुरेश जी आफियतक नमगर सांस लेलनि आ कमल एवं अन्य हीत-मीत सभक कान्ह थपथपाय आभार प्रकट कयने छलाह।

जुलूस आगाँ बढ़ि चलल छल। रंगरूट अपन उद्देश्य मे विफल भ' क' गदहाक माथ सँ सींग जकाँ अलोपित भ' गेल छल। तखने एकटा नव धग्गर स्वर आ टटका-टटका जनमल नारा–'पुलिस प्रशासन सावधा''न! आबि गेल अछि तूऽ''फानक संग एकटा बंदा माइक्रोफोन धयने नमूदार भेल छल। कमलक संग-संग अनेक आँखि ओहि दिस घुमि गेल छल। चेहरा पर चारि-पाँच दिनक बासी खुटिआयल दाढ़ी आ लाल टेस आँखिबला एकटा छौंड़ा माइक्रोफोन हथिआय लेने छल। मोटका खादीक मोचरायल-सोचरायल कुर्ता-पैजामा केँ माँझ हैंगर जकाँ देखाइत ओहि अनचिन्हार छौंड़ाक दिआ कमल क'क गोटय सँ बतिअयलाक बाद अधा-छिधा जानकारी हासिल कयने छलाह। छौंड़ाक नाम प्रदीप क्रांतिकारी छलै। केओ बतौने छलै जे ओ कोनो इंजीनियरिंग कॉलेजक छात्र छल आ समाज सेवाक उद्देश्यक वशीभू बीचहि मे पढ़ब छोड़ि देने छल। विधानसभाक पछिला चुनाव मे ओ एहि क्षेत्र सँ नामांकन दाखिल कयने छल आ बापक पचासेक हजार टाका बुकबाक बाद कुल जमा पौने दू सय वोट हासिल क' पाओल छल। एकटा दोसर जानकार कमलक आगाँ क्रांतिकारी जीक समाज सेवाक मामिलाक खंडन कयने छलाह। हुनका मोताबिक क्रांतिकारी जी समाज सेवा लेल पढ़ब नहि छोड़ने छलाह बरू भयंकर निशाबाजी आ एकटा बलात्कारक आरोप मे हुनका कॉलेज सँ निष्कासित कयल गेल छल। हुनके मोताबिक क्रांतिकारी जीक आँखि प्रशासकीय विफलताक प्रति आक्रोश सँ नहि बरू गांजा सेवनक प्रभाव सँ लाल-टेस देखाइत छल। कमल बेसी दुखी आ चिंतित एहि बात सँ भेल छल जे जुलूसक नवतूर सभ अकस्मात व्यग्र जकाँ भ' उठल छल। ओ अनुमान नहि क' पाओल छल जे एना क्रांतिकारी जीक आगमन सँ भेल छलै कि एकर कोनो आन कारण छलै।

घुरती मे जुलूस केँ फेर डा. भगतक निवासक आगाँ सँ जयबाक छलै जुलूस ओतय पहुँचय सँ पहिनहि एक बेर फेर निसबध भ' गेल छल आ नहुएँ-नहुएँ निवासक आगाँ सँ निकसय लागल छल। प्राय: आधा जुलूस आगाँ बढ़ि चुकल छल कि तखने अनघोल मचि गेल छलै।

मधुरेश जी ओहिकाल जुलूसक आगाँ छलाह मुदा कमल पाछाँ रहि गेल छलाह। ओ साफ-साफ ओ नजारा देखने छल। ओहि चेहरा सभ केँ चिन्हबा

मे हुनका कोनहु भांगट नहि भेल छल जे ओहि सरकारी जीप पर खतरनाक मंशा सँ झपटल छल। ओ सरकारी जीप पर बैसल लोक केँ सेहो साफ-साफ देखने छल। जीप मे अनुमंडलाधिकारीक पद पर स्थापित ओ बन्दा उपस्थित छल जे अपन घुसखोरी, भ्रष्ट आचरण आ हद दर्जाक ओछपनक कारणेँ इलाका भरि मे कुख्यात भ' चुकल छल। ओकर चेहरा देखितहि कमल केँ सदिखन ई विचार अबैत छल जे किछु लोकक चेहरा सांचे ओकर कर्मक अयना होइत अछि। ओ बन्दा अपन मुँहे सँ एक नंबरक चरित्रहीन आ मक्कार बुझाइत छल-जतन सँ औंठिया कयल गेल तेल सँ औंसल केश, आँखि मे लागल सुरमा आ पान सँ सदिघड़ी रंगल रहयबला चाकर ठोर। आ ओहि काल तँ उमतल भीड़ सँ घेरायल ओकर शकल डरक मारे एहन भ' गेल छलै जेना पानि मे पखरल उल्लू नामक पाखी। ओहि काल प्रदीप क्रांतिकारीक नेतृत्व मे जीप पर झपटयबला चेहरा सभ जीपक कपड़ा फाड़ि देने छलै। जीप पर छोट-छोट डंटा, पजेबा आ अगबे हाथक प्रहार सँ विचित्र सन आर्केस्ट्रा बाजि उठल छलै। जाबत कमल लपकिक' बीच-बचाव लेल ओतय पहुँचल ताबत ओ पदाधिकारी अनगिनत थप्पड़ आ मुक्का खाए चुकल छल, ओकर कॉलर फाटि गेल छलै, ठोर सँ पानक पीक टघरिकय ओकर अपनहि पहिरलहा केँ ठाम-ठाम सँ लभारि देने छल आ ओकर छिड़िआयल औंठिया केश एकटा सतरह-अठारह वर्षक छौंड़ाक बाकुटक गिरफ्त मे छल। कमल ओकर केश छोड़बयने छल आ ड्राइवर केँ जीप ल' क' भागि जयबाक ईशारा कयने छलै। जीप गोलीक गति सँ लंक ल' लेने छल आ छौंड़ा सभक एकटा हाँजि अपन जीतबाक खुशी मे सड़क पर नाचय लागल छल।

नाचि गेल छलैक कमलक माथ सेहो, जखन ओ प्रदीप क्रांतिकारी केँ कहैत सुनलक–''हरामीक पिल्ला! आब अकिल ठेकान पर आयल हेतनि सारक। कोयलाक लायसेंस मे सात हजार टका चाही हरमजादा केँ। देखलहक तूफान।''

एना लागल छलै जे एहि कांडक बाद भीड़ तीतर-बीतर भ' जायत आ लोक सभ अपन-अपन डगर ध' लेत। मुदा कोनो अदृश्य शक्ति भीड़ केँ फेर सँ नियंत्रित क' गेल। किछुए कालक बाद जुलूस फेर अपन राह पर छल। जुलूस नारा लगबैत, शहरक मुख्य चौराहा केँ टपैत गांधी चौक दिस बढ़ि रहल छल। मुदा जुलूसक बीच पसरल अराजकता आब स्पष्ट देखाय लागल छल। किछु छौंड़ा सभक हाथ मे छोट-छोट डंटा नजरि आबय लागल छल आ ओकरा सभक माँझ उमकी सँ भरल उछल-कूद सेहो शुरू भ' गेल छल।

मधुरेश जी जुलूसक संग-संग चलितहि अपन विश्वस्त हीत-मीत सभक संग मंत्रणा कयने छलाह आ हुनका सभ कें सावधान रहबाक सलाह देने छलाह ताकि एहि तरहक गलती फेर नहि दोहरायल जा सकय। ओ चलितहि-चलितहि किछु आओर मित्र लोकनि कें अपन संग क' लेन छलाह। नव सहयोगीक रूप मे जुटयबला गजेन्द्र जी स्थानीय कॉलेज मे व्याख्याता छलाह आ नवतूर सभ पर हुनक नीक पकड़ छलनि। क'क व्यापारी संगठन सँ जुड़ल माधव जी आ कृष्णमोहन जी स्वयं नवतूर छलाह आ अपन सामाजिक जिम्मेवारी कें नीक जकाँ बुझैत छलाह। ई सभ गोटय जुलूसक बीच-बीच मे जा' क' लोक सभ कें समझयबाक-बुझयबाक काज शुरू क' देने छलाह आ धीरे-धीरे भीड़क बीच पसरल उमकी घटय लागल छल।

जुलूस बिना कोनहु अप्रिय घटनाक चलैत गांधी चौक पहुँचल छल आ जयप्रकाश चौक दिस मुड़ि गेल छल। मधुरेश जी माइक्रोफोन पर जुलूस सँ आग्रह कयने छलाह जे ओ सभ अपन हाथक डंटा सभ फेकि देथि कनेकाल बाद सांचे डंटा सभ देखयब बन्न भ' गेल छल। फेर ओ बाजल छलाह-'... ...हम सभ जयप्रकाश चौक सँ कचहरी दिस घुमि जायब। ओतय अपना सभ जिलाधिकारी आ आरक्षी अधीक्षक सँ भेंट क' अपन विरोध प्रकट करब, ज्ञापन देब आ गांधी मैदान आपिस आबिक' जुलूस विसर्जित क' देब।'

प्रत्यक्षत: मधुरेश जीक निर्देश कि आग्रहक विरुद्ध कोनो शंका-सन बात कत्तहु नजरि नहि अबैत छलै। जुलूस नारा लगबैत, सामान्य तौर पर चलैत जयप्रकाश चौक धरि पहुँचि क' कचहरी दिस जाइबला सड़कक दिस मुड़ले छल कि अकस्मात हड़बिड़ड़ो मचि गेलै।

''मार...मार....सरकारी गाड़ी छियौ...मार... ...आगि लगाए दइ जो....''

ओ एकटा गोल-ठोल सन छौंड़ा छलै जे अपन बाप-दादाक पुश्तैनी मिठाइ दोकान पर बैसैत छल। बयस मोसकिल सँ सतरह-अठारह वर्ष। अकिल सँ सफाचट। ने ओकर केश सोनहुला छलै आ ने ओकर चेहरा हिन्दी फिल्मक प्रोड्यूसर-डाइरेक्टर-एक्टर विजय आनंद सँ मिलैत छलै, तखनहुँ ओ 'गोल्डी'क नाम सँ ख्यात छल। ओना ओकरा 'गोल्डी' कम 'गोल्डिया' कहि बेसी बजाओल जाइत छलै। क्रिकेट खेलाइत छल किशोर वयसक टीम मे। बैटिंग करैत काल बॉलक सुविधाक खेयाल रखैत छल-जँ बैट पर आबि गेल त छक्का, पिछड़ि गेल त' क्लीन बोल्ड।

ओएह एखन अपन फाटल बाँस सन स्वर मे लोक सभ कें ललकारि

रहल छल-''मार..मार... ...आगि लगा....।''

जानि नहि ओकरा भीतर घटना वा प्रशासनक विरूद्ध आक्रोश छलै कि कम वयसबला शैतानी आ कि आँखि मुनिक' बैट घुमयबाक आदति-कमल किछु तय नहि क' पाओल छल।

किछु लोक ओहि गाड़ी दिस दरबर मारने रहय जाहि पर लाल रंगक सिग्नल लागल छलै। गाड़ी मे बीड़ी सोंटैत एसगर बैसल ड्राइवर बदहवाश भ' गाड़ी स्टार्ट कयने छल आ फूल स्पीड द' क' गाड़ी भगौने छल। ई ले... ...ऊ ले... ...आ गाड़ी दूर निकलि गेल छल।

खतरनाक साबित भ' सकयबला पाँच-दस मिनटक एहि असफल तमासाक बाद भीड़ फेर एकत्रित भ' गेल छल आ कचहरी दिस बढ़ल छल।

जयप्रकाश चौक आ कचहरीक माँझ एकटा चौराहा अछि। एतय सँ एकटा सड़क शहरक मुख्य चौक दिसि जाइत अछि, दोसर कचहरी दिस आ तेसर नगरपालिका कार्यालयक आगाँ सँ होइत गांधी चौक पर जा क' मिलैत अछि। मुख्य चौक दिस जाइबला सड़क गांधी मैदानक पूबरिया सिमान आ कचहरी दिस जाइबला सड़क गांधी मैदानक उतरबरिया सिमान तय करैत अछि। जें कि कचहरी दिस जयबाक लेल एहि चौक सँ गुजरब जरूरी अछि तें किछु युवकलोकनि बैसार आयोजित क' तय कयने छल जे एकर नाम न्याय चौक राखल जाइ आ एतय न्यायक देवीक आँखि पर पट्टी आ हाथ मे तराजूबला मूर्ति स्थापित कयल जाय। क'क मास बीति गेल मुदा मूर्ति निर्माणक लेल कें चाक जोगाड़ नहि भ' सकल। 'न्याय चौक' लोकक ठोर पर बिगरैत-बिगरैत 'नबाब चौक' भ' गेल मुदा मूर्ति नहि लागल। ठाम खाली देखिक' विश्व हिन्दू सेनाक सेनानी सभक रग फड़कल आ एक दिन लोक सभ देखलक जे ओतय बजरंगबलीक प्रतिमा राखि देल गेल अछि, जोर-जोर सँ भजन कीर्तन चलि रहल अछि आ एक कात मे 'बजरंग चौक'क टटका साइनबोर्ड चमकि रहल अछि। प्रशासन मे ताहिकाल हरिजन अधिकारी सभक बाहुल्य छलै आ ओ सभ एहि चौक कें अम्बेदकर नामे करय चाहैत छलाह। हुनका सभ कें खबरि लागलनि त ओ सभ फौरन एक्शन मे अयलाह। पुलिसबला सभ सँ लदल चारि-पाँच टा जीप आओल आ बजरंगबली गिरफ्तार भ' थाना ल' जायल गेलाह जतय सुनए मे अबैछ जे आइयो हुनकर पूजा कयल जाइत अछि। तहिया सँ ई चौक खाली अछि आ बगल मे नगरपालिका कार्यालय होबाक चलतबे फिलहाल नगरपालिका चौकक नाम सँ जानल जाइत अछि।

जुलूस आगाँ बढ़ैत नगरपालिका चौक पर पहुँचल। जुलूस कें क्रमबद्ध आ व्यवस्थित करबाक लेल ओकरा कनेकाल एहि चौक पर रोकल गेल। जिलाधिकारी आ आरक्षी अधीक्षक कार्यालय सय-डेढ़ सय डेगक दूरी मात्र पर छल। कमल स्वयं माइक्रोफोन पर लोक सभ सँ संतुलित आ अनुशासित रहबाक अपील कयने छल। मधुरेश जी, प्रो. गजेन्द्र, माधव जी आ कृष्णमोहन जी सेहो दू-चारि शब्द मे जुलूस कें शांति आ विवेक सँ काज लेबाक सलाह देने छलाह। प्रत्यक्षत: लोक सभ हुनका बात पर मनन करैत आ ओकरा कंठस्थ करैत लागि रहल छलै। ओ सभ पूर्ण आस्वस्त भ' जुलूसक संग आगाँ बढ़लाह।

ओ सभ कचहरी दिसि दसे-बीस डेग आगाँ बढ़ल होयताह कि एकहि संग मारिते रास बात भ' गेलय।

नगरपालिका चौक अकस्मात गाड़ी सभक ब्रेकक चरमराहटि सँ गूंजि उठल। एकटा घटिया गुंडा जकाँ प्रतिहिंसाक आगि सँ धधकैत अनुमंडलाधिकारी कहबय बला ओ बंदा चारि-पाँचटा जीप मे पुलिसिया सभ के भरि अनने छल। पुलिसक गाड़ी सभ चौक पर एक झटकाक संग रुकल छल। ओहि पर बैसल पुलिसबला, ओकर अफसर, चपरासी आ ड्राइवर सभ गोटय फिल्मी गुंडा सभ जकाँ गाड़ी सँ धम-धम कूदल आ बिना कोनो चेताबनी कें निहत्था भीड़ पर लाठी भांज लागल छल।

एकहि संग एतेक रास गप भेलै, घटना सभक चक्र एतेक तीव्र गति सँ घुमलै जे सभ पर ध्यान देब धरि असंभव छलै, मोन राखबाक कें कहय। फेर कमल त' एकरा मात्र एकटा प्रत्यक्षदर्शीक हैसियत सँ नहि मुदा भुक्तभोगीक रूप मे जीयल छल। ओहिकालक मन:स्थिति मे बहुत रास बात कें मोनि राखि पायब संभवहु त' नहि छलै ककरो लेल।

ओकरा मोन छै जे ओहिक्षण जुलूस मे सम्मिलित निहत्था लोक सभ पर पुलिसक बे-दरेग लाठी सभ बरसय लागल छल। जुलूस मे हड़बिड़ड़ो मचि गेल छलै। जान बचयबाक होर मे के केम्हर पड़ायल-कहब मोसकिल छल। पुलिसबला सभ जुलूस कें डराक' मात्र तीतर-बीतर टा नहि कयने छलै बरू खेंहारि-खेंहारि क' लोक सभ कें पीटने छलै।

कमल त ओहिकाल हतबुद्धि जकाँ ठाढ़क ठाढ़हि रहि गेल छल माने जेना डेग धरती सँ चिपकि गेल होअय। ओहने स्थिति मे ओ एखन धरि अलोपित रहल। डा. डी.सी.एस. कें डिस्ट्रिक्ट बोर्डक सर्किट हाउसक चहरदेवारी फानिक' पड़ाइत देखलक-फानयकाल ओकर फूलपैंटक सीअन चुत्तड़ पर सँ फाटि गेल

रहय आ दू बेर धुस-धुस गिरल रहय। जखन कमलक होस-हबास घुरलै, ओ ओतय स्वयं कें नितान्त एसगर पओने छल आ ओकर लग-पास मे अप्पन केओ नहि छलै। ओकर चौबगली लाठी बरसि रहल छलै आ ओ बूड़ि जकाँ मुँह बओने युद्ध-क्षेत्रक माँझ मुरूत बनल ठाढ़ छल। ओ देखलक जे लोक सभ कें खेंहारैत पुलिसबला सभ दूर धरि दरबर मारि रहल छल।

ओकर दृष्टि आगाँ दिस गेल छलै आ ओकर सुप्त चेतना कें जोर सँ धक्का लागल छलै। अनुमंडलाधिकारी, ओकर चपरासी, ड्राइवर आ दू टा पुलिसबला सभ एकटा जुआन कें चारू दिस सँ गोलिअयने छलै। सभक हाथ मे लाठी छलै आ ओ सभ ओहि सँ जुआन कें मकइक बालि जकाँ डेंगाए रहल छल।

ओहि अर्द्धचेतन-सन अवस्था मे होइतहु कमल कें अपन जिम्मेदारीक बोध भेल छलै। ओ स्वचालित यंत्र जकाँ ओहि दिस बढ़ल छल आ ओकर सुखायल ठोंठ सँ एकटा धिक्कार भरल चिकरब फूटल छलै–'कि'क मारि रहल छियैक अहाँ सभ एहि बच्चा कें?'

हाथ मे लाठी लेने अनुमंडलाधिकारी एक क्षण लेल ठमकिक' ओकरा दिस घुरल छल। ओ निश्चयहि ओहिकाल एकटा बताह पशु जकाँ देखाइत छल जकरा शिकार भकोसैत काल कोनो अवरोध कयल गेल होअय। एक क्षण लेल ओकर तामसे लाल टेस भेल आँखि कमल सँ मिझरायल। कमलक सर्द दृष्टि जेना ओकर भीतरका पशु कें जड़ क' देलकैक। ओ तोतराय लागल छल–'ई... ...इएह थिक ओ छौंड़ा जे हमर गाड़ी आ... ...हमरा पर आक्रमण कयने छल... ...बताउ......अ...अहाँ त देखनहि होयब के....कोना झपटल छल ई सभ हमरा पर....गुंडा थिक ई सार मादर....सभ....कानून हाथ मे ल' क' चलैत अछि....।'

''....भ' सकैत अछि....भ' सकैत अछि, मुदा अहुँ कें सोचबाक चाही जे एहन अवसर सभ पर गुंडा सभ पहिनहि पड़ाय जाइत अछि आ धराए जाइत अछि निर्दोष लोक सभ.....हम चाहब जे अनुमंडलाधिकारीक हैसियत सँ अहुँ अपन जिम्मेवारी बुझिऔक आ संतुलन नहि छोड़िऔक....ओना कानून कें अहुँ अपन हाथ मे ल' रहल छी....जँ ई बच्चा गलती कयलक अछि त' अहाँ एकरा गिरफ्तार क' लिऔक, मारिऔक नहि।''–जल्दी-जल्दी एकहि सांस मे बाजि गेल छल कमल।

अनुमंडलाधिकारीक लठैत सभ जुआन कें पीटब छोड़ि ओकरा पकड़िक'

जीपक भीतर ठेलि देने छलै। तखने चारू दिस सँ ढेला-पाथर बरसय लागल छलै।

पुलिस द्वारा खेंहारल आ पिटायल भीड़ अपना लेल नुकयबाक ठेकान सभ खोजि लेने छल आ आब सुरक्षित ठाम सँ अपन आक्रमणकारी सभ पर आक्रमण क' देने छल। भारी मात्रा मे ढेला-पाथर, रोड़ाक बौछार सँ घबराक' पुलिसबला सभ धड़ाधड़ अपन-अपन जीप-गाड़ी मे असवार होअय लागल। ड्राइवर सभ इंजिन स्टार्ट क' अपन-अपन गाड़ी कें कचहरी दिस भगाए लेलक। क्षणहि मे अनुमंडलाधिकारीक गाड़ी छोड़ि आन सभ गाड़ी ओतय सँ अलोपित भ' गेल छल।

डर आ घबराहटि सँ थरथर कँपैत एकटा पुलिस इंस्पेक्टर भागैत ओतय आयल छल। ओकर हिटलर कट मोंछ पर ओकर मुँह सँ बहराइत थूकक टुकड़ी अटकय लागल छल–'हजोर! बरगाँही सभ हमरा छोड़ दिया आ गाड़ी ल' क' भाग गिया। अपना सबके जान के खतरा है, हजोर! अहाँ हमरो अपन गाड़ी मे ल' लीजिये, हजोर आ हाली सिना निकलि भागिये।'

भय सँ कँपैत ओकर स्वरक थरथराहटि कमलक कान धरि स्पष्ट पहुँचल छल। एसगरूआ पड़ल अनुमंडलाधिकारी सेहो सन्न भ' गेल छल आ ओकर मुँह तखन एकदम खकस्याह भेल लगैत छलै। फेर ओ सभ हाँइ-हाँइ जीप मे बैसिक' पतनुकान ल' लेने छल।

जुलूस छिड़िआय गेल छलै। चौक सून जकाँ भ' गेल छलै। कमल नहुँ-नहुँ चलैत चौकक पुबरिया कात चलि आयल छल जतय चाह-पानक किछु दोकान छलै। ओकर दिमाग खाली-खाली सन छल मुदा तनाव आ बेचैनी सँ ओकर नस फाटय लेल व्यग्र छलै। तखने केओ ओकरा दिस एकटा सिगरेट बढ़यने छल। ओ अनुगृहित भावें अपन ओहि शुभेच्छु दिस ताकने छल आ सिगरेट बारि लेने छल। सिगरेटक गहींर-गहींर कश लगबैत ओ चारूदिस नजरि खिरओने छल।

आकि ओकर नजरि ओहि मोटका छौंड़ा गोल्डी पर पड़ल छल आ ओकर सर्वांग सुनगि उठल छल। गोल्डी गाछ सभक अढ़ ल' दुनू हाथ मे पाथरक टुकड़ी कें तौलैत दुबकि-दुबकि क' आगाँ बढ़ि रहल छल।

कमल चिकरने छल–''रे!!! एम्हर सुन त।''

ओ छौंड़ा अकस्मात ठिठकि गेल छल। अपन हाथ पाछाँ नुकयने धीरे-धीरे सहमिक' चलैत कमलक आगाँ आबि ठाढ़ भ' गेल छल।

''बेहुदा'....चोट्टा'......गुंडा'......; तामसक अतिरेक सँ कमलक स्वर थरथराय लागल छल–'इएह सिखने छें अपन माय-बाप सँ? गुंडागर्दी क' रहल छें तोरा सभ। आइ तोरा सभक अगत्तपनी आ किरदानीक चलतबे एहि शहरक इज्जति माटि मे मिलत से मिलत, गोली चलि सकैत अछि, केओ मरि सकैत अछि, आ ई सभ हेतय तोरा सभक कारण। भाग एतय सँ। भागै छें कि नहि।''

कमल छौंड़ाक हाथ सँ खसैत पाथरक टुकड़ी देखने छल आ ओकरा माथ झुकाक' ओतय सँ हटितहु ओकरा संतोष भेल छलै- अपन बातक असरि होइत देखिक'।

मुदा तखनहि एकटा अन्चिन्हार छौंड़ा छाती तानिक' कमलक सोझां आबि क' ठाढ़ भेल छल आ बहुत अशिष्ट लहजा मे बाजल छल–'अहाँ की ठीकेदार छी एहि शहरक? भी.आइ.पी. छी? हटि जाउ एतय सँ, नहि त' अहुँक गर्दा झाड़ि देल जायत। हट्, भागू एतय सँ।'

आ ओ अशिष्ट छौंड़ा कमलक छाती पर हाथ राखि ओकरा पाछाँ दिस धकेल देने छल।

तमसगीरक रूप मे ठाढ़ नगरपालिकाक कएकटा कर्मचारी सभ बेहुदगीक ई दृश्य देखलक। ओहिमे क'क गोटे कमल सँ परिचित छल आ ओकर सम्मान करैत छल। ओकरा सभ मे हलदिली मचि गेल छलै आ ओ सभ एम्हर दौगल छल। अमजद अली आबिक' कमलक बाँहि गसिअयने छल आ बाजल छल–''अहाँ अनेरे एहि छौंड़ा सभक मुँह लागै छी, कमल बाबू। मरय दियौक एहि बेहुदा सभ कें। अहाँ आउ, आउ हमरा संग।''

अमजद अली कमल कें ओतय सँ ल' गेल छल। कमल किछु बाजि नहि पाबि रहल छल आ अमजद अलीक संग खिंचायल चलि गेल छल। ग्लानि सँ ओकर कंठ भरि आयल छलै आ ओकर बाजैक शक्ति जेना छिनाय गेल छलै। ई एकदम अनपेक्षित छल। आइ सँ पहिने ओकर कल्पना धरि मे ई बात नहि आयल छलै जे एहि शहरक केओ गोटय ओकरा संग एहनो व्यवहार क' सकैत छैक।

नगरपालिका कार्यालयक एकटा कुर्सी पर ओकरा बैसाक' अमजद अली ओकरा पानि पीओने छलै, सिगरेट मंगाक' देने छलै आ भरोसक बोल दैत रहल छलै। कमल सेहो धीरे-धीरे स्वयं कें संतुलित आ व्यवस्थति कयने छल।

''अरे! अहाँ एतय छिअइ, भाइ साहब! ओम्हर गांधी मैदान मे लोकसभ आ पुलिसबला सभ मे ठनल छै। कोनो छन किछु भ' सकै छै।''.... एकटा युवक आबिक' बाजल छल आ कमल उठिक' ओकरे संग गांधी मैदान दिस चलि पड़ छल।

गांधी मैदान मे पुलिसे-पुलिस देखाइत रहय। ई पुलिसबला सभ मैदान मे एम्हर सँ ओम्हर रन मारैत नजरि अबैत छलै। चारि-पांच टा सरकारी गाड़ी जेम्हर-तेम्हर ठाढ़ छलै।

मैदान मे पहुँचतहि कमल साफ-साफ अनुभव कयने छल जे पदाधिकारी सँ ल' क' पुलिसमैन धरि, सरकारी पक्षक ओतय उपस्थित सभ गोटय बेजाय जकाँ डरल छल आ एम्हर-ओम्हर दरबर मारि क', लाठी चमका' क' अपन भय केँ नुकयबाक असफल प्रयास क' रहल छल। आगाँ बढ़ैत कमलक दृष्टि गांधी मैदानक पुबरिया सड़क दिस गेल छलै आ ओकरा आगाँ सरकारी पक्ष पर छारल आतंकक कारण स्पष्ट भ' गेल छल। ओहि सड़क पर गोटेक हजारक संख्या मे नवतूर सभ ठाढ़ छलै—कुपित आ आक्रमण लेल उद्धत। अचरज मात्र एहि बातक छलै जे ओकरा सभ केँ अखनधरि अपन मनमर्जी कयला सँ कोन अदृष्य शक्ति रोकिक' रखने छलै।

गांधी मैदानक माँझ पहुँचिक' कमल मधुरेश जी केँ बड़ बदहबास आ फिरिशानिक स्थिति मे पओने छल। हल्लुकहि सही, कमलक आबि गेला सँ जेना मधुरेश जी केँ किछु आफियत भेटल रहनि। हुनक अपस्यांत भेल मुँह पर हठात आयल एकटा क्षीण मुस्कान हुनक घुरैत आत्मविश्वासक परिचय देने छल। फेर, धीरे-धीरे ओतय एकटा मित्र भाव बला लोक सभ आबि जुमल छलाह-सभ तीस सँ चालीस वर्षक माँझक बयसबला।

कतय छलाह बुढ़बा-खन्नास राजनीतिज्ञ सभ ओहि दिन? की एहन विकट स्थिति केँ सम्हारब हुनका सभक जिम्मेवारी नहि छल! आ स्थितिअहु केहन विकट! गांधी मैदानक पछबरिया भाग मे राइफल-बन्दूक लादने जहपतार दनदनाइत पुलिसबला सभ! गांधी मैदानक पुबरिया रुख बला सड़क पर आक्रामक मुद्रा अखतियार कयने हजारेक क्रुद्ध बाघक झुंड।...आ एहि दुनूक माँझक क्षेत्रफल मे ठाढ़ गिनतीक एक दर्जन जुआनी आ अधवयसक माँझ लटकल लोक-ई विचार-विमर्श करैत जे एहि दुनू पाटक बीच सँ स्वयं के साबुत निकालैत

आ दुनू पाटहु केँ साबुत रखैत एहन विकट परिस्थिति सँ कोन तरहेँ निबटल जाय।

विचार-विनिमयक क्रम मे ओ सभ बुझने छलाह जे वर्त्तमान स्थिति मे आब आन कोनो बात कोनो माने नहि रखैछ। एकमात्र महत्वपूर्ण बात ई छलै जे शहर केँ एहि संभावित खून-खराबा सँ कोना बचाओल जाय। तय ई भेल जे नवतूर सभक एहि क्रुद्ध सागर केँ कोनो तरहेँ समझा-बुझा क' अपन-अपन घर घुरि जयबा लेल सहमत कयल जाय।

एहि निर्णयक बाद ओकर क्रियान्वयन मे ओहि दर्जन भरि लोक सभक संग जे बीतल छल ओ बयान सँ बाहरक चीज थिक। क्रुद्ध चीता आ कूढ़मगज महिष सभक बीच पड़यबला सभक जे गत बनि सकैत अछि ताहि मे कोनो कसरि बाकी नहि रहल छल। सड़क पर नवतूर सभक रूप मे फूटि पड़बा लेल उताहुल ज्वालामुखी आ भयाक्रांत बेहुदंगीक ज्वलंत प्रतीक प्रशासनिक अमलाक बीच वार्त्ताक आदान-प्रदान क' समस्याक सभ्यतापूर्वक समाधान निकालबाक जिम्मेवारी ओहि कान्ह सभ पर आबि तुलायल छलै जे सभ समाज आ प्रशासनक सफेदपोश सभक द्वारा पूर्ण रूपें खारिज क' देल गेल लोक सभ छलाह। ई सभ गोटे ठकुरसोहाती नहि जनैत छलाह। ई सभ किनको अपन पीर नहि मानने छलाह आ राजनैतिक-सामाजिक गुटबन्दी सभ सँ अपना-आप कें अलग रखने छलाह। आ सभ सँ बढ़िक' ई जे ई सभ गोटे केँ स्वयं पर विश्वास छल आ सांच-सांच दू टुक बात बजबाक साहस छल। तें ई बात तय भेल छल जे ताहि घड़ी हुनका सभ केँ जे करबाक छल, अपनहि बुत्ता पर करबाक छल।

वार्त्ताक लेल नवतूर सभक पहिल शर्त छल जे पहिने प्रशासन हुनक दू गोट गिरफ्तार साथी केँ रिहा करय। भयभीत प्रशासन अपन सुरक्षाक दृष्टिकोण सँ ओकरा सभक रिहाइ लेल तैयार नहि छल। ओ दुनू बन्हक जाधरि हुनका सभक कब्जा मे छल, हुनका बुझबाक मोताबिक ताधरि हुनका सभक लेल कोनो खतरा नहि छल।

वार्त्ताक दौर नमरय लागल छलै, नमरल जाइत छलै। बीच-बीच मे व्यग्र युवक सभ मैदान दिस चढ़ि दौगैत छल। कमल आ आर लोक हुनका सभ केँ बेर-बेर बुझबैत छलाह आ हुनका सभ केँ हुनक सीमा-रेखा माने सड़क धरि घुरबैत छलाह। फेर प्रशासनक कारपरदार सभक अनटेटल जिद सँ हुनका सभ केँ समक्ष होअय पड़लनि।

अंतत: प्रशासनक प्रतिनिधि एकटा लोफर कट डी.एस.पी.क बेर-बेरक बेहुदगी आ मबालीकट अशिष्ट बोली सँ आजिज आबि मधुरेश जी अपन धैर्य केँ काबू मे नहि राखि सकल छलाह। ओ गरजि उठल छलाह–''अहाँ सभ एकटा बात खूब साफ-साफ जानि लिअ', डी.एस.पी. साहेब। हम एकरा सभक पीर-पैगम्बर नहि छी। भ' सकैत अछि जे सड़क पर ठाढ़ ओ जुबक सभ हमरा द्वारा देल गेल घर घुरि जयबाक शुभ-सलाह नहि मानय मुदा परिस्थिति कहि रहल अछि जे जँ हम ओकरा सभ केँ अहाँ समेत गिनल-गुथल, बाकुट भरि सरकारी लोकक बुट्टी-बुट्टी नोंचि लेबय लेल ललकारि दिअइ त साइत कि गारंटी अछि जे एहि काज मे ओ सभ एकहु क्षण बिलम्ब नहि करत। आ अहाँ छी जे तखन सँ लगातार बेहुदा आ नाकाबिलबरदास्त भाखाक प्रयोग कयने चलि जा रहल छी। अहाँ सभ आ अहाँ सभक घर-परिवार बला सभक खेयाल सँ नीक इएह होयत जे अहाँ सभ एहि बच्चा सभक धैरजक परीक्षा लेब बन्न करू। ओना जँ अहाँ सभ केँ निखत्तर जयबाक सिहन्ता होअय कि निछक्क जयपंथी-ए घेरने होअय त' शुरू भ' जाउ, हम सभ गोटे बीच सँ हटि जाइ छी....।'' आ बजैत-बजैत मधुरेश जीक कंठ भरि आयल छलनि आ ओ कननमुँह भ' गेल छलाह।

तरे-तरे भयभीत मुदा उपर सँ शेर बनल डी.एस.पी. मौकाक कमजोरी भाँपिक' दुनू गिरफ्तार बन्हक केँ छोड़बाक गप मानि लेने छल।

अनगिनत लाठीक चोट सँ ओधबाध देह लेने दुनू युवक पुलिस जीप सँ उतारि देल गेल छल आ रसे-रसे चलिक' अपन प्रतीक्षारत संगी-साथी सभ सँ जाय मिझरायल छल। ओकर दुनू डबडबायल चारि टा आँखि आब बरसल...तब बरसल।

सड़क पर जकथक ठाढ़ नवतूर सभ प्रसन्नताक आवेग मे नाचब, कूदब, उछलब शुरू क' देने छल। विजयक उल्लास ककरो ओहि नोर पर ध्यान देबाक पलखति नहि देलक। धधकैत ज्वालामुखी, जकरा समुद्र चाही छल, दू-ए बुन्न पाबिक' नेहाल भ' गेल छल।

वार्त्ताक लेल अनिवार्य नवतूर सभक पहिल शर्त अंतिम शर्त प्रमाणित भेल।

नवतूर सभ विजयोल्लास मे नचैत चलि जाइत हाँजिक पाछाँ-पाछाँ अपन-अपन घर दिस घुरबाक लेल ससरय लागल छल।

तमसगीर सभ तमासा खतम बुझि छिड़िआबय लागल छल।

अपन दू टा संगीक आगवानी मे दौगैत भीड़क हबगबक माँझ प्रशासनक कारपरदार सभ पहिनहि गांधी मैदान सँ चंपत भ' चुकल छलाह।

सफेदपोश सभक द्वारा पूर्ण रूपेँ खारिज कयल गेल गोट दर्जन भरि लोक-सभक गोल आइ अपना-आप केँ सांचे खारिज मानिक' हारल जुआरी जकाँ चलि पड़ल छल।

तखने कमलक दृष्टि ओहि छौंड़ा पर पड़लै जे गर्दा झाड़ि देबाक बात कहैत गोटेक घंटा पहिने ओकरा धक्का देने छलै। ओकरा देखिक' कमलक हृदय मे अकस्मात करूणा उमड़ि आयल छलै। केहन अभागल अछि ई बच्चा सभ जकरा लग दू टा शिष्ट शब्दक संपत्ति धरि नहि। केहन कटयबला अछि एकरा सभक जीवन! केहेन होयत एकर सभक भविष्य!

इएह सभ सोचैत कमल ओहि छौंड़ा लग पहुँचल छल। खूब सिनेह आ आपकता सँ ओकर कान्ह पर हाथ राखि पुछने छलै–''किनकर बालक छह तोँ, हओ?''

छौंड़ा बमकि उठल छल आ चिकरिक' बाजल छल–''अहाँ केँ मतलब? जाउ, अपन काज करू ग'।''

छौड़ाक तेज स्वर सुनिक' एकटा आन युवक सभ ओतय आबि गेल छल। आबयबला सभ मे केओ कमल सँ पुछने छलै–''की बात छै, भाइ साहब?''

''किछु नहि, किछु नहि। हम मात्र एहि बच्चाक परिचय जानय चाहैत रही।''

मुदा ओ युवक संतुष्ट नहि भेल। ओ एक बेर ओहि छौंड़ा दिस तकलक, फेर कमल सँ पुछि बैसल–''किछु त' बात होयत, भाइ साहब। नहि त अहाँ सन लोक एहन सी-किलासी अधकपारी सभक परिचय किएक जानय चाहत? हम सभ चिन्हय छिअइ एहि अगत्ती केँ, जरूर ई अहाँक संग कोनो बेहुदपना कयने होयत।''

कमल कहय चाहैत छलै जे जखन लोग कोनो सार्वजनिक उद्देश्य सँ बहराइत अछि तखन आपसी आ सामाजिक सम्बन्ध आओर प्रगाढ़ होयबाक चाही–सामान्य स्थितिक तुलना मे आर बेसी। ई नहि जे सामाजिक-सार्वजनिक काज केँ नेतगिरीक धंधा वा कोनो अराजक मनमानीक काज बुझि सामाजिकता केँ बिसरि अनुशासनहीन भ' जाइ। ई सभ विशेष रूप सँ नव पीढ़ीक संज्ञान मे रहबाक चाही। आरो बहुत रास बात कहय चाहैत छल कमल मुदा सभटा

ओकर मोनहि मे रहि गेल छलै।

युवकक प्रश्न मे सम्मिलित टिप्पणी सँ लोहछिक' ओ छौंड़ा बिक्खनि-बिक्खनि गारि पढ़ैत ओहि युवक पर हाथ छोड़ि देने छल। ई देखि कमल त' हकबक रहि गेल छल मुदा युवकक संगी सभ ओहि छौंड़ा पर टूटि पड़ल छल आ ओकरा तूर जकाँ धुनब शुरू क' देने छल।

'साला! भाइ साहेब के साथ रंगदारी! पहचानता नहीं इनको।'

'मार सार कें। बड़ मोन बढ़ल छै।'

'मुँह थूरि दही।'

'देखहक! शंकरो भइया पर हाथ छोड़लक।'

'हाथ तोड़ मादर....कें'

'हओ बाप!'

'चिचिआबह स्सार, बजबह बाप कें।'

'जीभ खींच लो स्साले का।'

'....ब्बाप....।'

जाबत कमल ओकरा बचयबाक लेल आगाँ बढ़ल, लोक सभक डेन पकड़ि-पकड़ि हटौलक आ ओहि छौंड़ा कें घीँचिक' ऑक्टोपसी चांगुर सँ बहार कयलक, ताबत ओ छौड़ा अपनहि बयसक बंदा सभक मारि सँ ओधबाध आ अधमरू सन भ' चुकल छल।

गांधी मैदान पर दुपहरियाक रौद पसरि गेल छलै। हवा-बतास कें जेना हदक पैसि गेल छलै—ठमकल छलै। दूर-दूर धरि मनुक्खक कोन कथा, कोनो कागपंछी नहि देखाइत छलै।

अधमरू भेल छौंड़ा कें रिक्शा पर अस्पताल पठाक' झुरझमान जकाँ भेल कमल गांधी मैदानक दखिनबरिया कात बनल भगवती थानक चबुतरा पर आबिक' बैसि गेल छल। धीरे-धीरे गांधी मैदान आ एकर लग-पासक इलाका सुन्नमसान भ' गेल छल। सम्पूर्ण वातावरण कें जेना एकटा बजरगुम्मी गसिआय लेने छलै। निरंतर हबगब आ घोलफचक्का सँ दाहबोह रहैत कचहरी आ सरकारी कार्यालय सभ कें सेहो एखन जेना साप सूंघि गेल रहय—कोनोटा स्वर नहि। महाभारत समाप्त भेलाक बाद की कुरुक्षेत्रो एहिना निसबध भेल होयतैक! एतय की ओतय-के मरल-के मारलक-के जीतल-के हारल। सोचि रहल छल कमल।

मुदा सभटा प्रश्न निरर्थक थिक। कृष्ण कहने छलाह जे सभ किछु दृष्टिक भ्रम थिक। हारि-जीत, मरब-जीयब सभ माया थिक।

दूर स्टेशन पर कोनो ट्रेनक इंजन सीटी मारलक आ ओकर स्वर हवाक हलफी पर असवार भ' गांधी मैदान आबि गेलै। दुपहरियाक रौद कें हुथकारैत पुरबा बतास सिहकल। उतरबरिया कोन पर किछु धवल-धवल, उज्जर-उज्जर इजोत चमकलै। कमल हियासिक' ओम्हर ताकलक। चित्र स्पष्ट भेलै। उज्जर-धवल वस्त्र पहिरने, हाथ मे बैट-बॉल धयने बेदरा सभक एकटा गोल क्रिकेट खेलेबाक लेल मैदान मे प्रवेश क' रहल छल।

कमल गहबरित भ' उठल। आनन्दक अफान तोड़ैत एकटा नदी ओकरा भीतर मे अहुछिया काटय लागल। ओकर मोन भेलै जे खूब अहगर क' कानी।

बात एखन खतम नहि भेल छलै। शुरूहो नहि भेल छलै।

ई त' चलैत रहैत अछि, चलिते रहत—अनवरत।

अथ गिरगिट गाथा

आइ अपने सभ केँ जाहि दू गोटेक खिस्सा सुनब' चाहैत छी हुनक नाम छनि-मुकुन्द जयसवाल आ रामलखन पोद्दार।

मुकुन्द जयसवाल नामक एक गोटे एहि नगर मे जनवितरण प्रणालीक एकटा दोकानक डीलर सेहो अछि। भ' सकैत अछि जे किछु आरो लोक एहि नामक होइ मुदा हमर आशय श्री मुकुन्द जयसवाल उर्फ मुक्कन बाबू सँ अछि। पिताक राखल नाम जे स्कूल सभक रजिस्टर मे दर्ज भेल रहनि, ओहि सँ कम्मे लोक परिचित छथि। अधिकांश लोक हिनका मुक्कन बाबूक नाम सँ चिन्हैत छथि।

ओना मुक्कन बाबू केँ मुक्कन बाबूक नाम सँ प्रसिद्ध होयबाक खिस्सा सेहो बड्ड रोचक अछि। खिस्साक ई मजबूरी अछि जे ओ रामलखन पोद्दार नामक एक गोट महत्वपूर्ण पात्रक बिना पूर्ण नहि होइत अछि। रामलखन पोद्दार नामक कोनो आन बेकती एहि नगर मे उपस्थित होथि त' एकर जानकारी हमरा नहि। ओना एक जमाना मे एहि नामक एक गोट दरोगा एहि नगरक थाना मे आयल छल जे दू वर्षक दरोगइक बाद सस्पेंड भ' गेल आ एतेक माल-असबाव हँसोथि क' अपन जन्म स्थान दिस घुरि गेल छल जे हुनक उत्तराधिकारी लोकनि (घरैया, सरकारी नहि) केँ सात पुश्त धरि हाथ-पयर मारबाक बेगरता नहि रहल छलैक। जासूसी उपन्यासक हीरो (जे जासूसे होइत अछि) सँ इतर पात्र जकाँ किछु लोक आइयो ओहि दरोगा केँ बड़ श्रद्धा आ प्रेम सँ मोन रखने छथि।

तँ गप होइत छल रामलखन पोद्दार, बी.एस.सी. ऑनर्स बल्द किशन पोद्दारक। रामलखन सँ ई अपराध भेल छल जे चाह-पान बेचयबलाक बेटा होइतो ओ पहिला सँ ल' क' ग्रेजुएट धरि प्रत्येक वर्ष अपन कक्षा मे टॉप

कयने छल। एहि अपराध मे ओकरा कोनो कानूनक पोथी तँ सजाय नहि देलकै मुदा ओकर जूता एहि अपराधक शिकार भ' गेल छलै। नोकरी तकबाक मेराथन दौड़ मे ओ जूता खिआय गेलै। खिअयबाक प्रक्रिया जखन रामलखनक तरबा धरि पहुँचल तखन जाक' ओकरा अपन अपराधक बोध भेलै आ ओ हिन्दी सिनेमाक असफल प्रेमी जकाँ पहिने तँ चौक-चौराहा पर रंगबाजी शुरू करय लागल आ फेर अवसर ताकि दारूक भट्ठी मे हुलि-हुलि केँ अपन दुख मेटाब' लागल।

आब आउ, आगाँ बढ़बा सँ पहिने एहि नगरक हवा केँ अंदाज ली जत' उपरोक्त दुनू महापुरुष अपन जीवनक बेस दामी आ कि छुतहर दिन बितौलनि। जँ फराक-फराक नगरक हवाक फराक-फराक चरित्र होइतैक आ ओहि चरित्र केँ नापबाक कोनो यंत्र होइतैक त' ओ यंत्र एहि नगर-हवाक मादे निश्चित रूपेँ कहितैक जे एहि मे कायराना भद्रताक पचहत्तर प्रतिशत, स्वार्थाना यारीक बीस प्रतिशत आर मिसलेनियसक वाइरस पाँच प्रतिशत अनुपात मे उपस्थित छैक। ओना हवाक जुगराफिया बता क' साइत हम खिस्साक क्लाइमेक्स बिगाड़ि रहल छी।

आउ, मूल खिस्सा दिस चली।

ई नगर रेलवे सँ जुड़ल अछि तेँ एतय एक गोट रेलवे स्टेशन सेहो छैक। स्टेशन सँ पश्चिम दीनबन्धु चौक दिस जाय बला सड़क नगरक मुख्य सड़क अछि। एहि सड़कक मध्य सँ एकटा सड़क दक्षिण दिस जाइत अछि—हटियाक दिस।

प्रत्येक सप्ताह मे दू दिन-मंगल आ शुक्र केँ एतय हटिया लगैत अछि। नगर, जे शताधिक वर्ष पुरान अनुमंडल मुख्यालय हो, ओतय देहाती तौर-तरीकाक हटिया लागब कने अद्‌भुत अवश्य लगैत अछि मुदा छै तँ सत्ते। जे से, एहि हटिया-स्थल सँ सटले उत्तर एकटा गोदाम जकाँ मकान अछि, जाहि मे अछि—पुलिस फांड़ी आ एहि पुलिस फांड़ी सँ सटले उत्तर ओहि समय छल—फेकू चौधरीक दारू भट्ठी।

ओहि समय धरि मुकुन्द जयसवाल अपना केँ महत्वपूर्ण देखयबाक-जतयबाक अनेक लूरि सिखि चुकल छलाह। एहि मे सँ एकटा लूरि छल-पुलिसबला सभ सँ हेम-छेम राखब। लोक एकरा पुलिसक दलाली कहय त' कहय—अपन मुँह

छै। मुदा मुकुन्द जयसवाल ओकरा 'कन्टैक' कहैत छलथिन। ओ ई सेहो जान' लागल छलाह जे गप-शपक क्रम मे बीच-बीच मे अंग्रेजी शब्दक प्रयोग सँ बात भरिआइत अछि। एहि लेल 'होमसिकनेस', 'ब्लाइंड चेक', 'कन्टैक' 'पावर', 'पोलटिक्स' आदि शब्दक प्रयोग ओ खूब धुरझार करैत छलाह।

हँ तँ, ओहि साँझ मुकुन्द जयसवाल अपन मोहल्लाक किछु मुँहजोर छौंड़ा सभ कें चोर-उचक्का सभक पुलिसिया फेहरिस्त मे शामिल करयबाक लेल पुलिस फांडी आयल छलाह आर अपन पुरान 'कन्टैक' कें भजबैत छलाह। अन्ततः अनेक 'डिसकस'क बाद ओ टाउन हवलदार कें 'कन्भीन्स' क' देलथिन जे हुनक मोहल्लाक ओ छौड़ा सभ मस्तमौला आ आजादखयाल नहि अपितु 'हारडेन कीरमीनल' छल आ 'हजारडस टू सोसाइटी' सेहो।

'सोसल वर्क' सँ फराकैत भ' क' फांड़ी सँ एम्हर बहरयला मुकुन्द जयसवाल आ ओम्हर तीन बोतल फिफ्टी पीबिक' फेकू चौधरीक दारू भट्ठी सँ बहरायल रामलखन पोद्दार।

दुनू सोझाँ-सोझी भेलाह।

रामलखन पोद्दार तँ ओहि काल अपना कें शहंशाह शाहजहाँ बुझि रहल छल आ ताजमहल धरि पहुँचबाक धुन मे टुन्न छल। ओ लड़खड़ाइत अपन झोंक मे आगाँ बढ़ैत चलि गेल।

मुकुन्द जयसवाल कें बड़ क्रोध भेलनि। ई साँच अछि जे हुनका लग संस्कृत विधालयेक सर्टिफिकेट छल मुदा एतेक तँ ओ बुझिते छलाह जे 'भीआईपी' लोक सभ आन लोक सँ 'हॉनर' पयबाक हकदार छथि आर पोद्दरबाक ई मजाल जे हुनका प्रणाम नहि करबाक गुस्ताखी करय!

ओ रामलखन पोद्दार कें हाक देलथिन। पोद्दार पूरा ताकति लगाक' स्वयं कें ब्रेक मारलक, फेर बैक गीयर लगयबा मे सेहो ओकरा बड़ श्रम कर' पड़लैक। बड़ मोसकिल सँ ओ अपना कें हाकक दिशा मे टर्न कयलक।

ओकर बाद दुनू महापुरुषक बीच भेल संवादक ब्यौरा निम्न प्रकार अछि–

''तों किशन पोद्दारक बेटा लखना छी रे?''

''तों के भडुवा छें पुछएबला रे?''

''बेकुफ ! तों दारू पीने छी रे?''

''तोहर बापक त' नहि पीलौं रे?''

''कमीना ! बाप धरि पहुँचैत छें, सार?''

''हमर मोन, अपन रास्ता ले नहि तँ तोरा माय धरि पहुँचबौ।''

''ठहरह हरमजादे!''

''आबह तँ दोगले!''

फेर दुनूक हाथ-पयर चलब शुरू भ' गेलै। जा धरि लोकक भीड़ जुटय, ताबत दुनू गोटे आक्रमण प्रति-आक्रमणक बेस नम्हर दौर झेलि चुकल छलाह। आबयबला सभ कें बीच-बचावक अवसर धरि नहि भेटलैक। पहुँचएबला लोक सभ देखलक जे मुकुन्द जयसवालक नाक सँ खून बहि रहल अछि आ ओ कतकी जेबी सँ रुमाल निकालिक' ओकरा पोछैत छलाह। रामलखन पोद्दार धरती पर लंबायमान छल। चिन्तित भ' क' लोक सभ ओकर अवस्थाक प्रति अनुमान करिते छल कि ओकर नाक सँ फोंफ काटबाक स्वर आब' लगलै। ओ सूति रहल छल आ सपना मे साइत ताजमहल पाबि गेल छल।

जुटयबला भीड़ मे आधा फांड़ीक पुलिसबला सभ छल आ आधा दारूक भट्ठी सँ बहरायल लोक सभ। भट्ठी सँ बहरायबला सभक सहानुभूति रामलखन पोद्दारक पक्ष मे छल तँ पुलिसिया सभक मुकुन्द जयसवालक पक्ष मे। टाउन हवलदार मुकुन्द जयसवाल सँ एक कात मे जाक' गप कयलक आ घुरिक' एक गोट सिपाही कें आदेश कयलक।

रामलखन पोद्दार कें गिरफ्तार क' हाजत पठा देल गेल जतय ओ राति भरि सूतल रहल। भोर मे ओकर बाप पुलिसबला सभ कें फूल-पत्ती चढ़ाक' ओकरा छोड़यलक।

ओहि दिन साँझ कें दारूखाना मे रामलखन पोद्दार बोतल खोलैत अपन यार सभ कें बतौलक–'सार भी.आई.पी. बनैत अछि। राति सार कें एतेक ने घूंसा लगौलियैक जे थोबड़ा बिगड़ि गेल हेतैक सारक। चोट्टा नहितन।'

ओहि दोसर दिन मुकुन्द जायसवाल नागरिक सभक एक गोट सभा कें संबोधित करैत बजलाह–''ई नशाखोरी एकटा अभिशाप थिक आ नशाखोर एहि समाजक कोढ़। नशाखोरी करयबला अपन परिवार कें त' तबाह करिते अछि, 'आउट' भ' गेलाक बाद 'सोसाइटी'क लेल 'डेन्जरस' भ' जाइत अछि। काल्हि हम एक गोट एहने नशाखोर कें पाठ पढ़ा देलियैक। दू-चारि मुक्का देलियैक कि लम्बलेट भ' गेल। आब ओ फेर कहियो एहन गलती करबाक साहस नहि क' सकत। हम नगरक 'कन्सस' लोकनि सँ अपील करै छी जे एहि तरहक लोकक मरम्मतिक लेल अपने सभ, अपन-अपन मुक्का कें मजगूत करी आ आवश्यकता पड़ला पर ओकरा 'यूज' करी।

मुक्का! ....मुकुन्द! ....मुक्कन! ....मुक्कन बाबू!

शुरू मे लोक सभ 'मुक्का-मुक्की', मुक्का-मुक्कन' कहि-कहिक' आपस मे मजाक कयलक, फेर धीरे-धीरे गंभीरता सँ एकर प्रयोग होमय लागल। मुकुन्द जायसवाल 'मुक्कन बाबू' भ' गेलाह।

प्राय: एक हफ्ताक बाद मुकुन्द जयसवाल उर्फ मुक्कन बाबूक नेतृत्व मे 'नशा विरोधी नागरिक मंचक बैनरक नीचाँ, सोलह बेकती दारू भट्ठीक आगाँ धरना पर बैसि गेलाह, जाहि मे मुक्कन बाबूक अलावे हुनक सात गोट पितिऔत-ममिऔत-पिसिऔत-मसिऔत भाइ लोकनि, दू टा हरबाहा, धन-कुट्टा मशीनक एकटा आपरेटर, तीन कुख्यात मित्र आ कुलपुरोहितक दू टा लफंगा पुत्र सम्मिलित छल।

चारि बजे अपराह्न धरि धरनार्थी सभक नारेबाजीक बादो धरना शांतिपूर्ण रहल। चारि बजेक बाद बात बिगड़ि गेलैक। ठीक चारि बजे रामलखन पोद्दारक नेतृत्व मे छत्तीस बेकतीक एक गोट जत्था अपन अधिकारक रक्षाक लेल ओतय पहुँचि गेल आ दारू भट्ठीक भीतर घुसबाक प्रयास करय लागल।

'नशा विरोधी नागरिक मंच' ओकरा सभ कें रोकबाक प्रयास कयलक मुदा 'नशाखोरी अधिकार सुरक्षा समिति' बला अपन पीबाक अधिकारक रक्षाक शपथ लए चुकल छलाह। युद्धक संभावना कें देखैत तैयारी दुनू पक्ष दिस सँ रहय। 'नशा विराधी नागरिक मंच' कें लग मे पुलिस फांड़ी होयबाक नैतिक आ अतिरिक्त बल उपलब्ध छलै तँ पुलिस फांड़ी नामक कटु यथार्थ सँ 'नशाखोरी अधिकार समिति' अतिरिक्त रूपें सतर्क छल आ किछुए काल मे निर्णायक युद्ध क' लेब' चाहैत छल।

से युद्ध जेटक गति सँ भेल आ पाँचे मिनट मे मारते रास बात भ' गेल। शुरू मे किछु काल धरि घमासान दुनू दिस सँ भेलै। फेर 'नशा विरोधी नागरिक मंच' बला सभ कें पता चललैक जे ओकर सभक सेनापति-ए लंक ल' क' पड़ा गेल अछि आ ओकर सभक पयर उखड़' लगलै। एहि बात सँ 'नशाखोरी अधिकार सुरक्षा समिति' बला सभक हौसला आकाश पर पहुँचि गेलै आ ओ सभ जोश मे आबि क' धरपटांग उठा देलक।

'नशा विरोधी नागरिक मंच' मे भाड़ाक लोक नहि अपितु मुक्कन बाबू सँ खून आ पेटक सम्बन्ध सँ बन्हायल लोक सभ छल। फांड़ी बला सभ कें मुक्कन बाबू अपन शक्तिक प्रति आश्वस्त कयने रहथिन आ युद्ध प्रारंभ भेलाक दस मिनटक भीतरे मैदान मारि लेबाक दावा कयने रहथिन। से युद्धक परिणामक प्रति आश्वस्त तमाकू चुनबैत पुलिस पहुँचल दसक बदला पंद्रह मिनटक बाद।

ताबत युद्धस्थल सँ युद्धक सभ निशान मेटा चुकल छल।

ने कटल-फटल-टूटल अंग, ने साबूत लहास। मैदान एकदम सफाचट।

एक-दोसर कें तमाकू बँटैत पुलिसबला सभ नहुँ-नहुँ टहलैत दारू भट्ठीक भीतर 'दरबार-हॉल' मे पहुँचल तँ ओतय छत्तीस गोटय बड़ आश्वस्त भाव सँ अपन 'पीबाक अधिकार'क उपयोग करैत दृष्टिगोचर भेलाह।

टाउन हवलदार चकरायल। फेर ओ बड्ड कड़क आवाज मे पुछलक–

"अभी यहाँ मार-पीट हुई है?"

"जी? नहीं तो।"–रामलखन पोद्दारक शांत-संयत उत्तर।

"तो यहाँ हो-हल्ला क्यों हो रहा था?"–हवलदारक प्रश्नक स्वर एहि बेर बदलल छल।

"आपको गलतफहमी हुई है, हवलदार साहब। हम तो यहाँ शांतिपूर्वक बैठ कर शहर के सौन्दर्यीकरण की योजना बना रहे हैं। क्यों भाइयों?"

पैंतीस गोटयक माथ सहमति मे एकहि संग हिलल।

"लेकिन हमने तो अभी भारी शोर-शराबा सुना था।"–सिटपिटायल सन हवलदार बाजल।

"जरूर शराबी होंगे, हवलदार साहब। अंग्रेजी पीकर अलबला रहे होंगे साले-हरामजादे।"–रामलखन पोद्दार एहि तरहें बाजल जेना मामिलाक तह मे पहुँचि गेल हो।

"ठीक है। ठीक है। तुम लोग जरा ठीक से रहना। समझे।"–आ बौखलायल हवलदार किछु नहि बुझि सकबाक सन स्थिति मे अपन सिपाही सभक संग घुरि गेल।

पुलिस-हीन वातावरण पबिते रामलखन पोद्दार अपन हाथक दू गोट आंगुर उपर उठाक' बाजल–"वी फोर विक्टरी, चीयर्स।"

फेर नगर मे तेजी सँ घटना सभ घट' लागल। नगरक फराक-फराक जगह पर प्रतिदिन दर्जनक हिसाब सँ 'मारि-पीट समारोहक' आयोजन होअय लागल। आठ-दस लोकक कोनो हँजि निकलय आ बिना कोनो पूर्व भूमिकाक दू-चारि गोटय कें खूब नीक जकाँ पीटि कें घटनास्थल सँ अलोपित भ' जाय।

मुन्नाक पानक दोकान पर ठाढ़ एक गोट रंगबाजी-स्पेशलिस्ट सुब्रत मुखर्जी अपन शिष्य सँ एतेक क्षीण स्वर मे बाजल जे कात-करोट मे ठाढ़ लोक

सभ साफ-साफ सुनि सकथि–'बन्दे को सब मालूम है जी नगेन्दर। ये तो गैंगवार है-गैंगवार। एक तरफ मुक्कन बाबू के चेले-चपाटे हैं तो दूसरी तरफ रामलखन पोद्दार के लफाड़िये। चेलों का जत्था मजबूत हो तो लफाड़ियों का धुलइया और लफाड़ियों की टीम भारी हो तो चेलों की फीजियोथेरापी हो जाती है।'

नगरक शब्दकोश मे शब्दक बढ़ोत्तरी-ए टा नहि होइत रहय अपितु भावी पीढ़ी मे भयानक रूप सँ लोकप्रिय आ प्रचलित सेहो होइत रहय। 'चेला, जत्था आ धुलइया' क आविष्कारक छलाह मुक्कन बाबू आ 'टीम, लफाड़िये, फीजियोथेरापी'क जन्मदाता छलाह रामलखन पोद्दार।

ई सभ चलिते छल कि तीस वर्ष सँ तदर्थ संचालन मे चलैत नगरक नगरपालिका मे प्रजातंत्र आनबाक लेल सरकार चुनावक घोषणा क' देलक।

जेना कि सभ मतदाताक संग होइत अछि, साइत अपने सभ कें सेहो ज्ञात नहि हो जे चुनावक माध्यम सँ सरकार बनि कोना जाइत अछि। एना एहि खिस्साक माध्यम सँ अपने कें पॉलिटिकल साइंस पढ़यबाक वा अपनेक जेनरल नॉलेज बढ़यबाक हमर कोनो उद्देश्य नहि। नगरपालिका चुनावक संदर्भ मे मात्र एतबे टा कहि दी जे एकटा निश्चित जनसंख्याक आधार पर नगर कें अनेक वार्ड मे विभक्त क' देल जाइत अछि। प्रत्येक वार्ड सँ वार्ड कमिश्नर नामक प्रतिनिधि कें जनता चुनिक' (?) पठबैत अछि। इएह वार्ड कमिश्नर लोकनि बाद मे अपनहि बीच सँ चेयरमैन, वाइस-चेयरमैन कें चुनैत छथि।

त' एहि नगर मे नगरपालिका चुनावक घोषणा भ' गेल छल आ संपूर्ण नगर कें बाइस वार्ड मे विभक्त कयल गेल छल।

उम्मीदवारीक पर्चा दाखिल भेलाक पश्चात प्रत्याशी सभक जे सूची प्रत्यक्ष भेल ओहि सँ ई स्पष्ट भ' गेल जे बाइसो वार्ड मे मुक्कन बाबूक चेला सभ आ रामलखन पोद्दारक लफाड़ि सभ मुँहा-मुँही भिड़न्त मे छल। दुनू महापुरुषक सिपहसालार सभक संभावित युद्धक कल्पना मात्र सँ त्रस्त भ' क' अलाय-बलाय छुटभैया सभ अपन-अपन पर्चा वापस क' लेने छल।

स्वयं मुक्कन बाबू तेरह नंबर वार्ड सँ आ रामलखन पोद्दार सतरह नंबर वार्ड सँ ठाढ़ छलाह।

फेर चुनाव जोर पकड़ि लेलक। परचा, पोस्टर, बैनर आ भोंपूक दौर शुरू

भेल तँ लागल जे रामलखन पोद्दार आ ओकर लफाड़ि सभ अपन प्रतिद्वन्दी सभक मोकाबला मे कमजोर पड़ि रहल छथि।

आ तखन नगरक हवा मे 'स्वार्थाना यारी'क वाइरसक प्रतिशत तेजी सँ उछलि क' बढ़ल।

रातिक अन्हार मे मुक्कन बाबूक मेटाडोर रामलखन पोद्दारक घर पहुँचल। मेटाडोर रामलखन पोद्दार कें अपन पेट मे नुकयलक आ अत्यंत वेग सँ मुक्कन बाबूक विशाल कोठी मे प्रवेश क' गेल।

ड्राइंगरूमक गुदगर सोफासेट पर बैसल मुक्कन बाबू गंभीर छलाह। रामलखन पोद्दारक आगाँ मे राखल 'शीवाज रीगल'क बड़का बोतल खाली भ' चुकल छल आ ओ सोफा पर पीठक भरें लुढ़कल सन पड़ल छल। ओकर आँखि बन्न छलै।

मुक्कन बाबू हल्लुक सँ खखसि नहुँ-नहुँ बाजए लगला–''रामलखन बाबू! आब तँ हम एक-दोसराक मित्रता पर विश्वास क' सकैत छी ने?''

कोनो जवाब नहि।

मुक्कन बाबू पुन: अपन प्रश्न दोहरौलनि। जबाव एहिबेर रामलखन पोद्दारक फ़ोंफ देलक।

एकर बादक खिस्सा बड़ छोट-सन अछि। मुक्कन बाबू कें अपन वार्ड मे पोद्दार सभक वोट चाही छल, से रामलखन पोद्दार दिया देलक। रामलखन पोद्दार कें अपन वार्ड मे जयसवाल सभक वोटक संग-संग पर्चा, पोस्टर, बैनर आ भोंपूक हाहाकारी प्रभाव लेल नगद नारायणक आवश्यकता छलै जे मुक्कन बाबू दिऔलनि।

आइ-काल्हि मुक्कन बाबू नगरपालिकाक चेयरमैन आ रामलखन पोद्दार वाइस-चेयरमैन छथि। नगर मे अभूतपूर्व शांति अछि।

अय्यासी

ओ जखन घर सँ बहरायल त' बड़ खौंझायल छल। ओकरा अपन मुँह मे किछु अवांछित तत्वक उपस्थितिक आभास लगैत रहै–जेना खूब सुअदगर खीर खाइत काल अकस्मात दाँतक त'र मे कंकड़क कोनो नम्हर टुकड़ा आबि गेल हो।

ओ थुकड़िक अपन मुँह केँ ओहि तत्व सँ खाली क' लेब' चाहलक मुदा ओकरा एहि मे सफलता नहि भेटलैक। एहि काल्पनिक तत्वक अनुभव सँ बचबाक लेल ओ जेबी सँ एकटा लौंग निकालिक' दाँतक बीच मे राखि लेलक।

कने काल पहिने धरि ओ बड़ नीक मूड मे छल आ एकटा पुरनका सिनेमाक कोनो गीत गुनगुनबैत छल। पड़ोसियाक फोन पर ओकरा अपन दोस सँ गप भेल रहै। दोस कहने छलै, ''आबि जाह। हमहूँ पलखति मे छी। बैसिक' गप गढ़ब। हँ, एम्हर सिकरेट नहि भेटैत छैक। आब' काल सिकरेट नेने अबियह।''

ओ जखन-जखन अपन दोसक संग बैसैत छल, मौज मे आबि जाइत छल। समय-काल बिसरिक' कतेको घंटा गप मे लागल रहैत छल। पछिला कतेको दिन सँ पलखति मे बैसिक' गप लड़यबाक अवसर नहि भेटल छलै। आइ गप्पबाजीक निमंत्रण पाबिक' ओ हल्लुक-सन अनुभव करैत छल आ गुनगुनाहटि ओकर ठोर पर अँगैठी-मोड़ कर' लागल रहै कि तखने पत्नी आबिक' ओकर मूड आ मुँहक सुआद बिगाड़ि देने छलै–''घर मे तेल-मसल्ला खतम भ' गेल अछि आ अहाँ गुनगुना रहल छी!''

ओकर ब्लड-प्रेशर हाइ भ' गेल छलै मुदा ओ चुप रहल।

पत्नी केँ प्राय: लगलैक जे ओ गलत अवसर पर सही गप बाजि गेल अछि। ओ अपन स्वरक तनल तार केँ ढील करैत बाजलि–''किरानाक सामान

काल्हि-परसू सेहो आबि जाय त' कोनो हरज नहि। तरकारीक लेल कम सँ कम एकटा दसटकही तँ देबहि पड़त।''

ओ बमकि उठल–''पाइ! पाइ! पाइ! हमरा की पाइ जनमाब' बला मिशीन बुझि लेने छी अहाँ लोकनि! एखन कत' सँ आओत हमरा लग पाइ?''

फेर ओ दोसक ओतय जयबाक लेल कपड़ा पहिर' लागल छल।

पत्नी किछु काल धरि ओकरा दिस तकैत रहलि, फेर चुपचाप कोठली सँ बहरा गेलीह।

ओ खुट्टी पर सँ उतारि क' कुर्ता-पैजामा पहिरलक, फेर जेबीक हालचाल जानबाक लेल ओहि मे हाथ देलक। कुल बीस टका। एतबे जमा-पूँजी छल ओकरा जेबी मे, जकरा ओ चारि-पाँच दिन सँ बचाक' रखने छल–कोनो इमरजेंसी लेल। बीसटकही केँ जेबी मे आपिस् रखैत ओ चोर-दृष्टिएँ चारूकात तकलक।

केबाड़ीक पल्ला सँ सटिक' ठाढ़ बेटा पर नजरि पड़िते ओ कने धकचकायल।

''पापा ! ओ किताब आ कॉपी सभ....।'' बेटा किछु कह' चाहलकै मुदा ओकर कठोर आँखि दिस देखिक' हड़बड़ायल सन ओतय सँ लंक लेलक।

आब ओ जरैत-सुनगैत, घर सँ करगर रौद मे बहरा आयल छल। दाँतक नीचाँ आयल लौंग केँ ओ एहि तरहेँ पीसलक जेना ओकर दाँतक बीच मे सौंसे सृष्टि-ए आबि गेल हो। रौदक धाह आ आगि उगिलैत हवा ओकर जी केँ खराब क' देलकै। जेना-तेना ओ पटेल चौक पहुँचल। घाम सँ भीजिक' तावत ओकर कुर्ता ओकर देह सँ सटि गेल रहै। खादीक कपड़ा केँ ओ एयरकंडीशनर कहैत छल–जाड़ मे गरम आ गरमी मे शीतल मुदा आइ ओकरा अपने कहल पर शंका भेलैक। जेबी सँ रूमाल बाहर क' ओ अपन चेहरा पर बरकैत घाम केँ पोछलक आ रेलक पटरी केँ टपैत महात्मा गांधी चौक पहुँचल।

चौकक एक कात मे कोनो दर्जन भरि रिक्शाबला सभ अपन-अपन रिक्शाक टॉपर तानिक' सुस्ताइत सवारीक प्रतीक्षा करैत छल। मोन त' छलै मुदा रिक्शा करैत ओ कने हिचकिचायल। ओकर एकटा हाथ अपन ओहि जेबी पर गेलै जाहि मे बीसटकही राखल छलै आ दोसर हाथक आंगुर यंत्रवत रिक्शाबला केँ संकेत सँ लग बजौलकै।

रिक्शा पर बैसिक' ओ कनियें दूर गेल छल कि ओकर नजरि पानक

दोकान दिस गेलै आ ओकरा दोसक सिकरेटक फरमाइस मोन पड़लै। ओ रिक्शा रोकबा पानक दोकान पर आयल।

''किएक ने सिकरेटक सौंसे डिब्बे कीनि ली? दोस प्रसन्न भ' जायत।'' - ओ सोचलक।

फेर जेबीक खेआल अबिते ओ अपन इच्छा कें आँकुस लगौलक। सामान्यत: ओ दोस ओतय जयबाकाल एकटा सिकरेट किनैत छल जकरा दुनू गोटे मिलिक' बेरा-बेरी पिबैत छल। बचत करबाक खेआल सँ नहि, अपितु ओकरा सभक ई आदति-ए बनि गेल छलै मुदा आइ ओकरा लगलै जे सौंसे डिब्बा जँ नहि त' दूओटा सिकरेट त' लइये लेबाक चाही।

ओ दोकनदार सँ दूटा सिकरेट माँगलक आ बीसटकही बढ़ा देलक। दोकनदार दू टाका काटिक' ओकरा अठारह टाका घुरा देलकै।

आपिस रिक्शा पर आबिक' बैसैत काल ओकरा लगलै जे दूटा सिकरेट कीनि कें फिजूलखर्ची करबाक कोनो औचित्य नहि छल—काज एकोटा सिकरेट सँ चलि सकैत छलै।

रिक्शा ओकरा ल' क' आगाँ बढ़ल। तेज हवाक धाह ओकरा चेहरा सँ टकरायल। ओ रिक्शाक टोपर कें आगाँ खिचबाक असफल प्रयास कयलक। फेर खिसियाक' ओ जेबी सँ रूमाल बाहर कयलक, घाम पोछलक आ नाक कें खुश्की सँ बचयबाक लेल ओहि पर रूमाल राखि लेलक।

ओकरा मोन पड़लैक जे अपन विवाह काल लोकक निर्देशानुसार ओ अपन मुँह कें रूमाल सँ एहिना झँपने रहैत छल। तखन वर सभ विवाह काल एहिना करैत छलै।

ई गप मोन पड़िते ओ लजा गेल आ रूमाल कें नाक सँ हटा लेलक।

अपन परिचित किताब दोकानक आगाँ अबिते ओ आदतिवश रिक्शा कें रोकबौलक। दोकनदार ओकरा देखि कें मुस्किआयल।

''अहाँक फेवरिट पत्रिका 'मोर' आबि गेल अछि, हुजूर। एकेटा प्रति भेटि सकल— ओहो बड्ड मोसकिल सँ।''

ओ सोंचलक जे पत्रिका किनबाक गप काल्हि पर टारि देअय मुदा जँ दोकनदार एकरा दोसरा हाथ सँ बेचि लेअय तखन? फेर बाद मे नहि भेटत तखन? ओहिनो ओ एहि पत्रिकाक प्रत्येक मासक प्रति कें फाइल क' क' रखैत अछि। उधार ल' ली मुदा पहिने कहियो उधार नहि लेने छी। जँ दोकनदार नहि देअय तखन...।

ओ इतस्तितह करैत दोकनदारक बढ़ायल हाथ सँ पत्रिका ल' लेलक आ बारह टाका निकालिक' दोकनदारक हाथ मे थमा देलक। टाका दैत काल ओकरा अपन शोणित सुखाइत जकाँ लगलै।

बेचैन डेगें घुरिक' ओ रिक्शा पर आबिक' बैसि गेल। रिक्शाबला पैडिल चलबैत रिक्शा आगाँ बढ़ौलक। दोसक घर लग आबि रहल छलै आ ओकर भीतर पश्चातापक भूत अपन माथ उठा रहल छलै।

कोन बेगरता छलै पत्रिका किनबाक? एहि मासक अंक नहि लितय त' की प्रलय आबि जाइत? की राखल अछि कागत पर छापल एहि अक्षर सभ मे—कारूक खजाना! एतेक दूर पयरे चलि अबैत त' की मरि जाइत ओ? एतेक लोक जे अबरजात क' रहल अछि सड़क पर, ओ सभ की मनुक्ख नहि? एकटा वएह शहंशाह जनमल अछि एहि धरती पर! बांकी लोक सभ फकीर अछि की? मूर्ख! इडियट!! नबाबी छटैत छैथि!!!

दोसक घर आबि गेल। ओ रिक्शा सँ उतरल आ रिक्शाबला कें टाका बढ़ौलक।

''बड्ड गरमी छै हजूर! जानवर जकाँ टानिक' आनलौं हन। कम सँ कम चारि गो टका त' देबे करियौ, हजूर।'' रिक्शाबला कहलकै।

ओकर इच्छा भेलै जे झगड़ा क' लेअय मुदा फेर रौद मे तपल रिक्शाबलाक लाल भ' गेल चेहरा आ फुलैत दम देखि ओ थम्हल आ ओकरा चारि गोट टाका द' देलकै।

दोस खुलल हृदय सँ आगाँ बढ़ि मुसकाबैत ओकर स्वागत कयलकै। ओ सेहो प्रत्युत्तर मे मुस्किआयल-मुद्रा यंत्रवत।

ओ दुनू गोटे कोठरी मे आबिक' बैसल, जतय पंखा फुल-स्पीड मे चलि रहल छलै। पंखाक हवा सँ ओ किछु आफियत अनुभव कयलक। दोस चहकि रहल छलै मुदा ओ चुप छल। ओकरा अनुभव होइत रहैक जे ओ अपन जेबी-ए जकाँ खाली भ' गेल अछि। आइ सँ पहिने एहि कोठरी मे आबिक' ओकर सभटा गेंठ फुजि जाइत छलै, ओ उत्साह आ आनन्द सँ भरि उठैत छल मुदा आइ जेना बाहरक तिक्ख रौद ओकर भीतरक ओहि अजस्र स्त्रोत कें सोखि लेने छलै जाहि मे भीजिक' दुनू दोस आनन्दातिरेक सँ भरि जाइत छल।

दोस बड़ सिनेह आ अधिकार सँ सिकरेट मँगलकै। ओ बड़ औपचारिक भ' क' दुनू सिकरेट निकालि मित्र दिस बढ़ौलक। सिकरेट कें दोसे सुनगौने छल। फेर दुनू गोटे बेरा-बेरी सँ ओकरा पीलक। दोस गप कयने जा रहल

छल मुदा ओ ओहि मे सम्मिलित नहि भ' पाबि रहल छल। एकभगाह गपक क्रम जल्दी-ए टूटि गेलै। दोस कें ई गप खटकलै आ ओ एकर कारण जान' चाहलक। ओ बहाना क' गेलै।

ओकर हाथ अनायास अपन जेबी मे चलि गेलै। हाथ मे आयल दूटकही जेना ओकर मुँह दुसलकै। ओकरा घरक लेल तरकारी आ बेटाक किताब-कापीक खेआल अयलै आ ओ अपन कनपटी लग एकटा धाहक अनुभव कयलक।

दोस दोसर सिकरेट सुनगयबाक सहमति लेब' चाहलकै मुदा ओ उठि क' ठाढ़ भ' गेलै। दोसक अनुरोधक अछैत ओ ओकरा सँ बलपूर्वक अनुमति ल' ओकरा घर सँ बहरा गेल।

तिक्ख रौद सँ फेर ओकर सामना भेलै। ओ नहुँ-नहुँ चलैत अपन घर दिस घुरल। घाम सँ ओकर सौंसे देह कुंडाबोर भ' रहल छलै मुदा ओकरा एकर अनुभव नहि होइत छलै। महात्मा गांधी चौक भ' क' रेलवेक पटरी पार करैत ओ पटेल चौक सँ होइत स्वप्न मे चलैत मुनक्ख जकाँ गुजरल। घर पहुँचबा धरि ओ घाम सँ नहा चुकल छल।

घरक बरंडा पर आबि ओ एकटा कुर्सी पर धम्म सँ बैसि गेल। बरंडा पर आबि रहल हवा ओकरा दुलरौलकै। बड़ीकाल धरि ओ आँखि मुनिनहि कुर्सी पर बैसल रहल। नहुँ-नहुँ ओ अपन शरीर मे शक्ति कें आपिस अबैत अनुभव कयलक।

''भोजन तैयार अछि। हाथ-मुँह धो लिअ'। तावत हम थारी लगबै छी।।''

पत्नीक स्वर सुनिक' ओ अपन आँखि खोललक। पत्नीक चेहरा दिस नजरि गेलै आ ओ ओकर आँखि मे ताकलक। पत्नीक फुलल आ लाल भेल आँखि ओकरा अपराध बोध सँ भरि देलकै।

ओकरा बुझयलैक जेना ओ अय्यासी क' क' घूरल हो।

बैकबा-फोड़बा

मूल समाचार

शांति आ प्रेमक छाहरि मे जीबैत शहर अकस्मात सुनगि उठल छल। मित्र आ संगी सभक आँखि मे घृणा आ संदेहक कारी छाया पसर' लागल छल। मनुक्ख मनुक्ख नहि रहि खटाल सभ मे बँटि गेल छल।

सभ किछु अकस्मात भेल छल। एतेक तीव्र गति सँ जे अमनपसंद लोक सभ जाधरि मामिला कें बुझि किछु करबाक सोचितथि, स्वयं हुनक अपन वजूद कतहु ने कतहु एहि आगिक धाह सँ प्रभावित भ' चुकल छल। होशियार मात्र वएह लोक सभ छल जे मतायल हवाक पेट्रोल कें स्वार्थक सलाइक काठी देखौने छल। ओ काठी सभ अपन काज क' रहल छल आ ओकरा सुनगाबयबला अपन-अपन खोह मे सुरक्षित बैसल छल।

के जनैत छल जे तिलक एना ताड़ बनि जायत। एकटा सामान्य सन घटना एतेक पैघ आ खतरनाक रूप धारण क' लेत मुदा एहन भेल छल। आगिक धधरा सौंसे शहर कें अपन लपेट मे ल' लेने छल जाहि मे आपसी प्रेम आ शाति धू-धू' क' जरि रहल छल।

घटना

प्रकाश अगरवालक फर्म 'वृद्धिचन्द भँवरलाल वस्त्र भंडार' एहि शहरक प्राय: चालीस बरख पुरान कपड़ाक दोकान अछि। एक जमाना रहय जखन ई शहरक एकमात्र कपड़ाक दोकान छलै। ब्याह-श्राद्धक परंपरागत कपड़ाक अलावे लेटेस्ट फैशनक सूटिंग-शर्टिंग, साड़ी, बेड-शीट, पर्दा आ कालीन सन अनेक वस्तु एहि दोकान मे तखनो भेटि जाइत छलै। बदलैत जमानाक संग डेग सँ डेग

मिलाक' चलैत ई दोकान समय-समय पर अपना-आप मे परिवर्तन कयने छल आ कपड़ाक अनेक दोकान खुलि गेलाक बादो शहरक लोक सभक पहिल पसंद बनल रहल। पुरान दोकान होयबाक कारण एकर परिचित सभक दायरा बड़ नम्हर छलै। लोक देखिक' उधारी देबा मे दोकान कें कोनो हिचक नहि छलै।

प्रकाश अगरवाल अपन पुरखा सभक एहि दोकानक नवका मालिक छल। ओ अपना बुत्ते दोकानक साख बचौने राखि ओकर रूतबा ऊँच उठौने रखबा मे कोनो कसरि बांकी नहि रखने छल। ओकरे प्रयासक फल छलै जे दोकान चलैत नहि रहै बल्कि सरपट दौड़ि रहल छलै।

बदलैत समयक संग प्रकाश अगरवाल अनुभव कयलक जे उधारक मामिला मे आम लोकक नीयत मे खोट आब' लागल अछि। ओकर बही-खाता मे उधारीक रकम लाख ठेकि गेल छल आ ओकर वसूलीक कोनो संभावना नहि देखाइत छलै। परिणाम स्वरूप उधारी वसूल करबाक एहि दुष्कर काज लेल ओकरा एकटा खास किस्मक कर्मचारीक दरकार भेलै। एहि काज लेल ओ ढेर रास प्रत्याशी सभ मे सँ छाँटिक' सिकन्दर झा कें चुनि लेने छल।

सिकन्दर झा मात्र नामेटा कें सिकन्दर नहि छल। प्रकाश अगरवालक एहिठाम ड्यूटी लगितहि ओ उधार खाक' गड़बड़ करयबला सभ पर एहन ताबड़तोड़ आक्रमण कयलक जे फर्मक गल्ला मे ओहन हजारो रुपैया घुरि आयल जकरा बट्टे-खाता मे धरबाक नौबत आबि गेल छलै। सिकन्दरक बाप रघुनाथ झा जँ आइ जीवित रहितथि त' अपन बेटाक प्रति बनाओल पूर्व धारणा कें तोड़बा पर विवश भ' जइतथि। जीवनकालहि मे ओ बेटा सँ हाथ धो लेने छलाह। सिकन्दरक गतिविधि सभ सँ आजिज आबि गेल छलाह ओ। बहुत प्रयास कयने छलाह प्रारंभ मे जे बेटा पढ़ि-लिखिक' मनुक्ख भ' जाय मुदा स्कूल जयबाक नाम सँ जेना आत्मा कँपैत छलै सिकन्दरक। मिडिल धरि त' जेना-तेना घिचायल मुदा हाइस्कूल मे ओकर पाँखि खुलि गेलैक। घर सँ बहराइत छल स्कूल जयबाक नाम पर आ पहुँचैत छल कोनो निर्धारित अड्डी पर अपन यार सभ लग—कखनो धतालदास ठाकुरबाड़ीक पाछाँबला गाछी मे त' कखनो अस्पतालक मुर्दाघरक कातबला मैदान मे। शहरक सभ खुरलुच्ची आ लफंगा ओकर यार छलै। एक बेर निर्धारित अड्डी पर पहुँचल नहि कि हुड़दंग शुरू भ' जाइत छल।

अनवरत प्रयासक बादो सिकन्दर जखन चारिम बेर आठमा मे फेल भ'

गेल त' बाप उम्मीद छोड़ि देलथिन। आब त' सिकन्दर आरो निरंकुश भ' गेल। अपन मशहुरोमारूफ यार सभक संग गोल बान्हि जखन ओ शहर मे बहराबय त' आमलोकक के कहय मवाली सभक दम खराबए लगैत छल।

मुदा सिकन्दरक ई सिकन्दरशीप बेसी दिन नहि चलि सकल। एक दिन साँझ कें घर घुरैत काल ओकर बाप कें एकटा विषधर साप काटि लेने छलै। मंतर, झाड़-फूंक आ फेर अस्पतालक इलाज....एहि सभ मे सँ कोनो चीज हुनका दोसर दिनक सुरूज नहि देखा पओलकनि। माय पहिनहि विधाताक दुलारी भ' गेल छलीह। माथ पर सँ बापक छत्रछाया हटितहि सिकन्दर हतप्रभ भ' गेल छल। कोनो डगर नहि सुझैत छलै....चारू दिस अन्हारे अन्हार।

ओहि विकाल मे आश्रय भेटलैक प्रकाश अगरवालक फर्म मे। सिकन्दर अपन बापक प्रति कयल अवज्ञा सभ कें मोन पाड़लक, पछतायल आ ओकर पूर्ति प्रकाश अगरवाल कें करय लागल। प्रकाश अगरवाल खूब प्रसन्न छल। सिकन्दर ओकर डूबल पाइ सभ वसूलि-वसूलिक' अनैत छल। ओ सिकन्दरक सुविधा बढ़ा देलक। सिकन्दर मस्त भ' गेल।

एक दिन सिकन्दर तगादाक सिलसिला मे रामचन्दर मड़रक घर पहुँचल। ओकर बेटा चारि बरख पहिने वृद्धिचन्द भँवरलाल वस्त्र भंडार सँ तीन हजार टकाक कपड़ा उधार ल' क' थ्री-पीस सूट बनबौने छल आ पाइ देबाक नाम पर घुरिक' मुँह नहि देखौने छल। एतय अयबा सँ पूर्व सिकन्दर रामचन्दर मड़रक बेटाक पूरा होलिया-जौगराफिया बुझि लेने छल। बदलैत जमानाक मोताबिक कालेसर मड़र अपन नाम सुधारि लेने छल आ आब श्री कालेश्वर यादव लिखैत छल। ओकर दिनचर्या जानि लेलाक बाद सिकन्दर ओकरा अपनहि पुरान 'टाइप' मानने छल। किछु दिन पहिने धरि सिकन्दर जे किछु करैत छल, कालेश्वरो कम-बेसी ओहि लाइन पर चलि रहल छल।

ओहि दिन रामचन्दर मड़र सिकन्दर कें बतौलकै जे आइ कालेश्वर घर पर नहि अछि आ ई जे उधारक बावत ओ किछु नहि जनैत अछि। बेटा दियाः ओकर कहब रहै जे वएह जानय-ओकर काम जानय। सिकन्दर तकर बादो कतेक दिन ओतय गेल। ओकरा कालेश्वर सँ भेंटो भेलै, मुदा गप आइ-काल्हि-अगिला हफ्ता-एहि महीना आदि-इत्यादिक नाम पर टरैत गेलै एक दिन सिकन्दर अपन तगादेक काज सँ बहरायल छल। पान खयबाक विचार सँ ओ मुन्ना ठाकुरक प्रसिद्ध ताम्बूल भंडार पर आयल। ओतहि ओकर भेंट कालेश्वर यादव सँ भ' गेलैक।

सिकन्दर उलहन-उपराग दैत ओकरा कहलकै...''कालेश्वर बाबू! अहाँ त' बेर-बेर गप कें टारने जा रहल छी। पाइ देबाक नाम धरि नहि ल' रहल छी अहाँ। आब आर कतेक दौड़ायब हमरा?''

कालेश्वर संग ओहिकाल ओकर सासुर सँ आयल कुटुम्ब आ परिवारक किछु लोक छलै। एहन लोकक समक्ष कयल गेल तगादा ओकरा बेइज्जती जकाँ लगलैक। ओकर कनपट्टी सुनगि उठलै आ मुँह लाल भ' गेलैक। क्रोधक आवेश ओकर विवेक कें गीर गेलैक। पैजामा सँ बाहर होइत ओ सिकन्दर पर झपटल-''रे मादर....बभना। बीच बजार मे तगादा करै छें सार! तोरी.....।''

सिकन्दर कनेकाल लेल हतप्रभ रहि गेल। पहिने त' ओकर अकिले मे नहि घुसलै जे ओकरा सँ कोन गलती भ' गेलै आ कालेश्वर तमसा किएक गेलैक। फेर ओ अपन कमीजक कालर कालेश्वरक मुट्ठी मे धरायल अनुभव कयलक। कालेश्वरक मुट्ठी सँ ओ अपन कालर छोड़ायब चाहिते छल कि ओकर गाल पर कालेश्वरक खूब करगर चाट पड़लैक। नोकरी लेल प्रकाश अगरवाल द्वारा सिखायल व्यवहार कुशलता आ संयम कें सिकन्दर एहि चाटक संगहि बिसरि गेल। ओ अपन देह कें तेज झटका द' नहि जानि की कयलक कि दोसरे क्षण कालेश्वर ज़मीन पर चारू खाना चित्त छल आ ओ ओकर छाती पर सवार।

''की भेलै? की भेलै?''-चौबटिया पर हल्ला मचि गेलै।

''दौड़ रे! सिकन्दर दादा पर कोनो सार हाथ छोड़ि देलकै...।'' ककरो जोरगर स्वर उभरल।

नहि जानि कतय सँ सिकन्दरक पुरनका यार सभ जुमि गेल आ सिकन्दर-कालेश्वर कें छोड़यबा मे लागल कालेश्वरक परिजन सभ पर टूटि पड़ल।

''आरे! आरे! हम की कयलहुँ?''-कोनो स्वर अभरल।

''चोप्प सार।''-दोसर स्वर धोपलक।

...फेर बेमेल आ अस्पष्ट शब्दक स्वर भीड़क हो-हल्ला मे गुम। फेर तेहन लोक सभ जुमलाह जे स्वयं दू-चारि हाथ खाइयोक' अंततः दुनू पक्ष कें फराक-फराक कयलनि। बात आयल-गेल भ' गेलै आ लोक सभ अपन-अपन डगर धयलक।

दोसर दिन किछु लोकक कान ओहि जुलूस कें देखि अवश्य ठाढ़ भेलै जे पिछड़ा एकताक नाम पर बहरायल छल आ अगड़ा सभक मुर्दाबादक नारा

लगा रहल छल।

जुलूस किछु दूर धरि तँ बड़ संयत भाव सँ चलल मुदा जखने मुख्य बाजारक भीड़-भाड़ बला इलाका मे वृद्धिचन्द भँवरलाल वस्त्र भंडार लग पहुँचल, किछु गड़बड़ भ' गेलै। जुलूसक किछु लोक वस्त्र भंडार दिस लपकल आ ओकर शो-केसक शीशा पर टूटि पड़ल। झन-झन-झनाकक स्वरक संग शीशाक टुकड़ी सभ दूर-दूर धरि छिड़िया गेल।

तखने वस्त्र भंडारक भीतर सँ आठ-दस गोटे लाठी सँ लैस दौड़ैत आयल आ जुलूसक लोक पर बरसाब' लागल। हड़बिड़रो मचि गेलै। जकर जेने सिंग अंटलै, ओम्हरे पड़ायल।

मुदा, बात समाप्त नहि भेल छल। आधा घंटाक भीतर शहर अराजकताक फाँस मे छल। कोनो दोकान लूटल जा रहल छल त' कोनो जमा-पूँजी समेत स्वाहा भ' रहल छल। ककरो माथा फूटि रहल छल त' कियो अपन टांग तोड़बा बैसल छल।

शहर पर हथियारक राज भ' गेल छलै।

झलकी

दृश्य एक : शहरक पॉश कॉलोनी।

खूब चाकर सड़कक दुनू कात विशालकाय आ सुन्दर भवन सभक नम्हर पांति। एहि भवन सभक मध्य एक बीघा सँ बेसी रकबा मे बड़का टा भव्य मकान। अठारह कोठली आ दू टा बड़का-बड़का हॉल बला एहि मकान मे एकटा राजनीतिक दलक कार्यालय अछि।

एकरे एकटा कोठली मे एखन प्रायः सतरह-अठारह लोक जमा छथि। कोठली मे भकोभन्न पसरल आ उपस्थित चेहरा सभ तनावग्रस्त।

भकोभन्न कें भंग करैत अछि जिलाध्यक्ष पुरुषोत्तम मंडलक स्वर। मंडल जी स्वतंत्रता सेनानी छथि। स्वतंत्रता संग्रामक अवधि मे अंग्रेज द्वारा देल यातनाक चिह्न मंडल जीक अंग-प्रत्यंग मे आइयो मौजूद अछि। हुनक अपन दल सँ जुड़ल विभिन्न तबका-जाति-संप्रदायक लोके टा नहि, दोसर पार्टीक कट्टर विरोधी लोक सभ सेहो हुनका व्यक्तिगत स्तर पर सम्मान दैत छनि।

पुरुषोत्तम मंडलक धीर-गंभीर स्वर कोठलीक भकोभन्न तोड़ैत अछि-''निहित स्वार्थी तत्व सभक षडयंत्रक परिणाम थिक-शहर मे पसरल हिंसा, अगिलग्गी आ लूटपाट। एखन आवश्यकता अछि धैर्य आ साहसक संग एहन तत्व सभक

विरूद्ध डाँड़ कसबाक। हमरा सभ केँ चाही जे हम सभ अपन-अपन गंभीर जिम्मेवारी केँ बूझी आ जनता-जनार्दनक समक्ष एहि निहित स्वार्थी तत्व सभ केँ बेनकाब करी। तेँ सभ सँ पहिने शुरूआती तौर पर हमरा सभ केँ शहर मे एकटा सद्भावना जुलूस निकालब आवश्यक अछि जाहि मे सभ समान विचारधारा बला लोक शामिल होथि। आम लोक पर एकर नीक प्रभाव पड़तै। की चिरंजीव जी?''

पुरुषोत्तम मंडल अपन गप समाप्त क' चिरंजीव सिंह दिस तकैत छथि। चिरंजीव सिंह पार्टीक युवा मंचक अध्यक्ष छथि आ मंडल जीक घोर समर्थक। आँखि मूनि हुनक आज्ञाक पालन करैत छथि। मंडल जी आश्वस्त छथि चिरंजीव जीक उताराक प्रति। ओ मात्र हुनक गपक समर्थने टा नहि करताह, एहि सद्भाव जुलूस लेल ढेर रास नवतूर केँ चुटकी बजबैत इकट्ठो क' लेताह।

मुदा चिरंजीव जीक आँखि तामस सँ जरय लगैत अछि। तामसे थरथराइत हुनक स्वर मे मंडल जीक प्रति सम्मानक लेश धरि नहि अछि-''छोटी जात के क्रिमिनल्स इन फसादों के लिए जिम्मेवार हैं। हरामजादों ने अपने-आपको बहुत बड़ा दादा समझ लिया है क्या? उन्हें मालूम नहीं कि चिरंजीव सिंह अभी मरा नहीं है। हाथ-पैर काट लूंगा सालों के।...और आप! आप हमें सद्भाव-जुलूस निकालने की शिक्षा देकर चूतिया बनाना चाह रहे हैं। क्यों नहीं! आखिर आप भी बैकवार्ड हैं न!'' आ उन्मत्त हाथी जकाँ झूमैत चिरंजीव सिंह कोठली सँ बहरा जाइत छथि।

दृश्य दू : दूर-दूर धरि पसरल झोपड़पट्टी।

सिकुड़ल-सिमटल आ थाल-कादो सँ भरल संकीर्ण गली-कोनटी। रोशनीक कतहु नाम निशान नहि। हँ, दूर शहरक झिलमिलाइत रोशनी एतय सँ देख' मे अवश्य अबैत अछि।

एक फूसिक झोपड़ी। एकर ओसार पर सुनगल घूरा। घूराक चारू दिस बैसल लोक आगि तापि रहल अछि। आगि तापि रहल अछि आ किछु-किछु गप क' रहल अछि। कने काल पहिने मटरू आल्हाक किछु पाँति गाबि चुप भेल अछि। आब, नहि जानि कतय-कतय केँ खिस्सा-पिहानी भ' रहल अछि।

अकस्मात धनीलाल केँ किछु मोन पड़ैत छैक। ओ रामनारायण सँ पूछैत अछि-''आँय हओ नमलरैन भाइ, आइ बजार गेल छलहक की? सुनै छियै ओतय खूब मारा-पीटी, अगिलग्गी आ छीना-झपटी भेलै हन?''

रामनारायण बीड़ी मे सोंट मारैत अछि आ छोट सन उतारा दैत अछि-''हँ।''

पलथी मारिक' बैसल धनीलाल चुक्कमाली बैसि जाइत अछि आ रामनारायणक कान लग मुँह ल' जाक' कनफुसकीक स्वर मे पूछैत अछि-''आँय हओ नमलरैन भाइ, ई बैकबा-फोड़बा की होइ छै हओ?''

रामनारायण की जानय ई सभ। ओकरा मालूमो नहि छैक जे बैकबा-फोड़बा की होइत अछि। ओ चुप रहि जाइत अछि।

मटरू बड़ीकाल धरि चुप रहलाक बाद फेर जोर सँ आल्हा टेर देने अछि।

दृश्य-तीन : कामरेड रामसेवक साहु जीक चाह-नाश्ताक दोकान।

स्थानीय पत्रकार, कलाकार, साहित्यकार आ बेकार सभक लेल ई दोकान पटना-दिल्लीक कॉफी हाउसक समकक्ष अछि। एतय रोज साँझ मे कोनो ने कोनो 'ज्वलंत मुद्दा' पर गरमागरम बहस होइत अछि।

आइयो बहस जारी अछि। एखन सभ सँ तेज स्वर अछि विद्यानिवास आजाद जीक। विद्यानिवास जी साहित्यकार, पत्रकार, समाजसेवी आ चिंतक छथि। एकदम आधुनिक सोच बला लोक।

''....एकटा पढ़ल-लिखल वा अनपढ़ अगड़ा अपन अगड़ा वा ऊँच जाति होयबाक दर्प मे, आ कि फेर, एकटा पढ़ल-लिखल वा अनपढ़ पिछड़ा अपन छोट लोक होयबाक शरम पोसैत, आ कि फेर, दुनू तरहक लोक स्वयं केँ कोनो जाति-विशेषक होयबाक ऐतिहासिक फूसि मे जीबैत की एकटा भयानक मूर्खताक अतिरिक्त आर किछु क' रहल होइत अछि?

...वर्ण आ जाति व्यवस्था पहिने कहियो कर्मक आधार पर आ फेर जन्मक आधार पर निश्चित होइत रहल अछि। संतानक जाति पहिने कहियो माताक जाति सँ तय होइत छल, आइ पिताक जाति सँ। परशुराम द्वारा 'क्षत्रियविहीन मही' भेला पर मनुस्मृतिक आधार पर ब्राह्मण पुरुषगण क्षत्रिय विधवा सभ सँ नियोग पद्धति द्वारा संतानोत्पत्ति क' माताक जाति सँ संतानक जाति तय क' क्षत्रिय वंश केँ पुनर्जीवित कयल गेल छल। आइ-काल्हि पिताक जाति सँ संतानक जाति तय होइत अछि, भने माता दोसरे कोनो जातिक हो आ एकर उदाहरण सँ अजुका वर्त्तमान समाज भरल अछि।

...अजुका वर्त्तमान समाजक प्रत्येक लोक जँ अपन परिवार आ पुरखा सभक इतिहास उनटाक' देखथि त' पओताह जे आदिम युग सँ सभ्य होयबाक युग धरि हुनक परिवारक कियो ने कियो पुरुष वा स्त्री कहियो ने कहियो

कोनो दोसर जातिक स्त्री वा पुरुषक संग मिलि संतानोत्पत्ति अवश्य कयने छथि। त' पिता सँ मानी वा माता सँ - आब हुनक जाति की भेल? पुर्वाग्रह सँ मुक्त आ निर्भय भ' विचार करी त' अजुका युगक हम सभ जीवित लोक वर्णसंकर छी।''

चाह दोकानक कोनाबला टेबुल सँ एकटा पिहकारी छुटैत अछि। विद्यानिवास आजाद एहि सँ अविचलित धाराप्रवाह बाजि रहल छथि।

''....आ फेर, आदिम युग सँ सभ्य होयबाक आ कि व्यक्ति सँ समाज, सूबा, देश आ दुनियाँ बनबाक मध्य कोनो समय मनुक्ख सँ फराक ओ कोन ईश्वर आयल जे सोझ आ विशुद्ध मनुक्ख कें खटाल मे बाँटि देलक? हम नहि मानैत छी जे मनुक्खक लेल अज्ञात-अपरिचित कोनो विशिष्ट स्थान सँ एहन कोनो ईश्वर आयल होयत आ जँ आयल होयत, त' हमरा विश्वास अछि जे ओ मनुक्ख-मनुक्ख मे विभेद करबाक लेल एहन नीच आ अधम काज नहि कयने होयत।

....साँच त' ई थिक जे सत्ता पर काबिज समाजक मजगूत तबका आ सत्ता पर काबिज होयबाक लालसा सँ मरैत समाजक आन कोनो मजगूत तबका अपन-अपन स्वार्थ साधन लेल समय-समय पर एहि मरल-गलल वस्तु सभ कें जीवित कयलक अछि, एकरा नाराक शकल मे उछालि-उछालिक' हथियारक काज लेलक अछि आ बहुसंख्य सोझ लोक सभ एकर दुष्परिणाम भोगैत रहल अछि।

....निष्कर्ष ई, जे वर्त्तमान मे सांस ल' रहल लोक सभक संरचना मे मासु-मज्जा-धमनी आदि-आदिक संग जाति नामक कोनो वस्तु नहि अछि। अजुका मनुक्ख वा त' वर्णशंकर थिक वा जाति नामक ऐतिहासिक फूसिक थूक मे लटपटायल जी रहल अछि....।''

विद्यानिवास आजाद जीक गप सुनि चाह दोकान मे बैसल लोक सभ मे भनभनी पसरि जाइत अछि।

''साला एकदम पागल है।''—उच्च स्वर मे बजैत कोनाबला टेबुल पर बैसल एकटा छौंड़ा अपन मित्र सभक संग चाह दोकान सँ बहरा जाइत अछि।

दृश्य-चारि : नेना सभक स्कूल।

टिफिनक घंटी बाजल अछि। नेना सभ क्लासरूम सँ बहराक' मैदान मे खेलेबाक लेल आबि गेल अछि।

दस-बारह गोट नेना सभक एकटा हेंज। एम्हर-ओम्हर सँ फूसि-बत्ती जमाक' ई हेंज किछु बनौलक अछि। हेंजक सभ सँ नम्हर नेना सात-आठ वर्षक छल होयत। आन नेना सभ ओकर चारूकात जमा अछि।

बड़का नेना कहैत छैक—''आब चलह, आइ हम सभ बैकबा-फोड़बा खेलब।''

एकटा छोट सन नेना पूछैत छैक—''ई कोन खेल छियै? पहिने त' कहियो नहि खेललियै? नवका खेल छियै की?''

बड़का नेना खूब बुधियार जकाँ मुस्काइत अछि—''हँ! एकदम नव खेल। फेर ओ घास-फूसि-बत्ती आदि सँ बनल वस्तु दिस इशारा करैत कहैत अछि—''ओ घर होयत हम्मर आ हम बनब जादब। ओ दोकान होयतैक बिरजूक आ ओ बनत बाभन। हमरा दुनू मे झगड़ा होयत। फेर हम ओकर दोकान लूटि लेबैक। बिल्लू, पप्पू आ छोटू हमरा संग रहत। फेर लल्लू, मोहन, नरेन आ बबलूक संग बिरजू आओत आ हमर घर मे आगि लगा देत। हम सभ अपन-अपन काज क' ओम्हर बला गाछक पाछाँ मे नुका जायब। तखन सुरेश बनत नेता आ विनोद बनत दरोगा। सुरेश आबिक' बाजत—''दरोगा जी, इन दोनों का घर-दुकान बनवा दीजिए और दोनों को पकड़ कर लाइये।'' विनोद हमरा आ बिरजू कें पकड़िक' आनत। सुरेश हमरा दुनूक हाथ मिलबाक' हमरा दुनू मे दोस्ती कराओत। एहि तरहें ई खेल खतम। खेल दुहराब' लेल फेर सँ घर आ दोकान बनब' पड़त। फेर...''

जाधरि टिफिन समाप्त होयबाक घंटी बाजल, नेना सभ बैकबा-फोड़बा खेलैत रहल।

विष-पान

वकालतखानाक एकटा कुर्सी पर बैसल गोपाल जी कछमछाइत छथि। कुर्सी पर अपन स्थिति बदलैत हुनक दृष्टि बौआबैत अछि।

कचहरीक प्रवेश द्वारक दहिना कात माने पूरब-उत्तर कोण मे एकटा सुग्गाबला जोतखी बैसल छथि- कचहरी आबयबला मोकील सभक भाग्य बाँचय लेल। सुग्गाबला पिंजराक संग-संग किछु लिफाफ, छोट-छोट रंग-रंगक पाथर आ किछु अउँठी सभ हुनका आगाँ मे पसरल अछि। कोनो फुटलाहा भाग्यबला ओकरा लग अबैत अछि त' सुग्गा पिंजरा सँ निकलिक' कोनो लिफाफ खिचैत अछि आ ओहि मे लिखलाहाक अनुसार जोतखी जी ओकरा कोनो पाथर वा अँउठी बेचि लैत छथि। गोपाल जी देखैत छथि आ सोचैत छथि जे कचहरी आबयबला मोकील सभ त' फुटलाहा भाग्यबला होइतहि अछि। ओकर सभक भाग्य त' ओकील, मोहरिल, पेशकार आ हाकिमक हाथ मे अछि। जोतखी जी एहि मे की करताह! एकटा आर गप सोचि गोपाल जीक ठोर विद्रुपता सँ टेढ़ होइत अछि- जोतखी जी कचहरीक ईशान कोण मे बैसल छथि, ईशान कोण माने ईश्वरक कोण- वास्तु शास्त्रानुसार।

जोतखी जीक बैसारक पछिम दिस किछु हटिक' एकटा बरक विशाल गाछ अछि। तीन दिस सँ कपड़ाक बैनर सँ घेरल, एकटा पटिया पर बैसल लुंगी पहिरने दू गोटेक धंधा ओहि बरक गाछ तर चलि रहल अछि। बैनर पर खूब नम्हर-नम्हर अक्षर मे 'ममीरा सुरमा' आ ओहि सँ नीचाँ कने छोट अक्षर मे 'आपके आँख की रोशनी बढ़ाता है' लिखल अछि। झलफलाइत आँखिबला दू-तीन टा बूढ़ ग्राहक ओकर आगाँ बैसल अछि। गोलका टोपी पहिरने एकटा लुंगीधारी एकटा बुढ़बाक आँखि मे सीक सँ सुरमा लगबैत अछि। बुढ़बा किछु क्षण लेल सुरमा लगाओल दुनू आँखि भींचैत अछि आ फेर आँखि खोलिक'

झिलमिलाइत डिम्हा सँ कचहरी मे पसरल दृश्य पर विहंगम दृष्टि फेरैत अछि। गोपाल जी अनुमान नहि क' पबैत छथि जे बुढ़बाक आँखिक रोशनी मे सुरमा सँ कोनो अंतर पड़लैक वा नहि।

अदालतिक बरंडा पर सँ अर्दली चिकरल-"रामेसर मंडल बल्द जागेसर मंडल, साकिन-मौजे हाऽऽऽजिर होऽऽऽ।"

बगलबला टेबुल पर एकटा मोकील अपन ओकीलक आगाँ गिड़गिड़ाबय लागल-"हजोर, अगिला तारीख पर सभटा बाँकी-बकिऔता चुकता क' देब। आइ बहस क' दिअओ, हजोर। नहि त' बाप-दादाक देल ई डीहो बुड़ि जायत'।"...

गोपाल जी अपन घेंट मोड़िक' ओम्हर ताकलनि। ओकील साहेब जेना ओहि मोकीलक बात सुननहि नहि छलाह। ओ कलमक उलटा छोर सँ कान खोधैत रहलाह आ हुनका आँखि आगाँक टेबुल पर पसरल कागज सभ पर दौगैत रहल।

ओहि मोकीलक गिड़गिड़ायब जारी छलै-"...की करबै, हजोर, कत्तय सँ आनब। आठ बरख सँ कँचहरी दौगैत-दौगैत त' मरि गेलौं। डीहे टा बचल छै आ तकरो पर झंझटि। आइ काम क' दिअओ, हजोर। जतय सँ हेतय ततय सँ आनिक' अहाँक फीस सभ चुकाए देब...।"

वकालतखानाक कुर्सी पर बैसल गोपाल जी झनझनाय गेलाह। हुनका लगलनि जे हुनका आ ओहि परेशान-फटेहाल मोकील मे बहुत हद धरि समानता अछि। ओकरे टा सँ किएक- प्रायः सभटा मोकील सभ मे तबाही आ परेशानी भुगतबाक मामिला मे समानता होइत अछि। अनेक बरस सँ कचहरीक दौड़ लगबैत मोकील सभ कतहु ने कतहु सँ टूटि गेल होइत अछि- चाहे आर्थिक रुप सँ, चाहे मानसिक रुप सँ।

स्वयं गोपाल जी के कचहरी आयब आ मोकदमाक सिलसिला मे विभिन्न अनुभव सँ गुजरब लज्जित-पराजित जकाँ क' दैत अछि। सेहो तखन, जखन कि कएकटा ओकील, मोहरील, पेशकार हुनका सँ परिचित अछि। मात्र परिचितहि टा नहि बल्कि कोनो ने कोनो रुप मे हुनकर सम्मानहु करैत अछि। तखनो नहि जानि कियैक, एतय अबितहि ओ एकटा अबूझ किस्मक घुटनक अनुभव कर' लगैत छथि आ एतय सँ शीघ्रातिशीघ्र पड़ा जयबाक लेल व्यग्र भ' उठैत छथि।

अनेकानेक राजनैतिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक गतिविधि सभ सँ जुड़ल

छथि गोपाल जी। एहि क्रम मे विभिन्न आ परस्पर विरोधी चरित्र आ व्यक्तित्व बला लोक सभ सँ वास्ता पड़ैत रहैत छनि हुनका। ओहि विविधता सभक बीच ओ अपन व्यक्तित्वक ऊँचाइ बचयने रहल छथि मुदा कचहरी अबितहि हुनक व्यक्तित्व अपनहि नजरि मे धंसैत चलि जाइत अछि-गताल दिस।

शुरू-शुरू मे हुनका कचहरी मे देखिक' घटना सँ अनवगत मुदा परिचित लोक सभ पुछनि-"अहाँ आ एत्तय?" वा "अहाँ कचहरी मे?" तखन ओ एकटा अजीब दीनता-बोध सँ ग्रसित भ' जाइत छलाह। हुनका ई बुझिमे नहि अबनि जे ओ कचहरी अयबाक कारण कोन तरहेँ आ की बताबी। ओ घटना जेना हुनक व्यक्तित्व केँ अवमूल्यित क' देने छलै आ हुनका होनि जे जनतब भेला पर ओ लोकहुक नजरि मे छोट भ' जयताह। जखन कि हुनका बूझल छलनि जे घटना आब कोनो नुकायल नहि रहल।

एखन वकालतखानाक कुर्सी पर बैसल-बैसल जेना सिनेमाक रील जकाँ सम्पूर्ण घटनाक्रम हुनक आँखिक सोझाँ साक्षात होब' लगैत अछि। हुनका मोन पड़ैत छनि चारि बरिस पहिनेक ओ मनहूस दिन जहियाक घटल घटना हुनका कचहरीक पीड़ादायक अनुभव सँ गुजरबाक लेल बाध्य क' देने छलनि। ओहि घटनाक मोन पड़िते ओ जेना सिहरि उठैत छथि।

घटना घटल छल स्टेशन चौक पर, बरू एहि चौकक दखिन-पच्छिम कोन पर स्थित पानक दोकान पर जतय ओ अक्सरहाँ पान खयबा लेल अबैत छलाह।

ओहि दिन ओ किछु मित्र सभक संग ओतय पहुँचल छलाह आ पानबला केँ पान लगयबाक लेल कहि कने हटिक' ठाढ़ भेल छलाह। कोनो तात्कालिक राजनैतिक मुद्दा छलै जाहि पर हुनक मित्र सभक बीच एकटा बहस चलि रहल छलै। सड़कक कात आ चौकक मुख्य जगह पर स्थित होयबाक चलते दोकानक अगल-बगल, सड़क आदि पर खूब भीड़ छलै आ लोकक अबरजात सेहो खूब छलै। किछु गोटे गोपाल जी केँ टोका-नमस्कार करैत ससरैत गेलाह त' किछु रूकिक' बहस मे सम्मिलित भ' गेल छलाह। धीरे-धीरे बहस करू-कोण दिस बढ़ैत बुझायल त' गोपाल जी हस्तक्षेप क' ओकरा दोसर दिस मोड़लनि।

पानबला पान लागि जयबाक सूचना देनहि छल कि तखने सड़कक अबरजातक बीच सँ अचक्के बहरायल छल चतुरानन- हाथ मे लाठी लेने। अंट-शंट गारि पढ़ैत ओ तेजी सँ लपकल छल हुनका दिस। ओ एतबेक देखि सकल छलाह कि हुनका पर लाठी बरसय लागल छल। चारि-पाँच लाठी लगितहि

हुनक ठेहुन मुड़य लागल छल आ ओ खसि पड़ल छलाह। खसितहि हुनक चेतना लुप्त भ' गेल छल। आन सभ विवरण त' हुनका बाद मे बूझल भेलनि।

हुनक खसिक' अचेत होइतहि चौक पर हरबिराड़ उठि गेल छलै। जानि नहि कोम्हर सँ बाबूजीक पुरान सेवक नेनिया आबिक' चतुरानन केँ पकड़िक' बजारि देने छलै आ बड्ड मारि मारने छलै मुदा अवसर पबितहि चतुरानन निकलि भागल छल। आन केओ ओकरा पकड़बाक प्रयास नहि कयने छल। ओ सभ शांतिप्रिय लोक छलाह आ अपराधी केँ पकड़ब प्रशासनक दायित्व मानैत छलाह। प्रशासन केँ कोसबाक जनतांत्रिक अधिकार हुनका सभ केँ प्राप्त रहनि आ एहि अधिकारक उपयोग करैत ओ सभ बढ़ैत गुंडागर्दी आ प्रशासनक निकम्मापन पर चिन्ता व्यक्त कयने छलाह।

सौदा-सुलुफ लेल चौक पर आयल रामप्रसादक साठि वर्षीय माय मरौनावाली सभ सँ पहिने गोपाल जीक सुधि लेने छल। ओ अपढ़ आ देहाती बुढ़िया गोपाल जीक माथ सँ बहैत खून केँ अपन अँचरा सँ पोछने छल आ बैसल-बैसल चतुरानन केँ गारि सँ उकटि देने छलै। बाद मे ओकर गारिक रुख ओतय ठाढ़ भेल लोक सभ दिस मुड़ल रहय आ तखन ओकरा सभ केँ अपन कर्तव्य मोन पड़ल छलै। ताबत स्तब्ध ठाढ़ भेल हुनक सहयोगी सभक विमूढ़ता सेहो टूटल रहय आ ओ सभ हुनका उठाक' अस्पताल आनने छल। चोट त' अनेक छलनि हुनक देह पर मुदा माथाक घाव आ दहिना बाँहिक टूटल हड्डी बेसी गंभीर छलै जकर उपचार डाक्टर सभ कयने छलै।

खबर खूब तेजी सँ पसरल छलै आ अस्पताल मे लोकक करमान लागि गेल छलै- हुनक स्थिति जानबाक लेल। केओ बतौने छल जे अपन कानूनी स्थिति मजबूत करबाक उद्देश्य सँ चतुरानन सेहो नुकायल अस्पताल आयल छलै आ स्वयं केँ घायल बताक' डाक्टर सँ अपन इलाज लेल कहने छलै - इन्ज्यूरी रिपोर्ट लेबाक उद्देश्य सँ। भीड़ मे उपस्थित केओ गोटे ओकरा चिन्ह गेल छल आ तामसे आगि भ' क' ओतय पड़ल एकटा जरनाक चेरा सँ ओकरा पीटने छलै आ ओ फेर भागि गेल छल।

गोपाल जी चिकित्साक उपरान्त पेइंग-वार्ड मे छलाह, जखन पुलिस आयल छलै। पुलिस हुनक बयान लेने छलनि आ त्वरित गति सँ कार्रवाई करबाक भरोस द' चलि गेल छल।

टूटल बाँहि पर चढ़ल प्लास्टर प्रायः डेढ़ मासक बाद खूजल छल आ माथाक घाव सेहो करीब-करीब भरि रहल छल। शारीरिक चोटक उपचार त'

भ' रहल छलै मुदा अपना पर हमला करयबला चतुराननक खेयाल धरि अबितहि हुनक नस खौलय लगैत छल। की-की नहि कयने छलाह ओ ओहि आदमीक बेहतरी लेल। लोक सभ चतुरानन कें आदि-अपराधी कहैत छल मुदा गोपाल जी ओकरा मानसिक रूप सँ बीमार मानैत छलाह आ चाहैत छलाह जे सामाजिक सहयोग सँ ओकरा सुधारल जाय। ओहि आदमीक रग-रग मे शैतानी भरल छलै आ ओकर किरदानी सभ सँ लोक त्रस्त छलै। लोक सभक प्रबल आक्रोशक अछैत गोपाल जी बैसारक आयोजन क' क' ओकरा सँ सम्बन्धित मामिला सभक निबटारा करैत छलाह आ ओकरा सुधरबाक पर्याप्त अवसर दिअयबाक प्रयास करैत रहैत छलाह। एकर नतीजा भेल छल जे ओ भस्मासुर जकाँ गोपाले जीक माथ पर हाथ राखि देने छल।

किछु स्वस्थ भेलाक उपरान्त गोपाल जी थानाक अनेको फेरी लगयने छलाह। बताओल गेल जे केसक प्रथमिकी दर्ज भ' गेल अछि आ छानबीनक उपरान्त अपराधी कें पकड़बाक लेल जी-जान सँ प्रयास कयल जाय रहल अछि मुदा असामी फरार भ' गेल अछि आ पुलिसक हाथ नहि चढ़ि रहल अछि। जखनहि गोपाल जी कें बूझल भेलनि जे चतुरानन अपन घरहि मे रहि रहल अछि आ पुलिस ओकरा सँ बेस मोट रकम वसुलने आ खयने अछि।

गोपाल जी कें बूझल छलनि जे प्रशासन मे जहिं-तहिं भ्रष्टाचारक घून लागल अछि आ तें थाना द्वारा हुनक आँखि मे धूरा झोंकबाक प्रयास सँ हुनका कने रंज भेलनि मुदा ओ चुप रहलाह। न्यायपालिकाक प्रति हुनका मोन मे सुच्चा सम्मान छलनि आ ओ मानैत छलाह जँ इमानदारी नामक कोनो वस्तु आइयो बाँचल अछि त' ओ न्यायपालिके मे अछि। हुनका विश्वास छलनि जे एक बेर अदालति मे मामिला अयलाक बाद अपराधी बचिक' नहि निकलि सकैत अछि। आँखि पर बान्हल पट्टी आ हाथ मे तराजू लेने न्यायक देवी मे हुनक गहींर आस्था छल। संगी-साथी सभक द्वारा एहि मादे कयल गेल कोनो प्रतिकूल टिप्पणी पर ओ कुपित भ' जाइत छलाह-''अहाँ सभक त' सोचहि नकारात्मक भ' गेल अछि। सभ बात कें उल्टा तरीका सँ सोचै छी अहाँ सभ। ई साँच अछि जे भ्रष्टाचारक अन्हार बेस तेजी सँ पसरल अछि मुदा एहि घटाटोप अन्हार मे न्यायपालिकाक प्रज्ज्वलित दीप भ्रष्टाचार लेल चुनौतीक रूप मे मौजूद अछि आ देखबै अहाँ सभ जे एक दिन ई प्रज्ज्वलित दीप भ्रष्टाचारक पसरल गुज्ज अन्हार कें समूल नष्ट क' क' छोड़त।''

किछु दिनक बाद पुलिस केस कें अदालति मे सुपुर्द क' देने छल आ

गोपाल जीक वकील मित्र सभ केस लड़बाक जिम्मेदारी सम्हारि लेने छलाह। कचहरीक सिलसिला शुरू होयबाक किछु-ए तारीख मे गोपाल जीक मोन मे स्थापित न्यायदेवीक प्रतिमा नहुँए-नहुँए चिरक' लागल।

अदालति मे हुनक बयानक बेर विपक्षी वकीलक बहस, तिक्ख आ उल्टा-सीधा सवाल, ओकर व्यंग्य आ आक्षेप करैत टिप्पणी बिखाह तीर जकाँ हुनक अंतस कें भेदने चलि गेल छल। ई स्पष्ट रूप सँ बहसक बहाने हुनका जलील करबाक प्रयास छलै। ओ एहि पर न्यायाधीश सँ प्रोटेस्ट कयलनि त' कहल गेल जे ई न्यायिक प्रक्रियाक स्वाभाविक कार्यवाही थिक आ एहि मे हुनका विरोध नहि, सहयोग करबाक चाही। हुनका ई बुझै मे नहि अयलनि जे कोनो व्यक्ति अपनहि अपमानक प्रक्रिया मे सहयोग कोना क' सकैत अछि ! ओहि प्रकरण सँ हुनक आँखिक आगाँक कोनो पर्दा चरचराक' फाटैत चलि गेल छल। न्यायदेवीक प्रतिमा मे किछु चिरकन आओर बढ़ि गेल छल।

जाहि दिन केसक तारीख रहै, गोपाल जी अपन सभटा व्यस्तता छोड़ि कचहरी अवश्य जाथि। हुनक विपक्षी चतुरानन मुकदमा लड़बाक मामिला मे चतुर सुजान छल। अक्सरहां केस मे बिना कोनो प्रगतिक तारीख पड़ि जाइत छलै आ गोपाल जी लोहछिक' रहि जाइत छलाह।

प्रत्येक तारीख पर हुनक मोहरील नमगर-चौड़गर खर्चाक हिसाब दिअय आ विशेष पूछताछ कयला पर हुनका बुड़ि जकाँ उन्टा पढ़यबाक प्रयास करय। एक दिन जखन ओ एहि मादे वकील मित्र सँ कहलनि त' ओ बजलाह-''हम त' अहाँक मित्र छी तें जेना चाही खटबा' लिअ' मुदा मोहरीलक बाल-बच्चाक दालि-रोटीक खेयाल त' अहाँ कें राखहि पड़त।''

गोपाल जी कें ई बात खूब नीक जकाँ अखरलनि। वकील मित्रक बात सुनि ओ सकपका' गेल छलाह आ लज्जाक अनुभूति सँ हुनक कान सुनगि उठल छल। ओ कोनो पाइ बचयबाक लेल त' ई बात नहि कहने रहथिन वकील मित्र कें।

फेर विपक्षी वकीलक कानूनी दाव-पेंच मे ओझराक' मामिला हद सँ बेसी नमरैत चलि गेल छल। गवाह सभ कें धमकयबाक कार्रवाई शुरू भ' गेल छल। अस्पताल सँ हुनकर एक्स-रेक प्लेट गायब भ' गेल आ कहल गेल जे ओकरा दीमक चाटि गेल। तीन वर्षक बाद गवाही शुरू भेल आ गवाह सभ सँ उन्टा-सीधा आ बेतुक्का प्रश्न सभ पूछल गेल। पूछल गेल जे गोपाल जी घटना बला दिन भरिबहुँआँ कमीज पहिरने छलाह कि अधबहुँआँ, ओहि

मे कालर आ जेबी छलै की नहि, ओकर रंग की छलै, ओहि दिन ओ शेव बनयने छलाह कि नहि, जाहि लाठी सँ हुनका पर प्रहार होयबाक आरोप अछि ओकर लम्बाइ कतेक फूट, कतेक इंच छलै, लाठी बेंतक छलै कि बाँसक, आदि-इत्यादि।

एकर संग-संग न्यायदेवीक प्रतिमा किछु आओर चिरकैत चलि गेल आ गोपाल जीकेँ ओ शुभचिंतक सभ मोन पड़य लगलनि जे सभ हुनका केस नहि लड़बाक सलाह देने छल। एकटा मित्रक शब्द छल–''न्यायपालिकाक विषय पर अहाँक विचार हम सुनने छी। बेजाय नहि मानब, मुदा ई सत्य थिक गोपाल जी जे अहाँ न्यायपालिकाक मादे कोनो रूमानी गलतफहमीक शिकार छी। एहि विषय पर जखन अहाँ बाजै छी त' हमरा लगैत अछि जे कोनो स्कूलिया बच्चा अपन कोर्सक पोथी सँ रटल कोनो पाठ बाजि रहल होअय। ईश्वर नहि करथि जे अहाँ कहियो कोर्ट-कचहरीक झमेल मे पड़ी। नहि त' हमरा शंका अछि जे वास्तविकताक सामना होइतहि अहाँक सपनाक महल हरहराक' खसि पड़त आ अहाँ बालु पर खसल माछ जकाँ हालत मे स्वयं केँ पायब।''

ओहि दिन गोपाल जी नागरिक सभक एकटा महत्वपूर्ण बैसार मे भाग नहि लेलनि। घर पर भेंट करय आबयबला सभ सँ मोन खराब होयबाक बहाना क' लेलनि आ चुपचाप अपन कोठरी मे कैदी जकाँ समय बितयलनि। ओहि दिन ओ अपन डायरी मे लिखलनि–''हमरा लगैत अछि जे हम निछछ अव्यवहारिक लोक छी- भावुकताक अतिरेक आ कचका ताग सँ बान्हल एकटा एहेन लोक जे वर्त्तमान जीवन पद्धतिक गहराइ मे उतरिक' ओकर थाह लेबाक बजाय उपरहि-उपर हेलिक' निकलि आबय- खाली हाथ। लगैत अछि जे न्यायपालिकाक प्रति हमर ज्ञान स्कूलिया नेनाक स्तरहुक नहि अछि। ई केहन न्यायक घर जतय पेशकारक दस्तूरी बान्हल अछि आ सेहो ओ न्यायाधीशक आँखिक आगाँ खुल्लमखुल्ला आ निधोख लैत अछि ! कचहरीक संसार मे न्याय मात्र रोजगारक साधन बनल देखाइत अछि। हम मतिशून्य भेल छी।''

फेर शुरू भेल मैत्रीक एवज मे केस लेल काज करयबला वकील मित्रक अवहेलना भाव। शुरू मे धीरे आ अस्पष्ट, फेर तेज आ साफ-साफ। मोट फीस देबयबला मोकील सभक काजक बीच मे ई मोफतिया काज बाधक तत्व जकाँ बुझाबय लगलनि वकील साहेब केँ प्रायः। ई केस लेबाक अपन निर्णय पर हुनका पछताबा होबय लागल रहनि आ ई बात हुनक व्यवहार सँ परिलक्षित होबय लागल छल।

ओहि तारीख पर एकटा गवाही होयबाक छलै। फाइल आ गवाहक संग वकील मित्रक घर पर आयल छलाह गोपाल जी। मोकील सभक भीड़ लागल छलै। बड़ीकाल धरि बैसल रहलाह गोपाल जी। वकील मित्र आन-आन मोकीलक काज करैत रहलाह आ गोपाल जीक अस्तित्व केँ जेना अनठियाबैत रहलाह। गवाही होयब जरूरी छलै तेँ गोपाल जी विवश भ' वकील साहेब केँ टोकलनि। वकील मित्र यथासंभव अपन स्वर पर नियंत्रण राखि बजलाह मुदा ओकर तुर्शी नुकायल नहि रहलै–''कोना भ' सकैत अछि गोपाल जी। देखय छियै मोकिल सभ केँ, कोना हमर माथ पर चढ़ल अछि ! आखिर पाइ देने अछि, एकर सभक काज केँ प्राथमिकता देब हमर विवशता अछि।''

आ ओहि दिन गवाही नहि गुजरि सकल। हाकिम फाइल पर विपरीत टिप्पणी अंकित क' देलनि। नहुँ-नहुँ प्रतिमाक चिरकन किछु आर चौड़गर भेल जा रहल छल आ गोपाल जीक मोन मे अपराधी केँ दंड दिअयबाक आ न्याय पयबाक प्रति विरक्तिक भाव अबैत जा रहल छल। हुनक सकारात्मक सोचक अकाल मृत्यु भ' रहल छल आ ओकर चिता सँ बहराइत धुआँ गोपाल जी केँ दिगभ्रमित कयने जा रहल छल।

ओहि दिन ओ अपन डायरी मे लिखलनि–''पैसा दुमुँहा राक्षस थिक। कखनो त' ई दू मित्रक बीच एहन देबाल ठाढ़ क' दैत अछि जे चिकरैत-चिकरैत ठोंठ बैसि जाय आ स्वर दोसर दिस नहि पहुँचय आ कखनो खूनक पियासल दू शत्रूक बीच प्रेमक रंगबिरही फूल सभ सँ आच्छादित उपवन बनिक' आबि जाइत अछि। केहन तिलिस्म बनबैत अछि ई दुमुँहा दानव! लगैत अछि जे न्यायक देवी सेहो एहि दानवक बनायल कोनो तिलिस्म मे कैद भ' गेल अछि।''

एकटा आन दिन ओ लिखलनि–''लगैत अछि जे नवका परिवेश मे शब्द सभक नव-नव अर्थ बहरा रहल अछि। गुंडा-मवाली केँ वीर आ शांतिप्रिय नागरिक केँ कायरक संज्ञा सँ विभूषित कयल जाय रहल अछि। बेइमान केँ चतुर आ ईमानदार केँ मुर्खक उपाधि देल जाय रहल अछि। घूस लेब-देब दस्तूरी आ चमचागिरी व्यवहार कुशलताक पर्याय मानल जाय रहल अछि। शब्दकोष निरर्थक भेल अछि। व्याकरण आ रचनाक पोथीक कोनो औचित्य नहि बुझाइत अछि। केहेन युग मे प्रवेश क' गेलहुँ अछि हम सभ?''

एक दिन वकील मित्र बजलाह–''गोपाल जी! अहाँ जाहि व्यक्ति सँ मोकदमा लड़ि रहल छी ओ एक नम्बरिया मोकदमाबाज अछि। तीन सय दूक मोकदमा धरि पचाय चुकल अछि आ दोसर दर्जन भरि मोकदमा सभ केँ त'

ओ किछु बुझबे नहि करैत अछि। एहि एक नम्बरक मोकदमाबाज केँ एक नम्बरक घुसखोर भेंटि गेल अछि। अहाँक केस जाहि कोर्ट मे अछि ओकर नवका हाकिम सँ चतुरानन जोगाड़ फिट कयलक अछि। सुनबा मे अबैत अछि जे तीन हजार मे बात तय भेल अछि। आब जँ मोकदमा लड़य चाहय छी तखन त' ओकरा सँ बेसी रकम देबाक तैयारी करू आ मोकदमा सम्हारि लिअ'।''

फेर, जेना कोनो बिसरल बात मोन पड़ल होअय, कने बिलमि क' बजलाह—''ओना किछु दिन पहिने एंटी पार्टीक वकीलक मार्फत मेल करबाक ऑफर आयल छल। से जँ क' ली त' बाते खतम-फिनिश्श।''

गोपाल जी देर धरि चपाट मुर्ख जकाँ वकील मित्रक मुँह तकैत रहलाह - बकर-बकर। एहि अनपेक्षित बातक धक्का सँ सम्हरय मे हुनका खूब मोसकिल भेलनि। कनेकाल मे ओ बाजल छलाह—''घूस देब आ मेल करब, एहिमे सँ जँ कोनो एकहि टा रस्ता बाँचत, हम दोसर विकल्प केँ चुनब पसिन्न करब मुदा सभ मजिस्ट्रेट वा जज त' ओहने नहि छथि। किएक नहि हम सभ एहि केस केँ दोसर कोनो कोर्ट मे ट्रांसफर करबा ली?''

वकील मित्र अनमना आ अनिच्छुक भाव सँ एहि संभावना केँ स्वीकार कयने छलाह। केस केँ दोसर कोर्ट मे ट्रांसफर करयबाक प्रक्रिया शुरू भेल। बेस समय लागल छलै मुदा काज भ' गेल छलै। केस दोसर कोर्ट मे आयल आ एहि कोर्ट मे सेहो अनेक तारीख पड़ल, चलल।

आब चतुरानन दुआरे-दुआर घुमिक' अपन कयल पर पश्चातापक नाटक करैत गोपाल जीक चारूदिस सामाजिक दबावक घेराबन्दी करब शुरू कयलक। हुनके हथियार सँ हुनकहि पर हमला क' रहल छल प्रतिद्वन्द्वी। समाजक मामिला समाजहि मे निबटायल जाय, कोर्ट-कचहरी मे किएक ! गाम-मोहल्लाक लोक, सर-कुटुम्ब आ तथाकथित शुभचिंतकगण गोपाल जी केँ 'झंझटि खतम करबाक' लेल सलाह, उपदेश, मसविरा आदि-आदि द' क' गरम लोहा पर चोट देब शुरू क' देने छलाह आ गोपाल जीक न्याय पयबाक लालसा दिन-दिन कमजोर सँ आर बेसी कमजोर होब' लागल छल।

गरम लोहा पर एकटा आर चोट, मजबूत चोट पड़ल ओहि दिन, जखन हुनक पक्ष मे गवाही देबयबला गोबरधन साहु कहने छल—''सर, एना त' अहाँ जे कहबै तहि सँ हम बाहर नहि छी। अहाँक बात नहि काटब मुदा सर, चतुरानन हमरा सभ केँ दुश्मन बुझि लेने अछि। ओकरा सन सी-नम्बरीक कोन ठेकान-कखनी कोन नोकसान क' दिअ'। अहाँ सोचबै, सर।''

ओहि दिन गोपाल जी डायरी मे लिखलनि—''हम किंकर्तव्यविमुढ़ भ' गेल छी। हमरा समक्ष अनेकानेक प्रश्न मुँह बओने उताराक प्रतीक्षा मे ठाढ़ अछि। हमर न्याय प्राप्तिक लालसा अनुचित त' नहि अछि? ई हमर अनेरुआ जिद अछि की? सामाजिक पंचैती मे अन्तत: दोषी केँ क्षमा करैत किछु ने किछु छूट भेटैत अछि आ से हमहि कएक टा पंचैती मे करैत-देखैत रहलहुँ अछि। हमर मामिला आन सभक मामिला सँ भिन्न अछि की? अपना संग-संग आनो लोक सभ केँ कचहरीक झमेल मे सानब, असौकर्य मे डारब उचित अछि की? हम दिन-दिन जेना एसगर भेल जाए रहल छी। प्रत्येक सलाह-सुझाव हमरा पुर्वाग्रहग्रस्त बुझाय लागल अछि। हम की करी?''

लोहा गरम छलै, आर गरम भ' रहल छलै आ एक दिन ओहि पर आर एकटा भयंकर चोट पड़ल। गोपाल जीक एकटा विश्वस्त लोक हुनका सूचित कयलकनि जे जाहि मजिस्ट्रेटक कोर्ट मे केस ट्रांसफर कराओल गेल छल ओ गोपाल जीक पुरान राजनैतिक प्रतिद्वन्द्वी शीलभद्र झाक कोनो कुटुमैती मे छथिन। जे चतुरानन आइ-काल्हि शीलभद्र झाक छत्र-छाया मे अछि। मजिस्ट्रेट इमानदार त' छथि मुदा कुटुमक 'वीटो' टारब हुनका लेल कठिन भ' रहल छनि।

आ अजुका तारीख मे वकालतखानाक उड़ीस सँ भरल कुर्सी पर बैसल गोपाल जीक मोन मे आसीन न्याय देवीक प्रतिमा बुकनी-बुकनी भेल छिड़िआय रहल अछि आ ओ सोचियहु नहि पाबि रहल छथि जे की करी– एकर बुकनी सभ केँ समेटी कि एहिना छिड़िआयल पड़ल रहय दी।

गोपाल जीक निरन्तर सोचैत जयबाक क्रम अकस्मात टूटैत अछि।

कातबला टेबुल पर बैसल वकील साहेब तामसे फुफकारैत तनिक' ठाढ़ भ' गेल छलाह—''नहि जानि कतय सँ चलि अबैत अछि सार फटीचर सभ। जेबी मे फूटल कौड़ी नहि आ चललाहे मोकदमा लड़बा लेल। गाँर मे बार नहि, नुनू चललाह सैलून! न्याय चाही न्याय! हम न्यायक ठेकेदारी लेने छी की? आ कि हमर जेबी मे राखल अछि न्याय जे निकालिक' द' देबनि! आठ बरिख सँ दौगि रहलाह अछि त' हम की करी! डीहै टा बाँचल अछि! हुंह!!''

गोपाल जी उनटिक' ओहि टेबुल दिस देखै छथि। फाटल-हाल मोकील निराश भ' क' मूड़ी गोंतने नहुँ-नहुँ मरल डेगेँ वकालतखाना सँ बाहर जा' रहल छल।

ओहि वकील साहेबक कात मे बैसल लाल-लाल आँखि आ बड़का-बड़का मोंछबला मवाली टाइप बंदा बाजल—''जे है से कि, एना

बिगड़ियेगा त' काज कोना चलेगा। आ कि की कहते हैं, न्याय त' आपके पाकिट में हइले है आ ठेको त' लइये रक्खे हैं। हम आजिब कहे कि नइ ओकील साहेब?'', आ फेर ओ अपन लाजवाब मजाक पर हो-हो-हो-हो क' हँसि पड़ल। फेर वकील साहेबक कान लग सटिक' हल्लुक सँ बाजल-''आब हमरा हाल ने कहिये। डकैतीबला तीन सौ पन्चान्बे मे हमरा एन्टीसिपेटरी होगा कि नइ?''

वकील साहेबक ठोर् कान सँ कान धरि नमरि गेल। दाँत आ जीह देखाबैत बोली फूटल-''हें, हें, हें, आप तो बहुत मजकियल आदमी हैं, जब्बार भाई। ऐसा जब्बर मजाक करते हैं कि बस।'' फेर कने गंभीर होइत बजलाह-''और हाँ, जमानत तो आपको मिलना ही मिलना है। सबको दस्तूरी मिल गयी है। पूरा सेटिंग हो गया है। आप निश्चिन्त रहिये और मौज कीजिये। नगद नारायण सब देख लेंगे।''

एहि बीच, आगाँक कुर्सी पर आबिक' बैसल वकील मित्र खखसिक' गोपाल जीक ध्यान आकृष्ट कयलकनि-''कतय हेरायल छी अहाँ गोपाल जी? मेल पेटीशन तैयार अछि। दसखत क' दिअओ।''

गोपाल जी सुन्न आँखि सँ वकील मित्र दिस ताकलनि आ फेर हुनक बढ़ल हाथ सँ कागज ल' ओहि पर अपन दसखत क' देलनि।

हुनका भारत-पाक युद्ध मे एक लाख फौजीक संग जनरल नियाजीक आत्मसमर्पणक स्मृति भ' अयलनि आ अकस्मात हुनका अपन मुँहक सुआद तिक्ख् आ बिसाइन लागय लगलनि। हुनक मुँह मे मारिते रास थूक जमा भ' गेल जकरा फेकबाक लेल ओ व्यग्र भ' उठलाह। बहराइत-बहराइत समुद्र-मंथन जकाँ घटित भेल नीलकंठ मोन पड़लनि। आ फेर नहि जानि की भेल, वकालतखाना सँ बाहर अबिते गोपाल जी अपन मुँह मे जमा सभटा थूक कें भीतरे घोंटि गेलाह।

•••

अरविन्द ठाकुर

(संक्षिप्त जीवन वृत्त-साहित्यिक)

पिता	:	स्व. बलेन्द्र नारायण ठाकुर 'विप्लव'
माता	:	श्रीमती गायत्री देवी ठाकुर
जन्म	:	14 फरवरी 1957, सुपौल
पत्नी	:	श्रीमती वीणा ठाकुर
संतान	:	तीन पुत्र - अभिनय, किसलय, अनुनय
शिक्षा	:	बी.ए., एलएल.बी.
प्रकाशित पुस्तक	:	परती टूटि रहल अछि - मैथिली कविता संग्रह (1993) परती टूट रही है (हिन्दी अनुवाद, 2007)
	:	अन्हारक विरोध मे - मैथिली कथा संग्रह (2007)
प्रकाशनाधीन	:	सहोदर - हिन्दी कविता संग्रह/अलिखित कविता सभक पक्ष मे (मैथिली कविता संग्रह)
सम्पादन सहयोग	:	मैथिलीक अनियतकालीन पत्रिका संकल्प, सृजन केर दीप-पर्व (मैथिली कथा), लघु पत्र-पत्रिका (हिन्दी) -प्राब्लेम्स, अकेला, सुपौल टाइम्स

* वर्ष 1972 सँ हिन्दी व मैथिली - दुनू भाषा मे समान रूप सँ लेखन।
* सम्पूर्ण जीवन साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांगठनिक, शैक्षणिक गतिविधि सँ ओत-प्रोत।
* कर्णामृत, वैदेही, मिथिला मिहिर, समय-संदर्भ, संकल्प, आरंभ, मंडन-भारती, प्रवासी, घर-बाहर, देसकोस, मिथिलांगन, मैथिली अकादमी पत्रिका, अर्पण, अंतिका, मिथिला-चेतना, नवभारत टाइम्स आदि पत्र-पत्रिका एवं श्वेत पत्र, सृजन केर दीप-पर्व व एक्कैसम शताब्दीक घोषणा-पत्र आदि संग्रह मे मूल मैथिली रचना प्रकाशित।
* समकालीन भारतीय साहित्य, इन्द्रप्रस्थ भारती, भाषा-भारती, समकालीन परिभाषा, उत्तराधिकार विपक्ष, साहित्य-भारती आदि मे मैथिली रचनाक अनुवाद प्रकाशित।
* रचना सभक हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला, पंजाबी व मराठी मे अनुवाद प्रकाशित।

* कथाकार, सरोकार, कला, मुहिम, अक्षत, आत्मकथा, हिन्दुस्तान, संवेद, अकेला, संवाद, सिलसिला, बया, वर्त्तमान साहित्य, जन-तरंग आदि मे मूल रचना प्रकाशित।
* साहित्य अकादेमी द्वारा बंगला मे अनुदित मैथिली कविताक संकलन 'अनुकृति' एवं बंगला कवि कालीपद कोनार द्वारा बंगला मे अनुदित कविताक संकलन 'मैथिली कविता' मे सामा-चकेवा खेलती औरतें, कवि आदि बहुचर्चित कविता सम्मिलित।

सम्मान : चेतना समिति, पटना द्वारा 6 नवम्बर 1995 कँ डा. माहेश्वरी सिंह 'महेश' ग्रंथ पुरस्कार-1995 सँ सम्मानित।
: साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था 'सुरभि' द्वारा 21 जनवरी 1995 कँ साहित्य-सेवा हेतु 'सुरभि-श्री-1995' सँ सम्मानित।
: प्रगतिशील लेखक संघ द्वारा 4 फरवरी 2007 कँ साहित्य-सेवा हेतु 'कामेश्वर पोद्दार स्मृति सम्मान-2005' सँ सम्मानित।

अन्य विशेष : साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा 'ट्रेवल ग्रांट टू ऑथर' योजनान्तर्गत (1995-96) महाराष्ट्र भ्रमण।
: साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा आयोजित अनुवाद कार्यशालाक सहभागी (12-18 नवम्बर, 1995, पटना) अठारह अनुवादक साहित्यकार मे सँ एक।
: साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन (2-4 दिसम्बर, 1995, रांटी) मे भागीदारी एवं काव्य पाठ।

सम्प्रति : सुपौल जिला प्रगतिशील लेखक संघक संस्थापक अध्यक्ष।
: नव बिहार, हिन्दी दैनिकक सुपौल जिला ब्यूरो प्रमुख।
: मानद सचिव, इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी, जिला शाखा, सुपौल।
: अध्यक्ष, चैम्बर ऑफ कॉमर्स, सुपौल
: बिहार प्रगतिशील लेखक संघक राज्य कार्यकारिणी सदस्य

स्थायी पता : 'विप्लव भवन', वार्ड नं. 7
सुपौल-852131 (बिहार)

दूरभाष : 06473-223339 (आवास), 224320 (का.)
: 94310-91548, 99053-84421 (मोबाइल),

सामाजिक/सांगठनिक जीवन वृत्त

1970 – न्यू ब्लड ड्रामेटिक सोसायटी नामक नाट्य संस्थाक स्थापना। संस्थापक सचिव कँ रूप मे नाटक/सांस्कृतिक कार्यक्रमक माध्यम सँ सामाजिक गतिविधि प्रारम्भ।

1972 – जागृति युवा संस्थानक स्थापना। संस्थापक सचिवक हैसियत सँ समाजसेवा एवं राजनीतिक क्षेत्र मे सक्रिय। सफाई अभियान आ निम्नवर्ग कँ साक्षर बनाब' पर जोर।

1975 – कांग्रेस पार्टीक क्रियाशील सदस्य।

1977 – सुपौल प्रखंड युवक कांग्रेसक अध्यक्ष।

1985 – बिहार युवा कल्याण परिषद्, जिला शाखा- सहरसाक अध्यक्ष।
– स्वर्गीय पिताक स्मृति मे 'बलेन्द्र नारायण ठाकुर मेमोरियल लॉ कॉलेज, सुपौल'क स्थापना एवं एकर संस्थापक सचिवक रूप मे कार्यरत।

1987 – राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला समिति, सुपौलक मंत्री पद पर निर्वाचित। एहि पद पर रहिक' अनेक महत्वपूर्ण कार्यक साथ-साथ जवाहर नवोदय विद्यालय, सुपौलक' स्थापना मे केन्द्रीय भूमिका।

1988 – सुपौल अनुमण्डलीय केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएसनक स्थापना एवं एकर संस्थापक सचिव।

1989 – सुपौल नगर कांग्रेस कमिटीक अध्यक्ष।
– सहरसा जिला कांग्रेस कमिटीक कार्यसमितिक सदस्य।
– सुपौल प्रखंड कांग्रेसक (शिकायत सेल) संयोजक।
– 'सुपौल जिला बनाउ' अभियान मे केन्द्रीय भागीदारी एवं 1990 मे जिला बन' धरि निरन्तर सक्रिय।

1990 – सुपौल जिला केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएसनक स्थापना। एकर संस्थापक सचिवक पद पर 1994 तक कार्यरत।
– कांग्रेस आर दलगत राजनीति सँ अलग।

1993 – बिहार केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएसनक संयुक्त सचिव निर्वाचित।

1994 – सुपौल चैम्बर ऑफ कॉमर्सक स्थापना आ एकर संस्थापक अध्यक्ष पद पर अद्यावधि कार्यरत।

– सुपौल जिला केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएसनक अध्यक्ष निर्वाचित। वर्ष 2006 तक लगातार निर्वाचित व कार्यरत।

1995 – बिहार केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएसनक संगठन सचिव मनोनीत।

– बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्सक एक्शन कमिटीक सदस्य।

1997 – बिहार केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएसनक संयुक्त सचिव निर्वाचित।

1999 – बिहार केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट एसोशिएसनक संगठन सचिव मनोनीत।

2000 – हिन्दुस्तान, दैनिक समाचार पत्रक संवाददाता नियुक्त।

2003 – इंडियन रेड क्रॉस सोसायटी, सुपौल जिला शाखाक मानद सचिव मनोनीत। एहि पदक माध्यम सँ बाढ़ि राहत कार्य, अलताफ रजा नाइट, न्यूनतम दर पर एक्स-रे सुविधा आदि उल्लेखनीय कार्य। पद पर अद्यावधि कार्यरत।

2004 – बिना दलगत जुड़ावक, व्यक्तिगत प्रयोगक रूप मे, लोजपा उम्मीदवार श्रीमती रंजीता रंजन कँ लोकसभा चुनाव मे निर्वाचन अभिकर्ता/प्रभारीक हैसियत सँ चुनाव प्रबंधनक कार्य। विजय प्राप्त होतहि राजनैतिक गतिविधि सँ अलग।

2006 – सुपौल जिला प्रगतिशील लेखक संघक स्थापना। संस्थापक अध्यक्ष। अनेक गोष्ठी, सेमिनार व कार्यक्रमक आयोजन।

2007 – नवबिहार, दैनिक समाचार पत्रक सुपौल जिला ब्यूरो प्रमुख।

– चेतना समिति, पटनाक आजीवन सदस्य।

– मैथिली लेखक संघक आजीवन सदस्य।

– प्रगतिशील लेखक संघ, बिहारक राज्य कार्यकारिणीक सदस्य।